डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली
हस्त रेखा विज्ञान
और
पंचांगुली
साधना
SERIES

मातृतः पितृतः शुद्धः शुद्धभावो जितेन्द्रियः
सर्वागमानां सारज्ञं सर्वशास्त्रार्थ तत्त्ववित्
परोपकारनिरतो जप पूजादि तत्परः
अमोघ वचनः शान्तो वेद वेदार्थ पारगः
योग मार्गानुसन्धायी देवता हृदयङ्गमः
इत्यादि गुण सम्पन्नो गुरुरागम सम्मतः

हस्तरेखा विज्ञान और पंचांगुली साधना

आशीर्वाद

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

संकलन – सम्पादन

श्री अरविन्द श्रीमाली

प्रकाशक

मंत्र–तंत्र–यंत्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी

जोधपुर – 342001 (राजस्थान)

फोन : 0291–32209, फेक्स : 0291–32010

नवीन संस्करण	:	परिणय महोत्सव, 1998
प्रति	:	1100
मूल्य	:	120/– (सजिल्द)
प्रोडक्शन यूनिट	:	श्रीमती कनक पाण्डेय, श्री सूरज डंगोल एवं सुश्री विजयलक्ष्मी
मुद्रक	:	सहारा इण्डिया मॉस कम्यूनिकेशनस्, नोएडा

पूज्य गुरुदेव
डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

अनुक्रम

हस्तरेखा विज्ञान	09	पर्वतों के स्थान	18
हाथ	10	गुरु	18
उंगलियां	10	शनि	18
त्वचा	10	सूर्य	18
हथेली का रंग	11	बुध	19
हाथ के प्रकार	11	हर्षल	19
सामान्य हाथ	12	नेपच्यून	19
दार्शनिक हाथ	12	चन्द्र	21
वर्गाकार हाथ	12	शुक्र	21
कर्मठ हाथ	13	मंगल	22
कलात्मक हाथ	13	राहु	23
आदर्श हाथ	13	केतु	23
मिश्रित हाथ	14	प्लूटो	24
अधिककोण युक्त अंगूठा	14	रेखायें	24
समकोण युक्त अंगूठा	15	जीवन रेखा	24
न्यूनकोण युक्त अंगूठा	15	मस्तिष्क रेखा	25
तर्जनी	15	हृदय रेखा	25
मध्यमा	16	सूर्य रेखा	26
अनामिका	16	भाग्य रेखा	26
कनिष्ठिका	16	स्वास्थ्य रेखा	26
पर्वत एवं रेखायें	17	विवाह रेखा	26

मंगल रेखा	27	मुख शोधन	46
शनि वलय	27	मंत्र चैतन्य	47
गुरु वलय	27	भूतलिपि विधान	47
रवि वलय	28	प्राणयोग	47
शुक्र वलय	28	दीपनीं	48
चन्द्र रेखा	28	मंत्र सिद्धि	48
प्रभावक रेखा	28	भ्रामण पद्धति	48
यात्रा रेखा	28	पंचांगुली ध्यान	49
उच्चपद रेखा	29	पंचांगुली मंत्र	49
मणिबन्ध रेखायें	29	ध्यान	50
आकस्मिक रेखायें	29	न्यास	50
संतान रेखायें	29	करशुद्धि न्यास	50
आकस्मिक धन रेखा	29	हृदयादिन्यास	51
वैराग्य रेखा	30	यंत्र पूजा	55
बाधक रेखायें	30	प्रथमावरण पूजन	60
वाहन रेखा	30	प्रथम रेखा पूजन	61
पंचांगुली यंत्र	31	द्वितीय रेखा पूजन	61
यंत्र प्रसंग	39	तृतीय रेखा पूजन	61
मास	42	चतुर्थ रेखा पूजन	62
तिथियां	42	द्वितीयावरण पूजन	62
वार	42	तृतीयावरण पूजन	63
नक्षत्र	42	चतुर्थावरण पूजन	64
लग्न	42	पंचमावरण पूजन	65
स्थान	42	षष्ठमावरण पूजन	66
यंत्र स्थापन	42	सप्तमावरण पूजन	67
ज्ञातव्य	44	भविष्यत् पूजन	67
जप काल के नियम	45	अष्टमावरण पूजन	70
मल शोधन	46	आवाहन	74

भूत शुद्धि	74
भूतोपसंहार	80
प्राण प्रतिष्ठा	80
न्यास	81
ध्यान	82
अन्तर्मातृका न्यास	83
कर न्यास	83
ध्यान	84
सर्वाङ्गे	85
ध्यान	85
बहिर्मातृका न्यास	85
काल ज्ञान मंत्र	88
कलशपूजा	93
कलश प्रार्थना	94
पुण्याह वाचन	95
पुण्याहवाचने : विप्रा	104
हवन विधि	105
अग्निजिह्वा	106
अग्नि शक्ति नामानि	106
अग्निध्यान	106
व्याहृति होम	107
भूत यज्ञ	108
नवग्रह यज्ञ	109
अधिदेवता होम	110
प्रत्याधिदेवता आहुति	110
पंचलोकपाल आहुति	111
दस दिक्पाल आहुति	111
देव होम	112
प्रधान होम	113
अग्निजिह्वा होम	114
घृताहुति	114
अंगदेवता आहुति	115
सायुध होम	115
देव्याहुति	115
पूर्णाहुति होम	122
घृतधारा	123
देव विसर्जन	125
मीनाक्षीपञ्चरत्नम् स्तोत्र	126
पंचांगुली साधना	127
देव्यपराधक्षमापन स्तोत्रम्	144
भवान्य कम्	146
संदर्भ . . .	148

दो शब्द . . .

भारतीय वाङ्मय में दुर्लभ मानव देह की सार्थकता भोग-विलास या जीवित रहने में नहीं मानी गई है, अपितु अपने आपको पहिचानने में मानी गई है। यह आत्मज्ञान मंत्र साधना से ही संभव है।

मंत्र और यंत्र ये दो ऐसी अक्षय निधियां भारत के पास हैं, जिनकी तुलना अन्य किसी से संभव नहीं। इस क्षेत्र में आज भी भारत अग्रणी है। सारा संसार इसका लोहा मानता है, पर जब तक हम इसकी कुञ्जी नहीं पा लेते, तब तक उसे सिद्ध करना या मनोवांछित फल प्राप्त कर लेना संभव नहीं।

तीन वर्ष पूर्व डॉ0 श्रीमाली जी ने अपनी एक पुस्तक में पंचांगुली मंत्र दिया था। उसके बाद लगभग पांच-छः हजार पत्र इस आशय के कार्यालय में आये, कि 'आप एक ऐसी किताब लिखें, जिसमें पंचांगुली साधना के बारे में पूर्ण विवरण हो' . . . पर किसी न किसी कारण से यह प्रसंग टलता ही गया।

पाठकों की जिज्ञासा को ज्यादा समय तक टालना प्रकाशक व लेखक लिए संभव नहीं होता है– फलस्वरूप यह पुस्तक जिसका प्रथम प्रकाशन सन् 1973 में हुआ था, वह अब नवीन रूप में पुनः आपके सामने है। इसमें हस्तरेखा ज्ञान देने के साथ-साथ मुख्य रूप से पंचांगुली साधना पूर्णरूपेण दी गई है। यही नहीं अपितु दुर्लभ 'पंचांगुली यंत्र का आवरण पूजन' भी इसमें दिया जा रहा है।

श्री पंचांगुली देवी 'काल ज्ञानेश्वरी' हैं, इनकी साधना से भविष्य ज्ञान सिद्ध हो जाता है। भविष्य ज्ञान हेतु साबर मंत्रों में 'कर्णपिशाचिनी' सिद्ध की जाती है, पर वह गृहस्थ के लिए उपयुक्त नहीं, उससे भूतकाल सिद्धि तो हो जाती है पर भविष्य कथन उससे संभव नहीं, इसके विपरीत पंचांगुली साधना सौम्य साधना है, जो कि कल्याणकारी होने के साथ-साथ भविष्य कथन में भी अपूर्व सिद्धि प्रदायक होती है। जिस-जिस ने भी इसे आजमाया है, वह चमत्कृत हुआ है। भारतीय मंत्र साधना में उसकी आस्था दृढ़ हुई है।

इस सम्बन्ध में यह सर्वांगपूर्ण पुस्तक है, जिसमें पंचांगुली साधना पद्धति को सहज रूप से स्पष्ट किया गया है, जो प्रत्येक ज्योतिष प्रेमी, गृहस्थ एवं साधारण जन के लिए उपयोगी एवं संग्रहणीय है।

मुझे विश्वास है, पाठक इसे ललक कर अपनायेंगे।

— प्रकाशक

हस्तरेखा विज्ञान

मनुष्य का यह स्वाभाविक प्रयास रहता है, कि अपने भविष्य को जाने, कब क्या आकस्मिक घटनायें घटित हो जायेंगी उन्हें पहिचाने और अपने जीवन को कुछ इस प्रकार से ढाले, कि वह उन विपत्तियों से बचकर जीवन को सुखी, सफल और समृद्ध बना सके।

भविष्य को जानने की कई विधियां प्रचलित हैं, जिनमें फलित ज्योतिष, हस्तरेखा, मुखाकृति ज्योतिष, बांस छड़ प्रयोग, भविष्य पक्षी ज्ञान, प्रश्न ज्योतिष, नेपोलियन थ्योरी, ताश के पत्तों से भविष्य ज्ञान आदि विधियां हैं, जो भविष्य कथन में सहायक होती हैं, पर इन सब में साध्य-साधन की न्यूनाधिक आवश्यकता पड़ती ही है। मात्र हस्तरेखा ही एक ऐसी भविष्यकथन पद्धति है, जिसके लिए किसी अन्य उपकरण की आवश्यकता नहीं। मात्र सामने वाले का हाथ और उसकी रेखायें ही पर्याप्त हैं, जिनके माध्यम से हम उसके भूत, वर्तमान और भविष्य के बारे में सही-सही जान सकते हैं।

संसार के किन्हीं भी दो मनुष्यों के भाग्य एक से नहीं होते। इसी प्रकार संसार में किन्हीं भी दो व्यक्तियों की हथेलियों में एक सी रेखायें नहीं होतीं। हथेली में मुख्यतः तो चार या पांच ही रेखायें दिखाई देती हैं, परन्तु

सूक्ष्मता से देखें, तो पता चलेगा, कि हथेली में छोटी-छोटी सैकड़ों रेखायें हैं और उन सब रेखाओं का एक-दूसरे से संबंध है। दिन में ये रेखायें धूमिल सी दिखाई देती हैं, पर प्रातःकाल हथेली को देखें, तो हमें छोटी-छोटी सूक्ष्म रेखायें भी स्पष्ट दिखाई देंगी। इसीलिए प्रातःकाल का समय हस्तरेखा देखने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त समय है।

एक कुशल हस्तरेखा शास्त्री के लिए कोई भी रेखा फालतू नहीं है। उसके लिए छोटी से छोटी रेखा का भी उतना ही महत्त्व है, जितना किसी बड़ी रेखा का। सूक्ष्म रेखा भी जीवन का कोई ऐसा रहस्य उजागर कर सकती है, जो कि असाधारण हो, अप्रत्याशित हो, जीवन में हलचल मचा देने वाला हो; इसीलिए तो ऋषियों ने हस्तरेखा शास्त्र के जानकार के लिए धैर्य पहला और सर्वोपरि गुण माना है।

हस्तरेखा को समझने से पहले हाथ एवं उसकी रेखाओं के बारे में सामान्य जानकारी प्राप्त कर लेना परमावश्यक है।

हाथ : मणिबन्ध से लगाकर मध्यमा उंगली के अंतिम सिरे तक की लम्बाई और बायीं ओर से दाहिनी ओर तक की चौड़ाई को हस्तरेखा शास्त्र में हाथ की संज्ञा दी गई है, इस क्षेत्र पर पाये जाने वाले छोटे से छोटे बिन्दु और महीन से महीन रेखा का भी महत्त्व होता है।

उंगलियां : हथेली के सिरे पर चार उंगलियां और एक अंगूठा है। अंगूठे के पास वाली उंगली को 'तर्जनी', इससे आगे की उंगली को 'मध्यमा', उससे आगे की उंगली को 'अनामिका' और इसके आगे की सबसे छोटी उंगली को 'कनिष्ठिका' के नाम से पुकारते हैं।

त्वचा : हथेली की त्वचा की लचक एवं उसका रंग भी सही निर्णय पर पहुंचाने में सक्षम होता है। कठोर, रूखा और अक्खड़ हाथ जहां मजदूर, शारीरिक श्रम करने वाले

एवं काम-विकारों से ग्रस्त व्यक्ति के होते हैं; वहीं नरम, लचीला एवं कोमल हाथ सहृदय, भावुक एवं बुद्धिमान व्यक्ति का बोध कराता है।

इसके अतिरिक्त कुछ हाथ इन दोनों विशेषताओं का सम्मिश्रण लिए हुए भी होते हैं, जो न अधिक कठोर होते हैं और न ही अधिक कोमल। ऐसे हाथों का धनी व्यक्ति जीवन में उचित सामंजस्य रखता है। एक प्रकार से कहा जाय, तो उसका स्वभाव समसहिष्णु होता है। उसका प्रत्येक कार्य सोच-विचार कर होता है। वह न तो उतावली में कोई निर्णय लेता है और न किसी कार्य को प्रारम्भ करने के बाद अधूरा छोड़ता है। उसका यह समानुपातिक स्वभाव ही उसे जीवन में सर्वोच्चता एवं सर्वश्रेष्ठता प्रदान करता है।

हथेली का रंग :

हथेली का रंग भी निर्णय तक पहुंचाने में सक्षम होता है। आप किसी भी व्यक्ति की हथेली हाथों में लेकर दबाकर छोड़ दीजिये, आप देखेंगे, कि ऐसा करने पर हथेली का स्वाभाविक रंग आपके सामने होगा।

'गुलाबी हथेली' स्वस्थ मनोवृत्ति, उदार स्वभाव एवं सहिष्णुता की द्योतक है। 'जरूरत से ज्यादा गुलाबी' हथेली काम प्रबलता, चंचलता एवं अस्थिर मनोवृत्ति की द्योतक है। 'पीली हथेली' जीवन में निराशावादी भावना को स्पष्ट करती है। 'नीली हथेली' बीमारी, चिड़चिड़ापन एवं हताश मनोवृत्ति को उजागर करती है।

हाथ के प्रकार :

एक अच्छे हस्तरेखाविद् के लिए यह जरूरी है, कि वह हाथ के प्रकार को भी समझे और हाथ देखने से पूर्व ही उस हाथ के प्रकार को समझ ले। मुख्यत: हाथ निम्न सात प्रकार के होते हैं–

1. सामान्य हाथ
2. दार्शनिक हाथ

3. वर्गाकार हाथ
4. कर्मठ हाथ
5. कलात्मक हाथ
6. आदर्श हाथ
7. मिश्रित हाथ

पाठकों की जानकारी के लिए मैं प्रत्येक पर किंचित् प्रकाश डाल देता हूं—

सामान्य हाथ :

सामान्यत: यह हाथ अधिकतर देखने में आता है। ऐसा हाथ खुरदरा, अगढ़ एवं बेडौल सा होता है। ऐसे हाथ में उंगलियां छोटी-छोटी और बेडौल-सी रोमयुक्त होती हैं। ऐसा व्यक्ति जीवन में असफल व्यक्ति ही कहा जाता है। शारीरिक श्रम से ये घबराते हैं तथा मानसिक श्रम ये कर नहीं सकते। जरयम पेशा, लूट-खसोट, हत्या-अपराध आदि ऐसे ही व्यक्ति करते देखे गये हैं।

दार्शनिक हाथ :

दार्शनिक कहे जाने वाले हाथ मुख्यत: गठीले जोड़ों वाले एवं उभरी हड्डियों वाले होते हैं। इनके हाथों की पहिचान यही है, कि ऐसा हाथ लचीला न होते हुए भी उनकी उंगलियों की जोड़ों में एक विशेष लचक एवं कोमलता दिखाई देती हैं। ऐसे हाथ पतले, लम्बे एवं विशेष आभायुक्त होते हैं।

ऐसे व्यक्ति ही समाज को दिशा-निर्देश दे सकते हैं एवं भविष्य को कुछ अमूल्य विचार देकर मानवता का कल्याण कर सकते हैं।

वर्गाकार हाथ :

वर्गाकार हाथ आसानी से पहिचाना जा सकता है, क्योंकि ऐसी हथेलियां सामान्यत: चौकोर वर्ग की होती हैं।

ऐसे व्यक्ति पूर्णतः भौतिकवादी, गहरी सूझबूझ लिए हुए एवं कठोर यथार्थ पर जीवित रहने वाले होते हैं। व्यर्थ की शान-शौकत एवं दिखावे से ये कोसों दूर रहते हैं। सामाजिक कार्यों में, उत्सवों में, समारोहों में ये बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते हैं एवं वचन के पक्के होते हैं। एक बार जो मुंह से कह देते हैं, उसे अन्तिम क्षण तक निभाते हैं। जीवन का मूल लक्ष्य यश, मान, प्रतिष्ठा, धन और वैभव होता है।

कर्मठ हाथ :

कर्मठ हाथ चौड़ाई की अपेक्षा लम्बाई ज्यादा लिए हुए होता है। ऐसे हांथ की पहिचान यही है, कि हाथ खुरदरा, बेडौल, भारी एवं मांसल होते हुए भी कठोर सा होता है। ऐसा व्यक्ति निष्क्रिय नहीं बैठा रहता, कार्य में जुटे रहना और सतत प्रयत्नशील बने रहना इसका स्वभाव होता है। भावनाओं की अपेक्षा ये वास्तविक जगत में ज्यादा आस्था रखते हैं।

कलात्मक हाथ :

ऐसा हाथ नरम, कोमल, मृदु एवं चिकना गुदगुदा सा होता है। हथेली मांसल, सुडौल एवं ललाई लिए हुए होती है। इस हाथ की विशेषता यह होती है, कि इसकी उंगलियां पतली, नुकीली एवं सुगढ़ होती हैं। ये व्यक्ति कल्पना जगत में जीवित रहने वाले होते हैं, सौन्दर्य एवं कला के पुजारी होते हैं तथा जीवन में प्रेम की प्रधानता रहती है।

आदर्श हाथ :

आदर्श हाथ अपने आप में एक विशेषता है। इसका गठन सुडौल, गुदगुदा एवं एक कमनीय लोच लिए हुए होता है। एक प्रकार से देखा जाय, तो ये हाथ समानुपातिक होते हैं।

ऐसे हाथों के धनी ही समाज के सर्वोत्कृष्ट व्यक्ति होते हैं। तीक्ष्ण

बुद्धि, उर्वर कल्पनाशक्ति एवं वास्तविकता की धरातल पर चलते हुए भी आदर्श को अपनी आंखों से ओझल नहीं होने देते।

मिश्रित हाथ :

यह सभी हाथों का मिश्रण होता है। एक प्रकार से यह कहा जाय, कि उपर्युक्त वर्गों में जो हाथ न हो, उसे इस वर्ग में समझ लेना चाहिए। ऐसे हाथ की हथेली किसी एक वर्ग की होती है, तो उंगलियां किसी अन्य वर्ग की। इसीलिए इसे मिश्रित हाथ कहा गया है।

इस प्रकार के व्यक्ति जीवन में असफल देखे गए हैं। नकारात्मक रुख इनका प्रधान होता है तथा जीवन को व्यर्थ की वस्तु समझ कर चुप रहते हैं। अस्थिर मनोवृत्ति के ये लोग जीवन में कुछ कर सकेंगे, इसमें संदेह ही है।

हाथों का प्रकार अध्ययन करने के उपरान्त अंगूठे एवं उंगलियों का ज्ञान भी परमावश्यक है।

संसार के समस्त नर-नारियों के अंगूठों को तीन वर्गों में विभाजित कर सकते हैं –

1. अधिककोण युक्त अंगूठा
2. समकोण युक्त अंगूठा
3. न्यूनकोण युक्त अंगूठा

अधिककोण युक्त अंगूठा :

ऐसे अंगूठे वे कहलाते हैं, जो तर्जनी से मिलकर अधिक कोण-सा आकार बनाते हैं। इस प्रकार के अंगूठों के धनी व्यक्ति कला प्रेमी, संगीतज्ञ एवं अपनी विशेष कला के माध्यम से पहचाने जाते हैं।

समकोण युक्त अंगूठा :

जिस हाथ में अंगूठा एवं तर्जनी मिलकर समकोण का आकार धारण करते हैं, वे इसी वर्ग में आते हैं। इस प्रकार के व्यक्ति परिश्रमी, संयमी व विवेकवान होते हैं, पर कभी-कभी क्रोध की मात्रा इतनी बढ़ जाती है, कि ये स्वयं पर नियंत्रण नहीं रख पाते और असफलता की ओर विवशत: अग्रसर हो जाते हैं।

न्यूनकोण युक्त अंगूठा :

तीसरे प्रकार के अंगूठे वे कहलाते हैं, जो अंगूठा व तर्जनी मिलाकर न्यूनकोण का-सा रूप धारण करते हैं। ऐसे व्यक्ति जीवन में निराशावादी, अनास्थावादी एवं तामसी प्रकृति प्रधान होते हैं। जरा-जरा सी बात पर ये क्रोधित हो जाते हैं और आगा-पीछा सोचे बिना सम्बन्धों में दरार पैदा कर देते हैं।

अंगूठे के अतिरिक्त उंगलियों का ज्ञान भी जरूरी है –

तर्जनी :

यह हाथ की प्रथम उंगली कहलाती है, जो कि अंगूठे के पास होती है। जहां यह उंगली हथेली से जुड़ती है, उस स्थान पर उभरे भाग को बृहस्पति या गुरु का पर्वत कहा जाता है। एक प्रकार से यह उंगली बृहस्पति ग्रह का प्रतिनिधित्व करती है।

तर्जनी का अनामिका से लम्बी होना शुभ एवं प्रसन्नता का द्योतक है। प्रशासन के क्षेत्र में ये कड़ाई से काम लेते हैं तथा अपनी प्रशंसा से खुश रहते हैं।

इसके विपरीत जिन व्यक्तियों के हाथ में अनामिका से तर्जनी छोटी होती है, वे अवसरवादी, खुदगर्ज, कामलोलुप एवं चालाक होते हैं। 'कहेंगे कुछ और करेंगे कुछ' इनकी आदर्श नीति होती है।

मध्यमा :

यह हथेली में सबसे बड़ी उंगली होती है। इसके मूल में शनि पर्वत माना गया है। तर्जनी के अपेक्षा यह लम्बी अवश्य होती है, पर 1/4 इंच से ज्यादा लम्बी होना दुर्भाग्य एवं दैन्य ही प्रकट करता है। उचित अनुपात में बड़ी होना व्यक्ति की बुद्धिमता, चतुराई एवं मितव्ययता को प्रकट करती है।

अनामिका :

यह मध्यमा उंगली से छोटी एवं तर्जनी से कुछ छोटी होती है। तर्जनी से छोटी होना इसकी शुभता है। ऐसा व्यक्ति दयालु, उदार एवं मानवीय गुणों से सम्पन्न होता है, पर यदि यह उंगली तर्जनी से बड़ी हो, तो वह धृष्ट, कामलोलुप एवं स्वार्थी होता देखा गया है।

कनिष्ठिका :

यह हथेली की सबसे छोटी उंगली होती है। इसके मूल में बुध का पर्वत माना गया है। यह उंगली तभी शुभ मानी जाती है, जबकि यह अनामिका उंगली के तीसरे पोरुए को छुए। यदि इससे भी छोटी हो तो, वह व्यक्ति अभाग्यवान ही कहलाता है।

यदि कनिष्ठिका उंगली अनामिका के तीसरे पोरुए के ऊपर चढ़े तथा अंतिम सिरे के आधे भाग को छू ले, तो वह व्यक्ति निश्चय ही आइ. ए.एस. अधिकारी या उच्च प्रशासकीय अधिकारी होता ही है।

एक अच्छे हस्तरेखाविद् को चाहिए, कि वह हथेली, अंगूठा एवं उंगलियों का सम्यक् एवं सावधानी के साथ अध्ययन करे तथा सही निर्णय पर पहुंचने में सक्षम बने।

◎

पर्वत एवं रेखाएं

हाथ के अध्ययन में पर्वत एवं रेखाओं का सर्वाधिक महत्त्व है। पर्वत उंगलियों के मूल में जो उभरा हुआ प्रदेश है, उसे कहते हैं। इन पर्वतों के तीन भेद हैं–

1. सामान्य

जो थोड़े से उभरे हुए, पर अविकसित प्रदेश हैं, सामान्य पर्वत कहलाते हैं।

2. विकसित

काफी ऊंचे उठे हुए, मांसल एवं स्वस्थ प्रदेश विकसित पर्वत कहलाते हैं।

3. अविकसित पर्वत

विकसित प्रदेश से सर्वथा विपरीत ऐसे पर्वत होते हैं। इनका उभार स्पष्ट दिखाई नहीं देता, पर सूक्ष्मता से देखने पर ही यह पर्वत उभरा हुआ दिखाई देता है।

पर्वतों के स्थान

गुरु :

इसे बृहस्पति भी कहते हैं। इसका स्थान तर्जनी उंगली के मूल में तथा निम्न मंगल के ऊपर होता है। गुरु पर्वत का उभरा हुआ होना देवोचित गुणों की प्रचुरता का बोध कराता है। ऐसा व्यक्ति संयमी, साहसी, मानवोचित गुणों से भरपूर, न्यायप्रिय एवं समदर्शी होता है।

शनि :

हथेली में मध्यमा उंगली के मूल में इसका निवास स्थान माना गया है। हथेली में शनि पर्वत की महत्ता सर्वोपरि है। यदि किसी की हथेली में शनि पर्वत अविकसित हो, तो उस व्यक्ति का जीवन अत्यन्त सामान्य ढंग का अनुल्लेखनीय होता है।

शनि पर्वत या मध्यमा उंगली भाग्य की प्रतीक मानी गई है। यदि शनि रेखा की समाप्ति शनि पर्वत के मूल बिन्दु पर हो, तो वह निम्नकुल में जन्म लेकर भी यशस्वी, धनी एवं प्रतिष्ठित जीवन व्यतीत करता है।

शनि पर्वत का अत्यधिक उभार व्यक्ति को चिड़चिड़ा, रहस्यमय, शक्की मिजाज एवं मेहनती बना देता है।

सूर्य :

अनामिका उंगली के मूल में सूर्य पर्वत की अवस्थिति मानी गई है। इस पर्वत की उपस्थिति ही व्यक्ति को यशस्वी जीवन दे सकती है। इस पर्वत का उभार सुन्दर और सुगठित हो, तो जातक जीवन में ख्याति लाभ करता है, क्योंकि सूर्य पर्वत प्रतिभा, बुद्धि, ज्ञान, यश, सम्मान एवं कीर्ति का पर्याय है।

बुध :

हथेली की सबसे छोटी कनिष्ठिका के मूल में बुध पर्वत की अवस्थिति मानी गई है। इस पर्वत का महत्त्व इसलिए अधिक है, कि इस पर्वत से ही व्यक्ति के भौतिक सुखों का आकलन किया जाता है। श्रेष्ठ एवं उच्चस्तरीय व्यापारियों-व्यवसायियों के हाथ में निश्चय ही यह पर्वत उभरा हुआ एवं सुविकसित होगा।

बुध प्रधान व्यक्ति गहरी सूझबूझ वाला, हिम्मती, व्यापारिक कार्यों में चतुर, आदमी को सही रूप में पहिचानने की क्षमता रखने वाला एवं दूरदर्शी होता है। आर्थिक दृष्टि से यह पूर्णतः संतुष्ट एवं सुखी होता है।

हर्षल :

हथेली में इसकी अवस्थिति बुध पर्वत के जरा नीचे, हृदय रेखा तथा मस्तिष्क रेखा के बीच में है। इस ग्रह का प्रभाव हृदय एवं मस्तिष्क पर विशेष रूप से रहता है।

यदि इस पर्वत की स्थिति बुध पर्वत के ठीक नीचे हृदय एवं मस्तिष्क रेखा के बीच में होती है, तो व्यक्ति इंजीनियरिंग के क्षेत्र में उच्चस्तरीय कार्य करता है, पर यदि इस पर्वत का उभार सुविकसित न हो, तो व्यक्ति मशीनी कार्यों में दिलचस्पी लेता है एवं इस प्रकार के कार्यों से जीवन-यापन तथा लाभ उठाता है।

नेपच्यून :

इस पर्वत का स्थान हथेली में मस्तिष्क रेखा से नीचे एवं चन्द्र क्षेत्र से ऊपर माना गया है। नेपच्यून कलात्मक रुचियों का दाता है, अतः नेपच्यून पर्वत का सुविकसित होना व्यक्ति को कवि, चित्रकार एवं संगीतज्ञ बनाता है। तात्पर्यतः ऐसे व्यक्ति का झुकाव ललित कलाओं की ओर विशेष रूप से होता है।

विवाह रेखा
सूर्य रेखा
भाग्य रेखा
मस्तक रेखा
जीवन रेखा
हृदय रेखा
स्वास्थ्य रेखा
मंगल रेखा
मणिबन्ध रेखाये
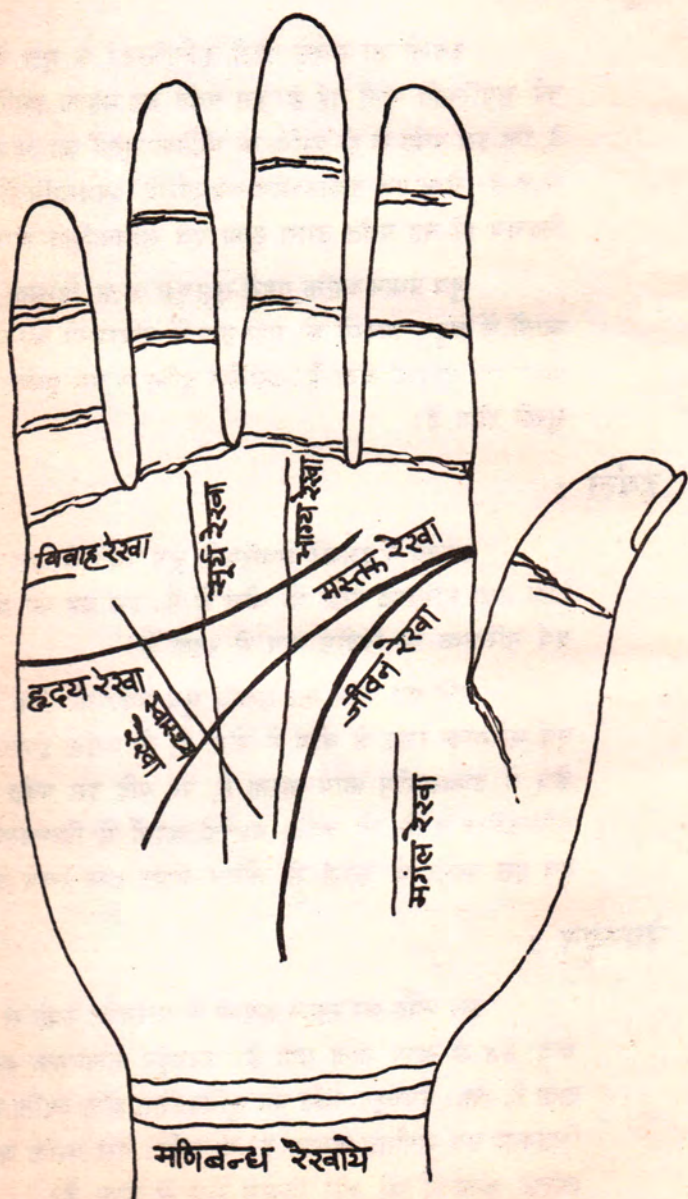
इस पर्वत पर ऊपर की ओर उठती हुई एक लाइन भी किसी-किसी के हाथ में दिखाई देती है। यह रेखा 'प्रभाव रेखा' या Influence line कहलाती है। इस रेखा की उपस्थिति इस बात की सूचक है, कि व्यक्ति निश्चय ही श्रेष्ठस्तरीय पद प्राप्त कर सकेगा एवं अपने गुणों के कारण ख्याति लाभ कर सकेगा।

चन्द्र :

पृथ्वी का सर्वाधिक निकटस्थ ग्रह चन्द्रमा है, जिसका सर्वाधिक प्रभाव प्राणियों पर पड़ता है। सौन्दर्य, संवेग, भावना आदि का यह कारक ग्रह है।

नेपच्यून पर्वत से नीचे, आयु रेखा से बायीं ओर, मणिबन्ध से ऊपर, भाग्य रेखा से मिला हुआ जो क्षेत्र है, वही चन्द्र पर्वत कहलाता है।

जिन व्यक्तियों के हाथों में चन्द्र पर्वत उभरा हुआ एवं सुविकसित होता है, वे श्रेष्ठ कवि, रसिक एवं भावुक होते हैं। ऐसे व्यक्ति में भावुकता और प्रेम का अद्भुत मिश्रण होता है। जीवन की कठोर वास्तविकता के धरातल पर ये टिक नहीं पाते, अपितु कल्पनालोक में ही विचरण इनके लिए सुखद एवं अनुकूल होता है।

चन्द्र पर्वत का अभाव या अविकसित होना व्यक्ति को कठोर, खूनी, निर्दयी एवं दुःखी सिद्ध करता है। प्रेम के क्षेत्र में ये असफल होते हैं।

शुक्र :

अंगूठे के नीचे आयु रेखा से घिरा हुआ जो प्रदेश है, वह शुक्र पर्वत है। यह 'सौन्दर्य', 'प्रेम' एवं 'भोग' का प्रतिनिधि ग्रह है।

शुक्र पर्वत उभरा हुआ, कोमल, मांसल एवं सुघड़ होना चाहिए। ऐसा पर्वत जिस हथेली में होता है, वह जीवन में समस्त सुखों का भोग करता है, भौतिक सुखों की न्यूनता उसके जीव में नहीं देखी जाती, अच्छा स्वास्थ्य, प्रभावशाली व्यक्तित्व एवं दूसर को आकर्षित करने की इनमें गजब की हिम्मत होती है। विपरीत सेक्स के प्रति इनका रुझान स्वभावतः होता है तथा जीवन में इस प्रकार के भोगों की कमी नहीं रहती।

इसके विपरीत यदि शुक्र पर्वत अल्प विकसित एवं कठोर सा होता है, तो वह भोगी तो होगा ही, पर प्रेम के क्षेत्र में बार-बार वह असफल रहेगा तथा निम्नस्तर की स्त्रियों से सम्पर्क बनाने के लिए सचेष्ट बना रहेगा।

शुक्र पर्वत की अनुपस्थिति व्यक्ति को निर्मोही, साधु स्वभाव एवं इन्द्रिय दमनक बना देता है। जीवन से वह घृणा करता है एवं भोग-विलास को हेय समझने लगता है।

मंगल :

जीवन रेखा के नीचे और उससे आवृत्त शुक्र पर्वत का जो भाग फैला हुआ है, इन दोनों के बीच में जो छोटा-सा उभरा हुआ प्रदेश है, वही मंगल पर्वत कहलाता है।

मंगल शूरवीरता, रक्त एवं साहस का प्रतीक ग्रह है। स्पष्टतः जिन व्यक्तियों के हाथों में मंगल पर्वत प्रधान होता है, वे पुलिस या फौज या ऐसे ही किसी क्षेत्र में यश प्राप्त करते हैं, जहां वीरता ही उच्चता का मापदण्ड होता है।

मंगल पर्वत पर यदि शनि रेखा आ जाय, तो वे दुर्दान्त डाकू बन जाते हैं, पर यदि मंगल पर्वत पर गुरु रेखा का भाग स्पर्श होता है, तो वे या तो फौज में उच्च पद प्राप्त कर यश के भागी होते हैं अथवा कुशल सर्जन बनते हैं।

प्लूटो :

हृदय रेखा के नीचे तथा मस्तिष्क रेखा के ऊपर का जो उभरा हुआ प्रदेश है, वही प्लूटो पर्वत के नाम से पुकारा जाता है।

प्लूटो का सीधा सम्बन्ध जीवन के वृद्धावस्था से होता है। यदि प्लूटो पर्वत उन्नत एवं विकसित अवस्था में हो, तो व्यक्ति वृद्धावस्था में सुखी एवं यशस्वी जीवन व्यतीत करता है। प्लूटो की अविकसितावस्था वृद्धावस्था की परेशानियों की ओर संकेत करती है।

ऊपर मैंने हथेली में पाए जाने वाले पर्वतों का संक्षिप्त परिचय देने के साथ-साथ उनसे होने वाले फल को भी इंगित किया है। अब मैं हथेली पर पाई जाने वाली मुख्य-मुख्य रेखाओं को स्पष्ट कर रहा हूं–

रेखायें

रेखाओं का अध्ययन अत्यन्त सावधानी से होना जरूरी है। रेखाओं के मुख्य तीन लक्षण हैं–

1. गहरी स्पष्ट सुवाच्य
2. हल्की
3. अस्पष्ट

इसमें से पहले प्रकार की रेखा को श्रेष्ठ, दूसरे प्रकार की रेखा को मध्यम एवं तीसरे प्रकार की रेखा को निकृष्ट कहते हैं।

जीवन रेखा :

इसे पितृ रेखा, मुख्य रेखा, Life line आदि भी कहते हैं। यह रेखा गुरु पर्वत के नीचे, हथेली के एक किनारे से उठकर

राहु :

हथेली के बीचों-बीच मस्तिष्क रेखा से कुछ नीचे जो भाग है, वह राहु पर्वत या राहु क्षेत्र कहलाता है। इसके एक ओर चन्द्र पर्वत तथा दूसरी ओर मंगल एवं शुक्र पर्वत होते हैं।

राहु पर्वत की उन्नतावस्था जीवन में संयोगों की उभारती है। मैंने देखा है, कि जिस हथेली में राहु पर्वत उभरा हुआ होता है, उस व्यक्ति के जीवन में जो भी घटनायें घटित होती हैं, वे आकस्मिक रूप से घटती हैं। ऐसे ही व्यक्तियों के जीवन में लॉटरी, आकस्मिक धन प्राप्ति आदि के विशेष योग होते हैं।

यदि राहु पर्वत से भाग्य रेखा गुजर रही हो और वह शनि पर्वत को छू रही हो, तो निस्सन्देह उसके जीवन में लॉटरी योग है तथा वह आकस्मिक द्रव्य लाभ से धनी होगा।

राहु पर्वत का अविकसित होना दुर्भाग्य का सूचक है।

केतु :

हस्तरेखाविदों ने केतु का पर्वत मणिबन्ध के कुछ ऊपर, भाग्य रेखा के आरम्भिक स्थल के पास माना है, जो कि शुक्र एवं चन्द्र क्षेत्रों का विभाजन करता है।

केतु का उन्नतावस्था में होना व्यक्ति को आर्थिक दृष्टि से प्रबल भाग्यवादी बनाता है। उन्नत केतु पर्वत जीवन में धनाभाव नहीं होने देता। ऐसे बालक के जन्म पर ही पिता को आर्थिक लाभ होते देखा गया है।

केतु पर्वत की अविकसितावस्था व्यक्ति में हीन भावना की पुष्टि करती है।

तर्जनी तथा अंगूठे के बीच में से चलती हुई, मणिबन्ध तक पहुंचती है और इस प्रकार से यह पूरे शुक्र पर्वत को घेरती है। इसी रेखा के विस्तार-संकोच से शुक्र पर्वत बड़ा या छोटा बनता है।

मस्तिष्क रेखा :

यह मातृ रेखा भी कहलाती है। अंग्रेजी में इसे Head line कहते हैं। इसके अतिरिक्त इसे धी रेखा, बुद्धि रेखा, प्रज्ञा रेखा, ज्ञान रेखा अथवा शीश रेखा के नाम से भी पुकारते हैं।

यह रेखा गुरु पर्वत के पास से निकलती है। किसी-किसी हाथ में गुरु पर्वत पर से भी इसका निकास देखा गया है। अधिकांशतः जीवन रेखा एवं मस्तिष्क रेखा का मूलोद्गम एक ही होता है, पर कई हाथों में इन दोनों रेखाओं का अलग-अलग निकास भी देखा गया है। यह रेखा हथेली को दो भागों में, चौड़ाई में बांटती हुई, राहु एवं हर्षल क्षेत्रों को विभक्त करती हुई बुध पर्वत के नीचे तक जाती है।

शारीरिक श्रम करने वालों के हाथों में यह रेखा धूमिल ही होती है, इसके विपरीत मस्तिष्क प्रधान व्यक्तियों के हाथों में यह रेखा स्पष्ट, गहरी एवं सुवाच्य होती है।

हृदय रेखा :

यह विचार रेखा, उर रेखा या Heart line कहलाती है। यह रेखा बुध पर्वत के नीचे से निकल कर तर्जनी एवं मध्यमा के बीच में या गुरु पर्वत के नीचे तक जा पहुंचती है। इस रेखा की उपस्थिति प्रत्येक हाथ में होती है। जिन हाथों में यह रेखा अस्पष्ट या धुंधली होती है, वे क्रूर हृदय, डाकू अथवा निर्दयी, दुष्ट होते हैं। अधिकांश खूंखार डाकुओं के हाथों में इस रेखा का लोप भी मैंने देखा है।

सूर्य रेखा :

यह सक्सेस लाइन या Sun line भी कहलाती है। कुछ विद्वान इसे विद्या रेखा के नाम से भी पुकारते हैं। इस रेखा का उद्गम लगभग बीस स्थानों से है, पर इस रेखा की समाप्ति सूर्य पर्वत पर ही होती है। यदि यों कहा जाय, कि जब तक यह रेखा सूर्य पर्वत को नहीं छूती, तब तक यह सूर्य रेखा या विद्या रेखा कहलाने की अधिकारिणी ही नहीं हैं।

भाग्य रेखा :

सूर्य रेखा के समान इस रेखा के उद्गम स्थल लगभग बत्तीस हैं, पर यह रेखा पहिचान में तभी आती है, जबकि इसका अवसान शनि पर्वत पर होता है। हथेली की यह मुख्य रेखा कहलाती है, क्योंकि भाग्य रेखा की न्यूनता या धूमिलता व्यक्ति को दरिद्री या असहाय जीवन जीने के लिए बाध्य कर देती है।

इसका विकास नीचे से ऊपर की ओर होता है।

स्वास्थ्य रेखा :

इस रेखा का कोई निश्चित उद्गम नहीं होता है, पर यह तभी स्वास्थ्य रेखा कहलाती है, जबकि इसका अवसान बुध पर्वत पर होता है। किसी-किसी हाथ में यह मोटी होती है, पर किसी-किसी हाथ में यह इतनी सूक्ष्म होती है, कि नंगी आंखों से पहिचानना ही कठिन हो जाता है। यह रेखा जितनी ही पतली होगी, उतनी ही शुभ है।

विवाह रेखा :

यह Love line या Marriage line भी कहलाती है। हथेली के बाहरी भाग से अन्दर की ओर बुध पर्वत पर जो रेखा

आती है, वही विवाह रेखा है, इस पर क्रास, बिन्दु या धब्बा प्रणय सम्बन्धों में बाधायें उत्पन्न करता है।

उपर्युक्त मुख्य रेखाओं के अतिरिक्त निम्न गौण रेखायें भी हैं, जिनकी जानकरी भी पाठकों के लिए आवश्यक है–

मंगल रेखा :

यह रेखा अंगूठे के पास से जीवन रेखा के उद्गम से निकल कर मंगल क्षेत्र पर जाती है। इसी से यह मंगल रेखा या Line of Mars कहलाती है। इस रेखा से साहस, वीरता आदि का बोध होता है।

शनि वलय :

इसे शनि मुद्रा भी कहते हैं। यह रेखा मध्यमा उंगली के मूल में स्थित शनि पर्वत को घेरती है, जिसका एक छोर तर्जनी–मध्यमा के बीच एवं दूसरा छोर अनामिका–मध्यमा के बीच में होता है।

यह वलय भाग्य के शुभाशुभ को प्रकट करने में काफी सहायक रहता है।

गुरु वलय :

इसे बृहस्पति वलय या गुरु मुद्रा भी कहते हैं। अंग्रेजी में इसे Ring of Jupiter कहते हैं। यह रेखा गुरु पर्वत को घेरकर स्वयं अंगूठी की शक्ल में रहती है।

नौकरी, प्रामोशन, लाभ आदि की जानकारी के लिए इस वलय का उपयोग किया जाता है।

रवि वलय :

शनि एवं गुरु वलय की तरह जो रेखा सूर्य पर्वत को घेरती है, वही रवि वलय कहलाती है। यश, मान, प्रतिष्ठा आदि के शुभाशुभ में इसका उपयोग किया जाता है।

शुक्र वलय :

इसे अंग्रेजी में Girdle of Venus भी कहते हैं। जो रेखा तर्जनी-मध्यमा के बीच में से निकल कर अनामिका एवं कनिष्ठिका के बीच में पहुंचती है और इस प्रकार एक साथ शनि एवं सूर्य पर्वतों को घेर लेती है, वही शुक्र वलय कहलाता है। इस वलय का शुक्र पर्वत से कोई सम्बन्ध नहीं रहता।

चन्द्र रेखा :

यह धनुषाकार होती है तथा यह चन्द्र पर्वत से निकल कर बुध पर्वत के आस-पास पहुंचती है। बहुत ही कम व्यक्तियों के हाथों में यह रेखा पाई जाती है।

प्रभावक रेखा :

यह Line of influence भी कहलाती है। यह रेखा चन्द्र तथा वरुण क्षेत्रों को पार कर भाग्य रेखा तक पहुंचने का प्रयत्न करती सी दिखाई देती है। यह जिस रेखा को भी छू लेती है, उस रेखा के प्रभाव को कई गुणा बढ़ा देती है।

यात्रा रेखा :

यह रेखा चन्द्र अथवा शुक्र क्षेत्र से निकल कर मंगल क्षेत्र की ओर जाती दिखाई देती है। इस रेखा से जल यात्रा या वायुयान यात्रा का सहज ही अध्ययन किया जा सकता है।

उच्चपद रेखा :

यह मणिबन्ध से निकल कर केतु क्षेत्र की ओर बढ़ती है। जीवन में उच्चपद प्राप्ति, आई.ए.एस., आर.ए.एस. आदि का अध्ययन इसी रेखा से होता है।

मणिबन्ध रेखायें :

कलाई पर तीन, दो या एक जो चूड़ी के आकार की बनी हुई रेखायें दिखाई देती हैं, मणिबन्ध रेखा कहलाती है।

इन रेखाओं से पूरे जीवन को एक दृष्टि में देखा जा सकता है। जीवन का कौन सा भाग सुखी या दुःखी होगा, इन रेखाओं से ज्ञात किया जा सकता है।

आकस्मिक रेखायें :

उपर्युक्त वर्णित रेखाओं के अतिरिक्त कुछ ऐसी रेखायें होती हैं, जो कभी-कभी उभर कर स्पष्ट होती हैं, कुछ समय बाद इनका लोप हो जाता है। ऐसी रेखायें ही आकस्मिक रेखायें कहलाती हैं।

ये जिस रेखा से सम्पर्कित होती हैं, उस रेखा को हीनता या उच्चता देने में समर्थ होती हैं।

संतान रेखायें :

बुध पर्वत के नीचे विवाह रेखा पर जो खड़ी रेखायें होती हैं, वे संतान रेखायें होती हैं। इन रेखाओं से पुत्र-पुत्रियों की संख्या, उनकी आयु आदि के बारे में जानकारी प्राप्त की जाती है।

आकस्मिक धन रेखा :

यद्यपि यह कम हाथों में देखी गई है, पर जिन हाथों में देखी गई है, इसका प्रभाव पूरा-पूरा अनुभव किया गया है। यह रेखा

राहु पर्वत से निकलकर भाग्य रेखा को छूती हुई शनि पर्वत पर स्थित शनि बिन्दु को छूती है। लॉटरी आदि का सम्यक् अध्ययन इसी रेखा से होता है।

वैराग्य रेखा :

शुक्र पर्वत से निकल कर कभी-कभी एक रेखा स्पष्ट रूप से जीवन रेखा को काटती हुई-सी प्रतीत होती है, यही वैराग्य रेखा कहलाती है। उच्चस्तरीय महात्मा, साधुओं के हाथ में यह रेखा स्पष्ट देखी जा सकती है।

बाधक रेखायें :

शुक्र पर्वत से कई आड़ी रेखायें निकल कर जीवन रेखा को छूने का प्रयत्न करती-सी दिखाई देती हैं। ये बाधक रेखायें कहलाती हैं।

वाहन रेखा :

सूर्य रेखा के समानान्तर चलती हुई रेखा का झुकाव जब राहु क्षेत्र को पार कर शुक्र पर्वत की ओर होता है, तो ऐसी रेखा वाहन रेखा कहलाने की अधिकारिणी होती है।

इस रेखा से वाहन, वाहन का स्तर (कार, स्कूटर आदि) तथा वाहन प्राप्ति का समय आदि ज्ञात किया जाता है।

पंचांगुली यंत्र

हस्तरेखाओं को समझने व तदनुसार फल कथन अपने आप में कठिन एवं श्रमसाध्य है। केवल पुस्तकों को पढ़कर कोई भी सफल हस्तरेखाविद् नहीं बन सकता, जब तक कि उसे वास्तविक ज्ञान (Practial Knowledge) न हो। हां, पुस्तकों से उसे प्रारम्भिक ज्ञान हो जाता है। इस विषय में जिज्ञासु ज्ञानार्थियों को चाहिए, कि वे प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त कर किसी योग्य गुरु के सान्निध्य में कुछ समय रहकर ज्ञान प्राप्त करें, वास्तविक ज्ञान लें, तभी हस्तरेखा ज्ञान के क्षेत्र में कुछ होने का दंभ भरें। दो-चार पुस्तकें पढ़कर फलादेश कहना न तो उनके स्वयं के लिए उचित है और न ही सामने वाले के लिए। एतदर्थ इस क्षेत्र में आने वाले व्यक्तियों को गुरु का सान्निध्य प्राप्त करना चाहिए।

इसके साथ ही यदि संभव हो, तो उसे साधना के क्षेत्र में भी प्रविष्ट होना चाहिए, क्योंकि बिना साधना या इष्ट के इस प्रकार के 'ऑकल्ट साइंस' में पूर्ण प्रवीणता श्रमसाध्य ही है।

जहां तक हस्तरेखा का प्रश्न है . . . इस क्षेत्र में पंचांगुली देवी की साधना अत्यन्त आवश्यक है। मैंने कुछ समय पूर्व एक पुस्तक में
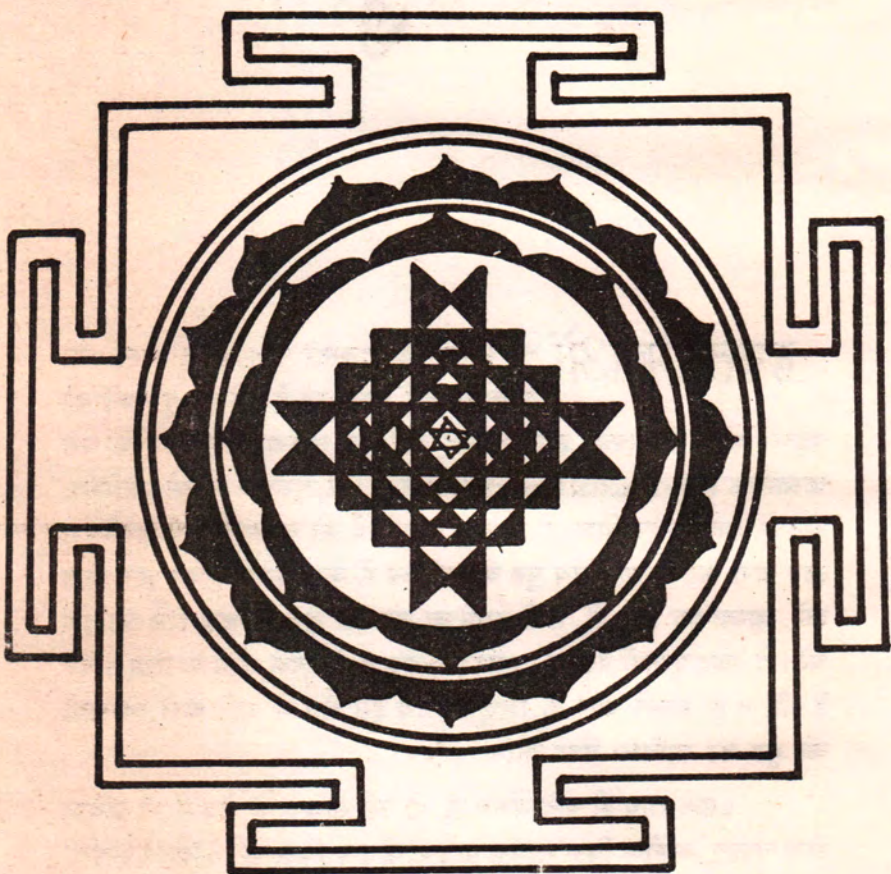
'पंचांगुली मंत्र' दिया था एवं संक्षिप्त में मंत्र जप की विधि भी समझाई थी। उसे पढ़कर हजारों पाठकों के पत्र मेरे पास आये, जिसमें उनका आग्रह था, कि इस मंत्र का पूरा विवरण दिया जाय और साधना विधि समझायी जाय।

पंचांगुली मंत्र अपने आप में अद्‌भुत है। इसके फल को मैं प्रत्यक्ष देख चुका हूं और पूर्ण विधि से जिसने भी इसका उपयोग किया है, उसे अपूर्व सिद्धि प्राप्त होते देखा गया है।

इस पुस्तक में मैं पंचांगुली यंत्र एवं मंत्र के बारे में पूर्ण साधना पक्ष स्पष्ट करने जा रहा हूं, पर साथ ही यह भी कह देना मैं अपना कर्तव्य समझता हूं, कि केवल पुस्तक में पढ़कर ही साधना पद्धति में न उलझ जायें, अपितु गुरु के श्रीमुख से इसे ग्रहण करें एवं उनके आदेशानुसार ही इस कार्य में प्रवृत्त हों, तभी सिद्धि सुलभ है। ऐसा कहकर मैं गुरुवाद को बढ़ावा देना नहीं चाहता, अपितु मेरा व्यक्तिगत अनुभव है, कि प्रत्येक साधना-उपासना, तंत्र या मंत्र में ऐसे स्थल होते हैं, जिन्हें भली प्रकार नहीं समझने से सारा किया-कराया गुड़-गोबर हो जाता है।

मेरे एक घनिष्ठ परिचित हैं, जिन्हें साधना क्षेत्र में अल्प ज्ञान था, पर वे इस अल्प ज्ञान को ही पूर्ण ज्ञान समझ बैठे थे। एक दिन मेरे पास बैठे-बैठे बातचीत कर रहे थे। बातों ही बातों में पंचांगुली मंत्र पर चर्चा चल पड़ी . . . साथ ही पंचांगुली यंत्र पर भी कुछ बातें हुईं। वे संभवतः इसी फिराक में थे।

एक दिन जब मैं जोधपुर से बाहर था, वे घर आये तथा घर में रखे 'पंचांगुली यंत्र' की नकल एक कागज पर उतार ली तथा उसे अपने घर ले जाकर पूजा कर मंत्र साधना में लीन हो गये।

इक्कीस दिनों तक नियमित वे साधना में रत रहे . . . और इसके बाद उन्होंने लोगों के हाथ देखकर जो भी भविष्यवाणियां कीं, वे अचूक सिद्ध हुईं। कुछ साधना का प्रभाव, कुछ उनका स्वयं का प्रयत्न . . . वे शीघ्र ही नगर में छाने लगे, लोगों की उनके यहां भीड़ लगने लगी, धन कमाने

लगे, यश फैलने लगा ... और इन सबके बीच नियमित साधना पक्ष की उपेक्षा रही।

धीरे-धीरे कुछ ही समय बाद साधना भ्रष्ट हो जाने के फलस्वरूप बदनाम हुए तथा घोर विपत्तियां उठानी पड़ीं।

इसका कारण था सही मार्ग का न चुना जाना। उन्होंने केवल पुस्तक ज्ञान लिया, जबकि व्यवहारिक पक्ष की उपेक्षा रही, फलस्वरूप साधना का सही मार्ग नहीं पहिचान सके और पथभ्रष्ट होकर बदनाम होना पड़ा।

पंचांगुली यंत्र अपने आप में विलक्षण है। एक प्रकार से यह यंत्र स्वयमेव ही सिद्ध है। ज्यों-ज्यों मैं भारतीय तंत्र-मंत्र के क्षेत्र में प्रवेश करता हूं, त्यों-त्यों मैं आश्चर्यचकित हो जाता हूं। मुझे गर्व होने लगता है अपने पुरुखों पर, तपःपूत ऋषियों पर, उन महर्षियों पर जिन्होंने इस प्रकार से मंत्रों का प्रादुर्भाव किया, ज्ञान का अटूट भंडार . . . एक विलक्षण थाती हमें दे गये . . . सच . . . यदि मेरा जन्म भारतवर्ष में न हुआ होता, तो मैं इसे अपना दुर्भाग्य ही मानता।

पर आज जिनके पास भी ऐसे ग्रंथ हैं, वे उसे दबाकर बैठ गये हैं, हवा तक नहीं लगने देते . . . न वे स्वयं समझते हैं और न दूसरों को समझने में सहायक होते हैं। जिनके पास तंत्र-मंत्र सम्बन्धी ज्ञान है, वे उसे अपनी बपौती समझ बैठे हैं और दूसरों को बताने में उन्हें कष्ट होता है . . . मर जायेंगे . . . अन्त समय आ जायेगा . . . उस समय भी लेन-देन की बात करेंगे . . . पर ऐसे ज्ञान को दूसरों को नहीं देंगे, स्वयं के साथ ही समाप्त कर लेंगे . . . काफी कटु अनुभव हैं इस क्षेत्र में मुझे . . . सैकड़ों घटनायें कौंध रहीं हैं मेरे दिमाग में . . . पर चुप रहना ही श्रेयस्कर है . . . केवल एक घटना ही इस औचित्य को सिद्ध करने में पर्याप्त होगी।

मेरे जीवन का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा भारत के शीर्षस्थ साधुओं-महात्माओं से मिलने में बीता है। उस समय एक ही धुन थी . . . एक ही लगन थी . . . कि क्या तंत्र-मंत्र सही है? क्या कुछ शक्ति है भी? क्या इनसे जीवन को उन्नत, धनी, सुखी या यशस्वी बनाया

जा सकता है? – और इसके लिए भारत के उत्तर से दक्षिणी छोर तक एवं पश्चिम से पूर्वी छोर तक भटका हूं . . . बीहड़ जंगलों में कई-कई दिनों तक भूखा रहा हूं . . . हिमालय की सुदूर गुफाओं में स्थित महात्माओं से मिलने में न जाने क्या-क्या कष्ट उठाये हैं . . . और इन सबमें कई पाखण्डी साधुओं ने मुझसे अनुचित सेवा लेकर ठगा भी है, तो कई ऐसी दिव्य मूर्तियों के भी दर्शन हुए हैं, कि मैं अपने जीवन को सफल मानने लगा हूं . . . उन तपःपूत ऋषियों से जो मंत्र-तंत्र मिले हैं, जो साधना पद्धति मिली है, वह अमूल्य है; उसपर पूरे जीवन का सुख-भोग न्यौछावर है।

इन्हीं दिनों मैं घूमता-घूमता देहरादून से ऊपर मुख्य सड़क छोड़कर कच्ची पगडंडी के सहारे एक महात्मा से मिलने जा रहा था। उनका पता एक भटकते संन्यासी से मिला था। सर्दी की रात . . . मेरे शरीर पर एक कुरते के अतिरिक्त कुछ नहीं . . . पास एक थैली में एक धोती तथा एक कुरता और था . . . उस समय मेरे पास कोई निधि नहीं थी . . . रुपया-टका पास में रखता ही नहीं था . . . एक लक्ष्य ही तो मेरी निधि थी . . . सर्दी से थरथराता, जंगली पशुओं के भय से बढ़ा चला जा रहा था . . . लगभग रात के तीन बजे होंगे, जब कि मैं रास्ता भटकने पर भी एक छोटी-सी कुटिया के द्वार पर जा पहुंचा . . . काफी धक्के दिये, पर द्वार खुला नहीं . . . अन्दर से बन्द था . . . हारकर मैं पास ही एक पेड़ पर चढ़कर बैठ गया, जिससे वन्य पशुओं से सहज रक्षा हो सके।

सुबह जब अंधेरा कुछ छंटा, तो मैं पेड़ से नीचे उतरा। पास के कुंड में जाकर स्नान किया, कपड़े बदले, सन्ध्या-वन्दनादि नित्य नैमित्तिक कार्य से निवृत्त हुआ और महात्मा जी की पर्णकुटी के सामने श्रद्धानत जा पहुंचा। देखा तो चकित रह गया . . . कुटिया का द्वार खुला था और महात्मा पृथ्वी से लगभग डेढ़ फीट ऊपर हवा में बिनाधार स्थित ध्यानस्थ थे। आंखों पर विश्वास नहीं आया, बुद्धि ने गवाही न दी, पर मैं सजग था, स्वस्थ था, हौले से पृथ्वी पर बैठ गया। लगभग तीन घण्टे वे इसी प्रकार ध्यानस्थ रहे। उन्होंने आंखें खोलीं और धीरे-धीरे हवा में तैरते हुए-से वे पृथ्वी पर बैठे, अकचाये नहीं, बोले— आ गये तुम!

— हां, महाराज!

— योगी ने ही मेरा स्थान तुम्हें बताया?

— जी . . . !

— क्यों आये हो?

— आपकी सेवा करने और श्रीचरणों में बैठकर कुछ सीखने के लिए। — मैंने श्रद्धा से उत्तर दिया।

वे दो क्षण तक ज्यों के त्यों बैठे रहे; फिर बोले— जैसी प्रभु की इच्छा!

और वे बाहर निकल गये। मैंने कुटिया को साफ किया, मिट्टी से आंगन लीपा और आसपास के स्थान को साफ करने में जुटा रहा। लगभग एक प्रहर रात गये वे लौटे . . . कुछ बोले नहीं। मुझे कुटिया से बाहर भेजा और उन्होंने अन्दर से दरवाजा बंद कर लिया।

भूख और सर्दी से मैं बेहाल था। दो दिन से भूखा था, कुटिया में खाद्य-पदार्थ कुछ था ही नहीं . . . पर मैं चुप रहा . . . और फिर धीरे-धीरे ललित कंठ से 'शिवानन्द लहरी' गाने लग गया . . . गाने में इतना लीन हो गया, कि आसपास क्या है . . . कुछ भान ही नहीं रहा . . . जब आंखें खोलीं, तो पूज्य महात्मा सामने खड़े थे; बोले— भूखा है रे तू!

उनके स्नेहपूर्ण व्यवहार तथा सिर पर हाथ फेरने से मन में करुणा उमड़ पड़ी . . . आंखों से आंसू झरने लगे . . . वे मुझे पकड़कर कुटिया के अन्दर ले गये; बोले— मेरे पास तो खिलाने के लिए कुछ भी नहीं रे।

मैं चुप रहा . . . कुछ योग साधना सम्बन्धी प्रश्न किये, बोले— थोड़ा बहुत जानता तो है तू . . . अच्छा 'दहर विद्या' तुझे बता देता हूं . . . जिससे तुझे भूख नहीं लगेगी। मैं दहर विद्या के बारे में कई व्यक्तियों से सुन चुका था, पर किसी को भी इसका ज्ञान नहीं था। आज यों अनायास यह मंत्र-रत्न मेरे हाथ आ जायेगा, इसकी तो कल्पना ही नहीं की थी। प्रभु की इस कृपा पर मैं नतमस्तक था।

उन्होंने 'दहर विद्या' का कवच, मंत्र एवं विधि समझाई . . . मैं रात भर उन्हें जपता रहा। प्रातः काल होने पर मैं अपने आपको काफी हल्का अनुभव कर रहा था . . . भूख-प्यास का तो अस्तित्व ही नहीं था मन में . . . अस्तु।

पूज्य महात्मा जी के चरणों में मुझे लगभग बारह दिन तक बैठने का मौका मिला। तेरहवें दिन उनकी आज्ञा से बिना इच्छा भी मुझे प्रस्थान करना पड़ा . . . पर इस बीच मेरी जिज्ञासा पर उन्होंने मुझे पंचांगुली यंत्र समझाया, विधि बताई। पंचांगुली मंत्र तो मैं अपने पूज्य पिताजी से सुन चुका था, पर उस मंत्र का कीलन पूज्य श्री से समझा। विशेषतः पंचांगुली यंत्र का वर्णन तो कई जगह से पढ़ा था, पर उसके बारे में जानकारी कहीं नहीं थी . . . पूज्य श्री ने जिस वात्सल्य भाव से मुझे समझाया, वह अविस्मरणीय रहेगा।

सीखने के बाद मैंने गुरुदक्षिणा की प्रार्थना की . . . वे टुकुर-टुकुर मुझे देखते रहे, बोले– एक प्रतिज्ञा कर!

मैं तैयार था।

बोले– पंचांगुली यंत्र के बारे में किसी को कभी मत बताना . . . बस . . . मृत्यु से एक सप्ताह पूर्व किसी शिष्य को यह विधि समझा देना . . . पर उससे भी यही प्रतिज्ञा करवा लेना . . . ।

मैं जैसे आकाश से गिरा – मेरी इस विद्या का उपयोग ? – कंजूस के धन की तरह सहेज कर इसे रखने से क्या लाभ ? – इस ज्ञान का उपयोग क्या ? –सैकड़ों संकल्प-विकल्प मेरे मानस का मंथन करने लगे।

पूज्य श्री ने मेरी तन्द्रा भंग की, बोले– क्या सोचने लगे ?

मैंने अपना सिर उनके चरणों पर टिका दिया, बोला– आपकी आज्ञा शिरोधार्य है . . . पर . . .

पर क्या . . . ?

यदि अनुचित न समझें तो आप यह दी हुई विद्या वापिस ले लें

. . . यदि मैं इस यंत्र को सर्वजन हिताय न बना सका, तो फिर इसकी उपयोगिता क्या?

वे कुछ समय चुप रहे, बोले— यंत्र-मंत्र के लिए पात्र-अपात्र का ज्ञान जरूरी है। तलवार शत्रु का गला काटती है, पर अभ्यास न हो, तो वह स्वामी का ही गला काट देती है . . . पर खैर . . . जैसी तेरी इच्छा . . . यदि तू सर्वजन हिताय ही चाहता है . . . तो कर . . . प्रभु कल्याण करेंगे।

हो सकता है, कुछ अति बुद्धिवादी ऐसी घटनाओं पर विश्वास न करें, पर उनके लिए क्या कहा जाय, वे तो आगे ही बुद्धि के अजीर्ण से ग्रस्त हैं ... अस्तु।

मैं वहां से फिर आगे ज्ञान-पिपासु की तरह चल पड़ा . . . 'दहर विद्या' मेरे जीवन की अमूल्य निधि है, जो पूज्य श्री की याद है। पंचांगुली यंत्र अद्‌भुत है . . . इसे मेरे सान्निध्य में रहकर जिन-जिन ने भी सीखा है . . . उन सबके लिए अलौकिक रहा है . . . ऐसे सिद्धिप्रद यंत्र को जिस-जिस ने भी कसौटी पर कसा . . . सोलह आने खरा उतरा। हस्तरेखा ज्ञान में अपूर्व सिद्धि मिली, उनके फल कथन अचूक होने लगे। यश-सम्मान में शत-शत वृद्धि हुई . . . पर आज तक मेरी बुद्धि इसका समाधान न कर सकी, कि पूज्य श्री ने इसे अन्य को बताने से क्यों रोका . . . मुझे अन्य जो दुर्लभ मंत्र सिखाये, उन पर क्यों कठोर रोक लगाई और इस यंत्र को सर्व सुलभ करने के लिए क्यों हामी भर दी . . . पर मैं तो अकिंचन हूं . . . क्या समझूं . . . जरूर कोई रहस्य होगा, तभी तो पूज्य श्री ने रोक लगा दी, पूज्य श्री ही नहीं . . . जिन-जिन दुर्लभ महात्माओं ने मंत्र-तंत्र बताये, अन्त में यही वचन लिया, कि इसे अन्य को न बतावें . . . यह बात अलग है, कि मैं कई मंत्रों के बारे में उन महात्माओं से छूट ले सका हूं। प्रभु इच्छा हुई, तो कभी उन मंत्रों को भी प्रकाश में लाने का प्रयास करूंगा।

इस यंत्र के प्रयोग से व्यक्ति के हृदय में अद्‌भुत ज्ञान . . . अद्‌भुत तेज का आभास-सा होता है। हस्तरेखाओं का सर्वाङ्गपूर्ण ज्ञान तो होता ही

है। फल कथन में पूर्णता आ जाती है। भविष्य की घटनाओं को वह उसी प्रकार दुहरा सकता है, जैसे फिल्म देखकर उसकी कहानी दुहरा रहा हो।

पाश्चात्य विद्वान् कीरो (CHERIO) ने भी पंचांगुली मंत्र की साधना की थी, जिससे उसे फल कथन में अपूर्व सिद्धि प्राप्त हुई थी . . . वह भारत में पंचांगुली यंत्र की खोज में काफी भटका था, पर इस यंत्र के बारे में उसे संभवतः जानकारी नहीं मिल सकी थी।

यंत्र एवं उसकी साधना का पूर्ण ज्ञान गुरु के सान्निध्य में ही रहकर समझें, सीखें, तभी इसका प्रयोग करें . . . क्योंकि गलत सिद्धि विनाश का कारण भी हो सकती है।

यंत्र प्रसंग

भारत में यंत्र का विशिष्ट स्थान है, सामान्य से सामान्य व्यक्ति भी इस तंत्र-सिद्धि के माध्यम से उच्चस्तरीय ज्ञान एवं लाभ प्राप्त कर सकता है।

यंत्रों का केन्द्र बिन्दु 'सूर्य' है और इसका मूल शक्ति भी है। कर्म साधना पथ पर निर्दिष्ट स्थान पर पहुंचने के लिए शक्ति की अनिवार्यता असंदिग्ध है। इस सर्वव्यापी शक्ति के विभिन्न रूप हैं और 'महाकारण' में यह 'नाद' रूप में एवं 'कारण' में बिन्दु रूप से विद्यमान रहती है। 'सूक्ष्म' में जाने पर यह आनन्दप्रद शब्द रूप में प्रकटित है। उच्चारण रूप में 'शब्द' (1) परा (2) पश्यन्ती (3) वैखरी और (4) मध्यमा, इन चार रूपों में प्रस्फुटित होता है।

शब्द में ही विविध शक्तियों का समावेश है और कई शब्दों के संयोजित मेल से एक विशिष्ट शक्ति की आभा प्राप्त होती है। इस प्रकार के संघटित शब्दसमूह को ही मंत्र कहते हैं।

प्रत्येक मंत्र का एक 'प्रणेता' एवं एक 'देवता' होता है। साथ ही प्रत्येक मंत्र की एक 'अधिष्ठात्री शक्ति' भी होती है। इस 'अधिष्ठात्री शक्ति' के बार-बार स्मरण से जो तेज प्राप्त होता है, उसी तेज के सहारे मंत्र से

सम्बन्धित देवता को जाग्रत किया जाता है एवं मानस चक्षुओं के सामने उसे साकार किया जाता है। तत्पश्चात् उस मंत्र एवं देवता को यंत्रबद्ध किया जाता है। यह एक कठिन श्रमसाध्य कार्य है, पर सच्चा साधक इस कंटकाकीर्ण पथ को भी पार कर लेता है।

यंत्रों की पूजा का भी एक विशेष प्रकार है और सिद्धि लाभ करने में कई विघ्न-बाधाओं का सामना करना पड़ता है। फलस्वरूप भगवान शिव ने कई यंत्रों व मंत्रों का कीलन कर दिया है अर्थात् कील ठोककर गुह्य बना दिया है। जो कीलित नहीं हैं, वे ही आजकल प्रचलित हैं। योग्य गुरु के सान्निध्य में रहकर कीलित यंत्र या मंत्र का भी उत्कीलन कर उसे सिद्ध किया जा सकता है।

यंत्र-मंत्र साधना से पूर्व निम्न तथ्यों को ध्यान में रखना परमावश्यक है—

1. यंत्र
2. यंत्र ऋषि
3. देवता
4. बीज शब्द या मंत्र
5. शक्ति
6. कीलक
7. प्रयोजन
8. न्यास

    (क) अङ्ग न्यास(ख) हृदयादिन्यास

9. दिक्बन्ध
10. मंत्र जप
11. ध्यान
12. पूजा
13. महिमा
14. सिद्धि

इसके अतिरिक्त प्रत्येक तंत्र-मंत्र में निम्न तत्त्व भी ध्यान में रखने चाहिए–

1. ऋषि – प्रत्येक मंत्र का एक ऋषि होता है। जिसने उसकी रचना की है।
2. छन्द – प्रत्येक मंत्र विशेष छन्दमय होता है।
3. देवता – प्रत्येक मंत्र का एक देवता होता है।
4. बीज – बीज वह है, जिससे मंत्र का उदय हो।
5. शक्ति – शक्ति वह है, जो साधक को निर्दिष्ट ध्येय तक पहुंचाने में उसे बल प्रदान करे।
6. कीलक – कीलक वह कहलाता है, जो इस शक्ति को लक्ष्य तक पहुंचाने में साधक को दृढ़ रखे।
7. प्रयोजन – जिस कार्य के लिए यह किया जाता है।

विशेष

करन्यासों के अंत में 'नमः' शब्द आता है। हृदयादिन्यास के अंत में 'नमः' शब्द ही आता है, पर सिर के सम्बन्ध में 'स्वाहा', शिखा के सम्बन्ध में 'वषट्', कवच के सम्बन्ध में 'हुम्', नेत्र के सम्बन्ध में 'वौषट्' और अस्त्र के सम्बन्ध में 'फट्' शब्द आता है।

ये सब गुप्त रहस्यपूर्ण शब्द हैं, जो इन कार्यों के लिए विशेष रूप से नियुक्त हैं। इन सब मुद्रा-चेष्टाओं का रहस्य है, कि सम्बन्धित साधना के दौरान शरीर को सब ओर से मंत्रमय सुरक्षित कर देना, जिससे कि लक्ष्य तक पहुंचा जा सके।

पंचांगुली यंत्र

किसी भी तंत्र-मंत्र साधना में समय का विचार आवश्यक है। कितनी ही कठोर साधना की जाय, यदि उसकी शुद्धि की ओर ध्यान न दिया जाय, तो सारा प्रयत्न निरर्थक-सा हो जाता है।

मास

यंत्र-मंत्र सिद्ध करने के लिए वैसाष, कार्तिक, आश्विन और माघ शुभ महीने माने गये हैं। यों अत्यावश्यक होने पर किसी भी महीने में इसका प्रयोग किया जा सकता है, पर 'आषाढ़ शुक्ला एकादशी से आश्विन कृष्णा अमावस्या' तक का समय सर्वथा वर्जित है।

तिथियां

शुक्ल पक्ष की द्वितीया, पंचमी, सप्तमी, अष्टमी, दशमी एवं पूर्णमासी विशेष शुभ तिथियां मानी गई हैं।

वार

रवि, बुध, गुरु एवं शुक्र श्रेष्ठ वार हैं।

नक्षत्र

कृतिका, रोहिणी, पुनर्वसु, हस्त, तीनों उत्तरा, अनुराधा एवं श्रवण नक्षत्र शुभ हैं।

लग्न

स्थिर लग्न– वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ।

स्थान

तीर्थ भूमि, गंगा-यमुना संगम, नदी तीर, पर्वत-गुफायें, एकान्त देव मंदिर शुभ हैं, पर ये सुलभ न हों, तो घर का एकान्त कमरा उपयोग में लिया जा सकता है।

यंत्र स्थापन

शुभ दिन, शुद्ध समय में एकान्त स्थित साधना स्थान को स्वच्छ

पानी से धो लें, कच्चा आंगन हो, तो गोबर (जो जमीन पर न गिरा हो) से लीप लें, तत्पश्चात् लकड़ी के एक समचौरस पट्टे पर श्वेत वस्त्र धोकर बिछा दें एवं उस पर चावलों से हाथ की आकृति का निर्माण करें।

तत्पश्चात् उस हाथ की आकृति के मध्य में ताम्र पत्रांकित पंचांगुली यंत्र स्थापित करें, उस पर लाल वस्त्र आच्छादित नारियल रखें एवं सम्भव हो, तो पंचांगुली देवी की स्वर्ण मूर्ति अथवा रजत मूर्ति स्थापित करें। मूर्ति सवा तोला या सवा पांच तोला वजन में हो।

फिर आगे बताई गई विधि से इक्कीस दिनों तक पूजन करें। साधारण समय में इक्कीस दिनों तक पूजन आवश्यक है। नवरात्रि में नौ दिन तक पूजन करें। नवरात्रि इस कार्य के लिए परम श्रेष्ठ मानी गई है।

तत्पश्चात् पूजन सामग्री एकत्र कर सामने रख लें। पूजन सामग्री निम्न है–

कुंकुम	नारियल जटा वाले
अबीर	चावल
गुलाल	बादाम
मौली	अखरोट
सुपारियां	काजू
केसर	किसमिस
पतासा	मिश्री
दुग्ध प्रसाद	अगरबत्ती
कपूर	लौंग
इलायची	काली मिर्च
यज्ञोपवीत	शहद
फल	इत्र

दीपक	कच्चा दूध
दही	घृत
शक्कर	पुष्प
पान	पुष्पमाला
भोजपत्र	गंगाजल
पीपल के पत्ते	कुंए का शुद्ध जल

सामग्री एकत्र कर स्वयं धुले हुए वस्त्र पहिनें। धोबी के धुले कपड़े न पहिनें, बल्कि घर के धुले हों।

ज्ञातव्य

पूजन से पूर्व कुछ तथ्यों की जानकारी साधक को कर लेनी चाहिए—

- अन्न शुद्ध हो, अपनी पत्नी के द्वारा पकाया गया हो या निकट सम्बन्धी के द्वारा पकाया गया हो।
- प्याज, लहसुन आदि तामसी भोजन, शराब आदि का त्याग।
- किसी दूसरे की कमाई का भोजन न हो। अशुद्ध स्थान पर न तो पकाया जाय, न भोजन किया जाय।
- कुत्ते, बिल्ली, चाण्डाल आदि के स्पर्श से निमित्त दोष लगता है, इस ओर ध्यान रखना चाहिए।
- रूखा, बासी और अशुद्ध भोजन न किया जाय।
- जितना आवश्यक हो, उससे कम ही भोजन किया जाय।
- कांसे के बर्तन में भोजन न करें।
- स्त्री संसर्ग, स्त्री चर्चा त्याज्य हो (साधना के दिनों में)।
- क्षौर कर्म न करें।
- संध्या, गायत्री स्मरण निश्चित हो।

- नग्नावस्था में, बिना स्नान के, अपवित्र हाथ से, सिर पर कपड़ा रखकर भी जप करना निषिद्ध है।
- जप के समय माला पूरी हुए बिना बातचीत नहीं करनी चाहिए।
- छींक, अपृश्य, अपानवायु होने पर हाथ धोने तथा कानों को जल से स्पर्श करें।
- आलस्य, जम्हाई, छींक, नींद, थूकना, डरना, अपवित्र वस्त्र, बातचीत, क्रोध आदि जप काल में वर्जित हैं।
- पहले दिन जितना जप किया जाय, रोज उतना ही जप करें, इसे घटाना-बढ़ाना उचित नहीं।
- जप काल में शौच जाने पर पुनः स्नान कर जप में बैठें।

जप काल के नियम

जपकाल में निम्न नियमों का भी पालन किया जाना चाहिए—

1. भूमि शयन
2. ब्रह्मचर्य
3. नित्य स्नान
4. मौन
5. नित्य दान
6. गुरु सेवा
7. पापकर्म परित्याग
8. नित्य पूजा
9. देवतार्चन
10. इष्टदेव व गुरु में श्रद्धा
11. जप निष्ठा
12. पवित्रता

पूजन कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व मंत्र उच्चारण करें, पर मंत्र उच्चारण

से पूर्व मुख शुद्धि जरूरी है। अशुद्ध जिह्वा से जपा हुआ मंत्र निष्फल होता है।

मल शोधन

मल तीन प्रकार के होते हैं, इन तीनों प्रकार के मलों का त्याग करें–

1. भोजन का मल
2. असत्य कथन का मल
3. कलह का मल

मुख शोधन

इस मल निवृत्ति एवं मुख शोधन के लिए जिस देवता का मंत्र हो, उससे सम्बन्धित मुख शोधन मंत्र का दस बार उच्चारण किया जाना चाहिए। मंत्र निम्न हैं–

दुर्गा	–	ऐं ऐं ऐं
बगलामुखी	–	ऐं ह्लीं ऐं
मातंगी	–	ॐ ऐं ॐ
लक्ष्मी	–	श्रीं
त्रिपुर सुन्दरी	–	श्रीं ॐ श्रीं ॐ श्रीं ॐ
धनदा	–	ॐ धूं ॐ
गणेश	–	ॐ गं
विष्णु	–	ॐ हूं
पंचांगुली	–	ऐं ह्रीं ऐं ह्रीं ऐं ह्रीं

इसके अतिरिक्त अन्य देवताओं की साधना में दस बार ॐ का ही उच्चारण करना चाहिए।

यह कार्य मुख शोधन कहलाता है।

मंत्र चैतन्य

पंचांगुली की साधना में मंत्र चैतन्य 'ई' है, अतः मंत्र के प्रारम्भ और अन्त में 'ई' सम्पुट देने से मंत्र चैतन्य हो जाता है।

मंत्र चैतन्य के बाद योनिमुद्रा का अनुष्ठान किया जाय। यदि योनिमुद्रा अनुष्ठान का ज्ञान न हो, तो 'भूतलिपि विधान' करना चाहिए।

भूतलिपि विधान

अनुलोम विलोम संपुटित मंत्र करने से भूतलिपि क्रम होता है। क्रम निम्नलिखित है—

ॐ अ आ इ ई उ ऊ ऋ लृ ए ऐ ओ औ क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स ह (मूल पंचांगुली मंत्र, फिर) ह स ष श व ल र य म भ ब फ प न ध द थ त ण ढ ड ठ ट ञ झ ज छ च ङ घ ग ख क औ ओ ऐ ए लृ ऋ ऊ उ ई इ आ अ ॐ।

भूतलिपि करने से मंत्र सिद्धप्रद एवं साधक के लिए सहायक बनता है।

भूतलिपि विधान करने के अनन्तर प्राण योग तथा दीपनी करनी चाहिए।

प्राणयोग

ह्रीं (मूलमंत्र)

इसका सात बार उच्चारण करने से मंत्र प्राणमय हो जाता है।

दीपनी

पंचांगुली देवी की दीपनी **'ऐं'** है।, अतः ऐं (मंत्र) का सात बार उच्चारण करना चाहिए।

मंत्र सिद्धि

मंत्र सिद्धि के लिए सात उपाय हैं–

1. भ्रामण
2. रोधन
3. वश्य
4. पीड़न
5. पोषण
6. शोषण
7. दाहन

अलग-अलग मंत्रों के लिए अलग-अलग उपाय निर्धारित हैं। पंचांगुली देवी साधना में भ्रामण पद्धति का उपयोग करना चाहिए–

भ्रामण पद्धति

वायु बीज **'यं'** द्वारा मंत्र को ग्रंथित करें। भोजपत्र पर एक मंत्र का अक्षर और एक वायु बीज लिखें, यथा–

ॐ यं म यं न यं मो यं . . . आदि-आदि। इस प्रकार पूरा मंत्र शिलारस, कपूर, कुंकुम, खस और चन्दन बराबर-बराबर लेकर लिखें। फिर इस भोजपत्र को षोडशोपचार पूजन कर दूध, घी, मधु शर्करा और जल के मिश्रण में रख दें और पूरे अनुष्ठान पर्यन्त उसी में रहने दे।

इस प्रकार करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है।

पंचांगुली ध्यान

पंचांगुली महादेवी श्री सीमन्धर शासने
अधिष्ठात्री करस्यासौ शक्तिः श्री त्रिदशेशितुः।

पंचांगुली मंत्र

ॐ नमो पंचांगुली पंचांगुली परशरी परशरी माता मयंगल वशीकरणी लोहमय दंडमणिनी चौसठ काम विहंडनी रणमध्ये राउलमध्ये शत्रुमध्ये दीवानमध्ये भूतमध्ये प्रेतमध्ये पिशाचमध्ये झोंटिंगमध्ये डाकिनीमध्ये शंखिनीमध्ये यक्षिणीमध्ये दोषिणीमध्ये शेकनीमध्ये गुणीमध्ये गारुड़ीमध्ये विनारीमध्ये दोषमध्ये दोषाशरणमध्ये दुष्टमध्ये घोर कष्ट मुझ ऊपरे बुरो जो कोई करे करावे जड़े जड़ावे तत चिन्ते चिन्तावे तस माथे श्री माता श्री पंचांगुली देवी तणो वज्र निर्धार पड़े ॐ ठं ठं ठं स्वाहा।

मंत्र स्मरण करने के उपरान्त पंचांगुली यंत्र पर लेख्य करें। पूजन से पूर्व ही रजत पत्र या ताम्र पत्र पर अंकित यह यंत्र प्राप्त कर लें (इस समय केवल अष्ट गंध से उस पर लेपन करें) तथा यंत्र को कलश के सामने ताम्र पात्र या रजत पात्र में स्थापित करें।

फिर आचमन प्राणायामादि के उपरान्त संकल्प करें, तत्पश्चात् गणपति पूजन, कलश पूजन, नवग्रह पूजन, षोडष मातृका पूजन करें।

ध्यान

निम्नलिखित ध्यान करें –

पंचांगुली महादेवी
श्री सीमन्धर शासने।
अधिष्ठात्री करस्यासौ
शक्तिः श्री त्रिदशेशितुः।।

फिर निम्नलिखित न्यास करें–

न्यास

पूजनारम्भ से पूर्व न्यास करना परमावश्यक है।

ॐ परशरि मूर्तये नमः शिरसि।
मयंगलै नमः मुखे।
सुन्दर्यै नमः हृदि।
ऐं बीजाय नमः गुह्ये।
सौं शक्तये नमः पादयोः।
क्लीं कीलकाय नमः नाभौ।
विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करशुद्धि न्यास

ॐ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ श्रीं तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ क्रीं मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ आं अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ सौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ ह्रीं श्रीं सौं करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास

ॐ ह्रीं हृदयाय नमः।

ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा।

ॐ क्लीं शिखायै वषट्।

ॐ आं कवचाय हुम्।

ॐ सौं नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ ह्रीं श्रीं सौं अस्त्राय फट्।

इसके पश्चात् यंत्र पूजा प्रारम्भ करें। यंत्र पूजा से पूर्व संकल्प करें–

ॐ अस्य श्री कस्यचित् सच्चिदानंद रूपस्य ब्रह्मणोऽनिर्वाच्य मायाशक्ति विजृंभिता विद्या योगात् कालक्रम स्वभावाविर्भूत महत्त्वोदिताहंकारोद्भूत वियदादि पंच महाभूतेन्द्रिय देवता निर्मिते, अंडकटाहे, चतुंर्दश लोकात्मके, लीलया तन्मध्यवर्तिनी भगवतः श्री नारायणस्य नाभि कमलोद्भूत सकल लोक पितामहस्य ब्रह्मणः सृष्टिं कुर्वतस्तदुद्धारणाय प्रजापति प्रार्थितस्य श्री सित वाराहवतारेण ध्रियमाणायां यस्यां धरित्र्याम् भुवर्लोक संहितायां सप्तद्वीप मंडितायां क्षीरोदाद्यब्धि द्विगुणद्वीप वलयिकृत लक्ष योजन विस्तीर्णे, जम्बूद्वीपे।

स्वर्गस्थिता अमराद्या सा शितवतारे, गंगादि सरिद्विः प्राविते: निखिल जन मुनिकृत निवसतिके, नैमीशारण्ये कन्या कुमारिका क्षेत्रे पुष्करारण्ये श्री मन्मार्तण्डस्य कृपापात्र कालत्रितयज्ञ गर्गवाराह ऋषय संख्यायां श्री ब्रह्मणोद्वितीय पराद्धें, श्री श्वेत वाराह नाम्नि प्रथम कल्पे, द्वितीय यामे, तृतीय मुहूर्ते, चतुर्थे युगे, स्वायंभुवः स्वारोचित उत्तमः तामसः रैवतः चाक्षुसेति षणमनूनां मतिक्रमोस्यात् क्रम्यमाणे संप्रति वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतिमे वर्षे त्रिनवे त्रिग्नेयाते कलियुगे कलि प्रथम चरणे श्री मल्लवणाब्धे उत्तरे तीरे गंगायमुनयोः पश्चिमे तटे।

शालीवाहन बौद्धावतारे विक्रम भूपकृतः संवत्सरे संवत . . . नाम संवत्सरे (एकोन त्रिशत्युत्तर द्वि सहस्त्र में) वर्षे रविर्नारायण (उत्तरायने) . . . कृतौ महामांगल्यप्रद मासोत्तमेमासे शुभ मासे . . . मासे . . . पक्षे आद्य तिथौ . . . वाराधिपति श्रीमद् . . . वासरे यथा नक्षत्र योग करण लग्न एवं ग्रह विशेषण विशिष्टायां अमुक राशिस्थिते सूर्ये अमुक राशिस्थिते चन्द्रे अमुक राशिस्थिते देवगुरौ शेषेसु ग्रहेषु यथा यथा राशिस्थिते सप्तसु एवं ग्रह गुण विशेष विशिष्टायां शुभपुण्यस्थितौ . . . गोत्रस्य श्री (यजमान का नाम) यजमानस्य शरीरे।

आयु आरोग्य ऐश्वर्यवांछित फल प्राप्तये भार्यादि

सर्वसम्पत्यै चिंतितार्थस्य आधि व्याधि जरा मृत्यु भय शोक निवृत्तये परमैश्वर्य संपत्यै निष्पत्यै अमुक कर्मणे पंचांगुली देवी पूजन कर्मणि सांगता सिद्ध्यर्थं मम समस्त कुटुम्बस्य सपरिवारस्य सर्वविघ्नोपशांतये भूत भविष्यत् वर्तमान त्रिविधो प ताप शांतये भूरि-भाग्याप्तये पुनः कृतस्य करिष्यमाणः साम्य गुप्त महाफला वाप्तये नित्य नूतन आत्मनः क्षीरोदिपट फुलादिवास सुरभि चन्दनः कपूरः कस्तूरी केतक्याद्यनेक शरीर भूषण समृद्ध्यर्थं।

सुवर्ण रौप्य निखिल धातु प्रवाल मौक्तिक माणिक्येन्द्र नीलवज्र वैदूर्यादि नाना रत्न बहुल प्राप्तये यवः व्रीही गोधूम तिल माष मुद्गाद्यऽनेक धान्यानां संतताभि वृद्धये अश्वशाला गजशाला गौशाला सर्व चतुष्पदशाला प्रपाद्यादिशाला देवपूजास्थान, ब्राह्मण संतर्पणादि सर्वस्थानानाम् सर्वविघ्नोपशांतये मम इह जन्मनि पंचांगुली प्रीति द्वारा सर्वापद् निवृत्ति पूर्वकं अल्पायु निवृत्ति पूर्वकं जन्म लग्नात् गोचरात् चतुरस्त्र अष्ट द्वादश स्थान स्थित सूर्यादि क्रूर ग्रह तज्जनितारिष्ट निवृत्ति पूर्वकं आधि दैविक भौतिक आध्यात्मिक जनितः क्लेशः कायिक वाचिक मानसिक त्रिविधागौध निवृत्ति पूर्वकं शरीरारोग्यार्थं धर्मार्थं काम मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्ध्यर्थं राजद्वारे व्यापारतश्च लाभार्थं विजयार्थं जयार्थं क्षेमार्थं गतवस्तु प्राप्तर्थ्यं स्थिर लक्ष्मी संचितार्थं पुत्र पौत्र अविच्छिन्न धन

समृद्ध्यर्थं श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थे सद्विष्ट सिद्ध्यर्थं यथा संपादित सामग्र्यां कलश स्थापन पंचांगुली पूजनम् अहं करिष्ये।

तदंगत्वेन निर्विघ्नतया परिसमाप्त्यर्थं गणपति पंचोपचार वास्तु दिव्यादि चतुः षष्टी योगिनी अजरादि पंचाशत् क्षेत्रपाल सप्त चिरंजीव सप्तवसोर्द्धारा सप्तऋषि गौर्यादि षोडश मातृका वरुण कलश सूर्यादि नवग्रह तदंगभूत अधिदेवता प्रत्यधि देवता स्थापन पूजनांतर भितौ पंचांगुली आवाहनं कलशस्थापनं तस्योपरि पंचांगुली यंत्र पूजनं तदंगत्वेनादौ गणपति पूजनं अहं करिष्ये।

ध्यान

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री पंचांगुली देवीं ध्यायामि।

आवाहन

ॐ आगच्छागच्छ देवेशि! त्रैलोक्य तिमिरापहे।
क्रियमाणां मया पूजां गृहाण सुरसत्तमे।।
ॐ भूर्भुवः स्वः पंचांगुली देवताभ्यो नमः
आवाहनं समर्पयामि।।

आसन

रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्व सौख्य करं शुभम्।
आसनञ्च मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि!।।
ॐ भूर्भुवः स्वः पंचांगुली देवताभ्यो नमः
आसनं समर्पयामि।।

पाद्य

उष्णोदकं निर्मलञ्च सर्व सौगन्ध्य संयुक्तम्।
पाद प्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः पंचांगुली देवताभ्यो नमः
पाद्यं समर्पयामि।।

अर्घ्य

ॐ अर्घ्यं गृहाण देवेशि! गन्ध पुष्पाक्षतैःसह।
करुणां कुरु मे देवि! गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते।।

आचमनीय

सर्व तीर्थ समानीतं सुगन्धिं निर्मलं जलम्।
आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वरि।।

स्नान

गंगा सरस्वती रेवा पयोष्णी नर्मदा जलैः।
स्नापिताऽसि मया देवि! ततः शान्तिं कुरुष्व मे।।

पय स्नान

कामधेनु समुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञ हेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्।।

दधि स्नान

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।

दध्यानीतं मया देवि! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

घृत स्नान

नवनीत समुत्पन्नं सर्व सन्तोष कारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदस्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

मधु स्नान

तरुपुष्प समुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

शर्करा स्नान

इक्षुसार समुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका।
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

पंचामृत स्नान

पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करा युतम्।
पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

वस्त्र

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोक लज्जा निवारिणे।
मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्।।

यज्ञोपवीत

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवता मयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि।।

गन्ध[1]

श्री खण्ड चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

अक्षत

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ! कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वरि।।

पुष्प

ॐ माल्यादीनि सुगंधीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयानीतानि पुष्पाणि प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम्।।

सौभाग्य द्रव्य

श्वेत चूर्ण रक्त चूर्ण हरिद्रा कुंकुमान्वितैः।
नानापरिमल द्रव्यैः प्रीयतां परमेश्वरि।।

धूप

वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

दीप

आज्यं च वर्तिसंयुक्तं वन्हिना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेशि! त्रैलोक्य तिमिरापहा।।

नैवेद्य

नैवेद्यं गृह्यतां देवि! भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्रेह परां गतिम्।।

ताम्बूल

पूंगीफलं महद्दिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम्।
एलादि चूर्ण संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ऋतु फल

इदं फलं मया देवि! स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफला वाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

दक्षिणा

हिरण्य गर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्त पुण्य फलद मतः शांतिं प्रयच्छ मे।।

कर्पूर आरती

ॐ आरार्ति पार्थिव ꣳ रजः पितुर प्रायिधामभिः।
दिव सदा ꣳ सि बृहती वितिष्ठ स आत्वेषं वर्तते तमः।।

ॐ कदली गर्भ सम्भूतं कर्पूरं च प्रदीपितम्।
आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव।।

मंत्र पुष्पाञ्जलि

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि
प्रथमान्यासन् तेहनाकं महिमानः सचन्त
यत्र पूर्वे साद्धयाः सन्ति देवाः।।

मानसी प्रदक्षिणा

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि तानि प्रदश्यन्ति प्रदक्षिणां पदे पदे।।

विशेषार्घ्य

नमस्ते देवदेवेश नमस्ते धरणीधर।
नमस्ते जगदाधार अर्घ्यं नः प्रतिगृह्यताम्।।
वरदत्वं वरं देहि वांछितं वांछितार्थद।
अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम।।
गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च।
आगता सुख सम्पत्तिः पुण्योऽहं तव दर्शनात्।।

पूजा के पश्चात् यंत्र की विशेष पूजा प्रारम्भ की जाय।

प्रथमावरण पूजन

प्रथमावरण में यंत्र के चारों ओर जो चार रेखाओं की परिधि है, उसका पूजन होगा, क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ रेखा

का अलग-अलग पूजन करें। पूजा का प्रारम्भ पश्चिम द्वार, उत्तर द्वार, पूर्व द्वार एवं फिर दक्षिण द्वार से होगा।

प्रथम रेखा पूजन

इसमें नमः कहने के बाद गंध, अक्षत, पुष्प चढ़ाना चाहिए।

श्री त्रैलोक्य मोहिनी नमः।
श्री सर्वसिद्धप्रदः नमः।
श्री सर्व रक्षाकरः नमः।
श्री सर्वार्थ साधकः नमः।।

द्वितीय रेखा पूजन

श्री ब्राह्मै नमः	**(पश्चिम)**
श्री माहेश्वर्यै नमः	**(कोण)**
श्री कौमार्यै नमः	**(उत्तर)**
श्री वैष्णव्यै नमः	**(कोण)**
श्री वाराह्मै नमः	**(पूर्व)**
श्री इन्द्राण्यै नमः	**(कोण)**
श्री लक्ष्म्यै नमः	**(दक्षिण)**
श्री पंचांगुल्यै नमः	**(कोण)**

तृतीय रेखा पूजन

श्री कामाकर्षिणी नमः।
श्री बुद्धयाकर्षिणी नमः।

श्री अहंकाराकर्षिणी नमः।

श्री शब्दाकर्षिणी नमः।

श्री स्पर्शाकर्षिणी नमः।

श्री रूपाकर्षिणी नमः।

श्री रसाकर्षिणी नमः।

श्री गन्धाकर्षिणी नमः।

(दिशाओं का क्रम ऊपरलिखित ही होगा)

चतुर्थ रेखा पूजन

श्री चित्ताकर्षिणी नमः।

श्री धैर्याकर्षिणी नमः।

श्री स्मृत्याकर्षिणी नमः।

श्री नामाकर्षिणी नमः।

श्री बीजाकर्षिणी नमः।

श्री आत्माकर्षिणी नमः।

श्री अमृताकर्षिणी नमः।

श्री शरीराकर्षिणी नमः।

(पूजन में दिशाओं का क्रम ऊपरलिखित ही होगा)

इस प्रकार से चारों रेखाओं का पूजन कर, पुनः चारों रेखाओं का एक साथ षोडशोपचार पूजन कर पुष्पाञ्जलि एवं नैवेद्य भेंट करें।

द्वितीयावरण पूजन

इस आवरण में यंत्र के षोडश कमलों का पूजन होगा। दिशाओं का क्रम ऊपरलिखित ही होगा।

ॐ सर्वज्ञायै नमः।

ॐ सर्वशक्तिप्रदायः नमः।

ॐ सर्वैश्वर्यप्रदायः नमः।

ॐ सर्वज्ञानमयी नमः।

ॐ सर्व व्याधि नाशिन्यै नमः।

ॐ सर्वाधारायै नमः।

ॐ सर्वपापहरायै नमः।

ॐ सर्वानन्दमयी नमः।

ॐ सर्वरक्षामयी नमः।

ॐ सर्वेप्सित फलप्रदामयी नमः।

ॐ कामेश्वरी नमः।

ॐ सर्वेश्वरी नमः।

ॐ मोहिनी नमः।

ॐ जयिनी नमः।

ॐ कामरूपायै नमः।

ॐ विश्वमोहिन्यै नमः।

तृतीयावरण पूजन

इस पूजा में अन्दर के अष्टदलों का पूजन होगा। अष्टदलों के पूजन में दिशाओं का क्रम पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर होगा। फिर कोणों का पूजन क्रमशः आग्नेय, नैऋत्य, वायव्य, ईशान होगा।

इसमें प्रत्येक दल का पूजन षोडशोपचार से अलग-अलग होगा।

ॐ ह्रीं अं इं उं एं ओं ब्राह्मयै नमः।

तत् पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।

ॐ ह्रीं कं खं गं घं ङं माहेश्वर्यै नमः।

तत् पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।

ॐ ह्रीं चं छं जं झं ञं कौमार्यै नमः।

तत् पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ह्रीं टं ठं डं ढं णं वैष्णव्यै नमः

तत् पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ह्रीं तं थं दं धं नं वाराह्यै नमः

तत् पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ह्रीं पं फं बं भं मं ऐन्द्राण्यै नमः

तत् पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ह्रीं यं रं लं वं चामुण्डायै नमः

तत् पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ह्रीं शं सं षं हं महालक्ष्म्यै नमः

तत् पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

चतुर्थावरण पूजा

इस आवरण में सोलह त्रिकोण हैं। पश्चिम त्रिकोण से होकर वाम भाग से आगे के त्रिकोणों का पूजन होगा—

ॐ ॐ ॐ नमः।

श्रीं श्रीं श्रीं नमः।

ह्रीं ह्रीं ह्रीं नमः।

क्रीं क्रीं क्रीं नमः।

सौं सौं सौं नमः।

ह्रौं ह्रौं ह्रौं नमः।

वं वं वं नमः।

सं सं सं नमः।

हं हं हं नमः।

गं गं गं नमः।

ज्रं ज्रं ज्रं नमः।

भ्रां भ्रां भ्रां नमः।

जूं जूं जूं नमः।

क्रौं क्रौं क्रौं नमः।

ठं ठं ठं नमः।

दं दं दं नमः।

तत्पश्चात् षोडश त्रिकोणों का समग्र पूजन करें। पूजन मंत्र निम्न है–

ॐ ॐ ॐ श्रीं ॐ ह्रीं ॐ क्रीं ॐ सौं ॐ ह्रौं ॐ वं ॐ सं ॐ हं ॐ गं ॐ ज्रं ॐ भ्रां ॐ जूं ॐ क्रौं ॐ ठं ॐ दं ॐ ॐ ॐ।

पंचमावरण पूजन

इस आवरण में द्वादश त्रिकोण हैं, पश्चिम त्रिकोण से पूजन आरंभ कर वाम भाग से आगे के त्रिकोणों का क्रमशः पूजन होगा–

ॐ अं कं चं टं तं पं यं सं अलम्बुषायै नमः पूजयामि।

ॐ अं कं चं टं तं पं यं सं कुहू नमः पूजयामि।

ॐ अं कं चं टं तं पं यं सं विश्वोदरी नमः पूजयामि।

ॐ अं कं चं टं तं पं यं सं वारणा नमः पूजयामि।

ॐ अं कं चं टं तं पं यं सं हस्तिजिह्वा नमः पूजयामि।

ॐ अं कं चं टं तं पं यं सं यशोवती नमः पूजयामि।

ॐ अं कं चं टं तं पं यं सं पयस्विनी नमः पूजयामि।

ॐ अं कं चं टं तं पं यं सं गान्धारी नमः पूजयामि।

ॐ अं कं चं टं तं पं यं सं पूषा नमः पूजयामि।

ॐ अं कं चं टं तं पं यं सं शंखिनी नमः पूजयामि।

ॐ अं कं चं टं तं पं यं सं सरस्वती नमः पूजयामि।

ॐ अं कं चं टं तं पं यं सं इडा नमः पूजयामि।

षष्ठमावरण पूजन

इस आवरण में दस त्रिकोणों का पूजन होगा। पश्चिम त्रिकोण से प्रारम्भ कर क्रमशः बायें चलते हुए पूजा होगा –

ॐ सर्वज्ञै नमः।

ॐ सर्वशक्तिमयी नमः।

ॐ सर्वैश्वर्यप्रदा नमः।

ॐ सर्वज्ञानप्रदा नमः।

ॐ कर ज्ञानप्रदा नमः।

ॐ काल ज्ञानप्रदा नमः।

ॐ सर्वसिद्धिप्रदा नमः।

ॐ सर्वातीता नमः।

ॐ सर्वभावी नमः।

ॐ सम्मोहनाय नमः।

सप्तमावरण पूजन

इस आवरण में आठ त्रिकोण हैं, पूजन पश्चिम त्रिकोण से पूर्ववत् होगा—

ॐ श्रीं आकर्षय नमः।

ॐ श्रीं बीजाय नमः।

ॐ श्रीं धिष्ठाय नमः।

ॐ श्रीं विष्ठाय नमः।

ॐ श्रीं अविष्ठाय नमः।

ॐ श्रीं त्र्यष्ठाय नमः।

ॐ श्रीं महिष्ठाय नमः।

ॐ श्रीं पुरिष्ठाय नमः।

भविष्यत् पूजन

तत्पश्चात् भविष्यत् पूजन करें—

ॐ अं नमः।

ॐ आं नमः।

ॐ इं नमः।

ॐ ईं नमः।

ॐ उं नमः।

ॐ ऊं नमः।

ॐ ऋं नमः।

ॐ ॠं नमः।

ॐ ऌं नमः।

ॐ ॡं नमः।

ॐ एं नमः।

ॐ ऐं नमः।

ॐ ओं नमः।

ॐ औं नमः।

ॐ अं नमः।

ॐ अः नमः।

ॐ कं नमः।

ॐ खं नमः।

ॐ गं नमः।

ॐ घं नमः।

ॐ ङं नमः।

ॐ चं नमः।

ॐ छं नमः।

ॐ जं नमः।

ॐ झं नमः।

ॐ ञं नमः।

ॐ टं नमः।

ॐ ठं नमः।

ॐ डं नमः।

ॐ ढं नमः।

ॐ णं नमः।

ॐ तं नमः।

ॐ थं नमः।

ॐ दं नमः।

ॐ धं नमः।

ॐ नं नमः।

ॐ पं नमः।

ॐ फं नमः।

ॐ बं नमः।

ॐ भं नमः।

ॐ मं नमः।

ॐ यं नमः।

ॐ रं नमः।

ॐ लं नमः।

ॐ वं नमः।

ॐ शं नमः।

ॐ षं नमः।

ॐ सं नमः।

ॐ हं नमः।

ॐ क्षं नमः।

ॐ त्रं नमः।

ॐ ज्ञं नमः।

इसके बाद अष्टमावरण पूजन करें।

अष्टमावरण पूजन

इस आवरण में मुख्य देवी का पूजन है। देवी के पूजन से पूर्व उसके मुख्य त्रिकोण का पूजन करें। पहले पश्चिमी रेखा और फिर बायें से आगे की रेखाओं का पूजन हो—

श्री बाणशक्ति पूजयामि तर्पयामि नमः।

श्री धनुः शक्ति पूजयामि तर्पयामि नमः।

श्री पाश शक्ति पूजयामि तर्पयामि नमः।

इसके अनन्तर त्रिकोण के मध्य बिन्दु पर निम्नलिखित मंत्र पढ़ते हुए अक्षत-पुष्प छोड़ते रहें—

ॐ सर्वे वै देवा देवी मुपतस्थुः कासि त्वं महादेवि! साऽब्रवीदहं ब्रह्मस्वरूपिणी। मत्तः प्रकृति पुरुषात्मकं जगत्। शून्यं चाशून्यं च। अहमानंदा ना नंदौ अहं

विज्ञाना विज्ञाने अहं ब्रह्मा ब्रह्मणी द्वे ब्रह्मषी वेदितव्ये। इति वाऽधर्वणी श्रुतिः। अहं पञ्चभूतानि अहं पञ्च तन्यात्राणि अहंपरिवल जगत् वेदोऽहम् वेदोऽहम्। विद्याऽहम्‌विद्याऽहम्। अधश्च चोर्द्ध त्रिर्यक् चाहम्। अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चरामि। अहमादित्यै रुत विश्वे देवैः। अहं मित्रावरुणा वुभौ बिभर्ति अहमिन्द्राग्नि अहमश्विना वुमा अहं सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं दधामि अहं विष्णु मुरुक्रमम्। ब्रह्माण मुत प्रजापतिं दधामि अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राप्ये यजमानाय सुव्रते अहं राज्ञी संगमनी वसूनाम् चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम् अहं सुवे पितरमस्य मूर्द्धन्मम योनिरप्स्वान्त समुद्रे य एवं वेद स दैवीं सम्पदमाप्नोति ते देवा अब्रुवन्।

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।

तामग्नि वर्णां तपसा ज्वलन्तीं-
वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्।
दुर्गां देवीं शरणामहं प्रपद्ये-
महेऽसुरान्नाशयित्र्यै ते नमः।।
दैवीं वाचं जनयन्त देवारतां-
विश्वरूपां पशावो वदन्ति।
सानो मन्द्रेषमूजंदुहाना धेनुर्वागस्मा नुप सुष्ठु तै तु।।

कालरात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्द मातरम्।
सरस्वतीमदितिं दक्ष दुहितरं नमामः पावनां शिवाम्।।

महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्।।

अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव। तां देवीं मन्वजायन्तभद्रा अमृत बान्धवः। कामयोनिः कमला वज्रपाणिर्गुहा हंसामातलिश्चाभमिन्द्र। एनर्गुहा सकला मायया च पृथक् क्लेशा। विश्व मातादि विद्याः एषात्म शक्तिः। एषा विश्व मोहिनी पाशांकुश धर्नुबाणधरा। एषा श्री श्री महाविद्याः। य एव वेद स शोकं तरति। नमस्ते भगवति मातरस्मान्पाहि सर्वतः। सैषा वैष्णवा वसवः सैवैकादश रुद्राः सैषा द्वादशादित्याः सैषा विश्वे देवाः सोमपा असोमपाश्च सैषा यातुधाना असुरा रक्षांसि पिशाच यक्ष सिद्धाः सैषा सत्व रजस्तमांसि सैषा ब्रह्मा विष्णु रुद्ररूपिणी सैषा प्रजापतीन्द्र मनवः सैषा ग्रह नक्षत्र ज्योतिष्कला काष्ठादि विश्वरूपिणी तामहं प्रणौमि नित्यम्।

पापापहारिणी देवी भुक्ति मुक्ति प्रदायिनी।
अनन्तां विजयां शुद्धां शरण्यां सर्वदा शिवाम्।।

विवदाकार संयुक्तं वीति होत्र समन्वितम्।
अर्द्धेन्दुलसितं देव्या वाजं सर्वार्थ साधकम्।।

एवमेकाक्षरं ब्रह्म यतयः शुद्ध चेतसः।
ध्यायन्ति परमानन्द मया ज्ञानाम्बुराशयः।।

वाङ्मया ब्रह्मभूस्तस्मात् षष्ठ वक्त्र समन्विताम्।
सूर्यो वामश्रोत्र बिन्दु संयुक्ताकाष्ठ तृतीयकम्।।

नारायणेन संमिश्रो वायुश्चाधार युक्तयः।
विच्चे नवार्ण कोणस्य महनानन्ददायकः।।
हृत्पुण्डरीक मध्यस्थां प्रातः सूर्य समप्रभाम्।
पाशांकुशधरां सौम्यां वरदा भय हस्तकाम्।।
त्रिनेत्रां रक्त वसनां भक्त काम दुहां भजे।
भजामि त्वां महादेवि! महाभय विनाशिनी।।
महादारिद्र्य शमनी महाकारुण्य रूपिणी।
यस्यां स्वरूपं ब्रह्मादयो न जानन्ति तस्मादुच्यते अज्ञेया।
यस्या अन्तो न लभ्यते तस्मादुच्यते अनन्ता।
यस्या लक्षं नोप लक्ष्यते तस्मादुच्यते अलक्ष्या।
यस्या जननं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अजा।
एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यते एका।
एकैव विश्वरूपिणी तस्मादुच्यतेऽनेका।
अत एवोच्यतेऽज्ञेयनन्तालक्षा चैका नेका।
मंत्राणां मातृकादेवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी।
ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्य साक्षिणी।।
यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता।
तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचार विद्यातिनीम्।।
नमामि भयभीतोऽहं संसारार्णवतारिणीम्।
योऽधीते स प्रञ्चाथर्व शीर्ष फल माप्नोति।।
इदमथ योऽर्चां स्थापयति।
शत लक्षं प्रजप्ताऽति नार्चा शुद्धिं च विन्दति।

शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्या विधिः स्मृतः।।
दशवारं पठेद्यस्तु सद्यः पापैः प्रमुच्यते।
महादुर्गाणि तरति महादेव्याः प्रसादतः।।
सायमंधियानो दिवस कृतं पापं नाशयति। प्रात
रधियाना रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायं प्रातः
प्रयुञ्जानोऽपापो भवति। निशीधे तुरीय सन्ध्यां
जप्त्वा वाक्सिद्धिर्भवति। नूतनाया प्रतिमाया
देवता सान्निध्यं भवति। य एव वेद।

अब यंत्र जो ताम्र, स्वर्ण या चांदी का हो या मूर्ति हो, तो उसका षोडशोपचार पूजन करें, फिर निम्नलिखित मंत्र से देवी का आवाहन करें–

आवाहन

श्री अंगुष्ठ रूपे अंगुष्ठ पद पूजयामि, तर्पयामि नमः।
श्री तर्जनी रूपे तर्जनी पद पूजयामि, तर्पयामि नमः।
श्री मध्यमा रूपे मध्यमा पद पूजयामि, तर्पयामि नमः।
श्री अनामिका रूपे अनामिका पद पूजयामि, तर्पयामि नमः।
श्री कनिष्ठिका रूपे कनिष्ठिका पद पूजयामि, तर्पयामि नमः।
श्री पंचांगुली रूपे पंचांगुली पद पूजयामि, तर्पयामि नमः।

भूत शुद्धि

मूलाधारात्समुत्थाप्य कुण्डली पर देवताम्।
सुषुम्ना मार्गमाश्रित्य ब्रह्मरन्ध्रगतां स्मरेत्।
जीवं ब्रह्माणि संयोज्य हंस मंत्रेण साधकः।

तत्पश्चात् यंत्र के मध्य सिंहासन पर विराजमान देवी की कल्पना कर उस पर निम्न मंत्र पढ़कर अक्षत छोड़ते जायें।

ॐ हंसः सोऽहम्

ज्ञलयो ज्ञकारे
त्रलयो त्रकारे
क्षलयो क्षकारे
हलयो हकारे
सलयो सकारे
षलयो षकारे
शलयो शकारे
वलयो वकारे
ललयो लकारे
रलयो रकारे
यलयो यकारे
मलयो मकारे
भलयो भकारे
बलयो बकारे
फलयो फकारे
पलयो पकारे
नलयो नकारे
धलयो धकारे

दलयो दकारे
थलयो थकारे
तलयो तकारे
णलयो णकारे
ढलयो ढकारे
डलयो डकारे
ठलयो ठकारे
टलयो टकारे
ञलयो ञकारे
झलयो झकारे
जलयो जकारे
छलयो छकारे
चलयो चकारे
ङलयो ङकारे
घलयो घकारे
गलयो गकारे
खलयो खकारे
कलयो ककारे
अःलयो अःकारे
अंलयो अंकारे
औलयो औकारे

ओलयो ओकारे
ऐलयो ऐकारे
एलयो एकारे
ॡलयो ॡकारे
ऌलयो ऌकारे
ॠलयो ॠकारे
ऋलयो ऋकारे
ऊलयो ऊकारे
उलयो उकारे
ईलयो ईकारे
इलयो इकारे
आलयो आकारे
अलयो अकारे

सहस्राम्बुजे ब्रह्मरन्ध्रे परमात्मनि लयं गतः।

ॐ ज्ञकारम् ज्ञकारे उपसंहरामि।
ॐ त्रकारम् त्रकारे उपसंहरामि।
ॐ क्षकारम् क्षकारे उपसंहरामि।
ॐ हकारम् हकारे उपसंहरामि।
ॐ सकारम् सकारे उपसंहरामि।
ॐ षकारम् षकारे उपसंहरामि।
ॐ शकारम् शकारे उपसंहरामि।

ॐ वकारम् वकारे उपसंहरामि।
ॐ लकारम् लकारे उपसंहरामि।
ॐ रकारम् रकारे उपसंहरामि।
ॐ यकारम् यकारे उपसंहरामि।
ॐ मकारम् मकारे उपसंहरामि।
ॐ भकारम् भकारे उपसंहरामि।
ॐ बकारम् बकारे उपसंहरामि।
ॐ फकारम् फकारे उपसंहरामि।
ॐ पकारम् पकारे उपसंहरामि।
ॐ नकारम् नकारे उपसंहरामि।
ॐ धकारम् धकारे उपसंहरामि।
ॐ दकारम् दकारे उपसंहरामि।
ॐ थकारम् थकारे उपसंहरामि।
ॐ तकारम् तकारे उपसंहरामि।
ॐ णकारम् णकारे उपसंहरामि।
ॐ ढकारम् ढ़कारे उपसंहरामि।
ॐ डकारम् डकारे उपसंहरामि।
ॐ ठकारम् ठकारे उपसंहरामि।
ॐ टकारम् टकारे उपसंहरामि।
ॐ ञकारम् ञकारे उपसंहरामि।
ॐ झकारम् झकारे उपसंहरामि।
ॐ जकारम् जकारे उपसंहरामि।
ॐ छकारम् छकारे उपसंहरामि।

ॐ चकारम् चकारे उपसंहरामि।
ॐ ङकारम् ङकारे उपसंहरामि।
ॐ घकारम् घकारे उपसंहरामि।
ॐ गकारम् गकारे उपसंहरामि।
ॐ खकारम् खकारे उपसंहरामि।
ॐ ककारम् ककारे उपसंहरामि।
ॐ अःकारम् अःकारे उपसंहरामि।
ॐ अंकारम् अंकारे उपसंहरामि।
ॐ औकारम् औकारे उपसंहरामि।
ॐ ओकारम् ओकारे उपसंहरामि।
ॐ ऐकारम् ऐकारे उपसंहरामि।
ॐ एकारम् एकारे उपसंहरामि।
ॐ लृकारम् लृकारे उपसंहरामि।
ॐ लृकारम् लृकारे उपसंहरामि।
ॐ ॠकारम् ॠकारे उपसंहरामि।
ॐ ऋकारम् ऋकारे उपसंहरामि।
ॐ ऊकारम् ऊकारे उपसंहरामि।
ॐ उकारम् उकारे उपसंहरामि।
ॐ ईकारम् ईकारे उपसंहरामि।
ॐ इकारम् इकारे उपसंहरामि।
ॐ आकाम् आकारे उपसंहरामि।
ॐ अकारम् अकारे उपसंहारामि।
सहस्त्रदलम्बुजाकारे ब्रह्मरन्ध्रे लयम्।

भूतोपसंहार

यं यं (16 बार 'यं' बोलें) वन्हीं बीजं स्मरेन्नित्यं निर्दहेत्पापपुरुषम्। रं रं (64 बार 'रं' बोलें) वायु बीजेन तद्रक्षां बहिर्निष्कास्ययत्नः। यं यं (32 बार 'यं' बोलें) सुधाबीजेन देहोत्थं भस्मसप्लावयेत्सुधीः। वं वं (16 बार 'वं' बोलें) भूबीजेन घनीकृत्वा भस्म तत्कनकाण्डवत्। लं लं (16 बार 'लं' बोलें) विशुद्ध मुकुराकारं ब्रह्मरन्ध्रगतं स्मरेत्। आकाशादीनि भूतानि पुनरुत्पादयेत्। अखण्डं ब्रह्म तस्मात्स्यात्प्रेरक पुरुषस्तथा। प्रकृतेर्महदाकारस्ततोऽहं त्रिगुणात्मकः। तस्माकः तस्मादात्मन आकाशः सम्भूतः। आकाशद्वायुः वायोरग्निः। अग्नेराप अद्भयः पृथिवी। पृथिव्या ओषधयः ओषधीम्योऽन्नम्। अन्नाद्रेतः। रेतसः पुरुषः स वाएष पुरुषोऽन्नरसमयः हंसः सोऽहम्। कुण्डली जीव मादाय परसन्गामयीम्। संस्थाप्य हृदयाम्भोजे मूलाधारं गतं स्मरेत्।।

इसके बाद यंत्र अथवा मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठा करें।

प्राण प्रतिष्ठा

ॐ अस्य श्री प्राण प्रतिष्ठा मंत्रस्य ब्रह्मा विष्णु महेश्वरा ऋषयः ऋग्यजु सामानि छन्दासि। क्रियामय वपुः प्राण शक्तिर्देवता। आं बीजम्। ह्रीं शक्तिः क्रौं कीलम्। प्राण प्रतिष्ठापने विनियोगः।

ॐ ब्रह्म विष्णु महेश्वरा ऋषिभ्यो नमः शिरसि।
ऋग्यजुः सामच्छन्देभ्यो नमः मुखे।
प्राणशक्तये नमः हृदये।
आं बीजाय नमः लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः पादयोः।
क्रौं कीलकाय नमः सर्वांगेषु।

न्यास

ॐ अं कं खं गं घं ङं आं
पृथिव्याप्तेजो वाय्वाकाशात्मने अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ इं चं छं जं झं ञं ईं
शब्द स्पर्श रूप रस गन्धात्मने तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ उं टं ठं डं ढं णं ऊं
त्वक् चक्षुः श्रोत्र जिह्वाघ्राणात्मने मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ एं तं थं दं धं नं ऐं
वाक् पाणि पाद पायु पस्थात्मने अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ ओं पं फं बं भं मं औं
वचना दान गति विसर्गा नन्दात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं त्रं ज्ञं अः
मनो बुद्ध्यहंकार चित्त विज्ञानात्मने करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।
ॐ अं कं खं गं घं ङं आं
पृथिव्याप्तेजो वाय्वाकाशात्मने हृदयाय नमः।

ॐ इं चं छं जं झं ञं ईं
शब्द स्पर्श रूप रस गन्धात्मने शिरसे स्वाहा।

ॐ उं टं ठं डं ढं णं ऊं
त्वक् चक्षुः श्रोत्र जिह्वाघ्राणात्मने शिखायै वषट्।

ॐ एं तं थं दं धं नं ऐं
वाक् पाणि पाद पायूपस्थात्मने कवचाय हुं।

ॐ ओं पं फं बं भं मं औं
वचनादान गति विसर्गानन्दात्मने नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं त्रं ज्ञं अः
मनो बुद्ध्यहंकार चित्त विज्ञानात्मने अस्त्राय फट्।

ॐ आं इति नाभिमारभ्य पादान्तं स्पृशेत्।

ॐ ह्रीं इति हृदयमारभ्य नाभ्यन्तं च स्पृशेत्।

ॐ क्रौं इति मस्तकमारभ्य हृदयान्तं च स्पृशेत्।

ध्यान

रक्ताम्भोधिस्थ पोतोल्लसदरुण सरोजाधिरूढ़ा कराब्जैः
पाशं कोदण्ड भिक्षूद्भव मथ गुणमप्यंकुशं पंच बाणान्।
विभ्राणाऽसृक्कपालं त्रिनयन लसितापीन वक्षोरुहाढ्या
देवी बालार्क वर्णा भवतु सुचाकरी प्राणशक्तिः परा नः।।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहम् प्राणा इह प्राणः। ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः जीव इह स्थितः।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक् चक्षुः श्रोत्र जिह्वा घ्राणवाक्पाणि पाद पायूपस्थानीहैवागत्यसुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ मम देहस्य पंचदश संस्काराः सम्पद्यन्ताम् इत्युक्त्वा। इति प्राण प्रतिष्ठा।।

प्राण प्रतिष्ठा करने के बाद अन्तर्मातृका न्यास करें—

अन्तर्मातृका न्यास

ॐ अस्य श्रीरन्तर्मातृका मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषि। मातृका सरस्वती देवा। गायत्री छन्दः। ह्लौं बीजानि स्वराः शक्तयः।'क्षं' कीलकं मातृकान्यास जपे विनियोगः।

ॐ अं ब्रह्म ऋषये नमः आं शिरसि।
इं गायत्री छन्दसे नमः ईं वदने।
उं मातृका सरस्वती देवतायै नमः ऊं हृदये।
एं हलभ्यो बीजेभ्यो नमः नमः ऐं गुह्ये।
ओं स्वर शक्तिभ्यो नमः औं पादयोः।
अं क्षं कीलकाय नमः अः सर्वांगेषु।

करन्यास

ॐ अं कं खं गं घं ङं आं अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ इं चं छं जं झं ञं ईं तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ उं टं ठं डं ढं णं ऊं मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ओं पं फं बं भं मं औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं अः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।

ध्यान

पचाशल्लिपिभिर्विभज्य मुखदोर्हृज्पद्मवक्षः स्थलां
भास्वन्मौलिनिबद्ध चन्द्र शकलामापीन तंगस्तनीम्।
मुद्रामक्ष गुणं सुधाढ्य कलशं विद्यां च हस्तांबुजै
र्विभ्राणां विशद प्रभां त्रिनयनां वाग्देवता तां श्रिये।।

इसके बाद दाहिने हाथ की कनिष्ठिका से अंगूठे तक के सोलह पर्वों को देखें व पूजा करें—

ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं
औं अं अः।

फिर वाम हाथ की अंगूठे से कनिष्ठिका तक के सोलह पर्वों की पूजा करें—

कं खं गं घं ङं	अंगूठा बन्द करें
चं छं जं झं ञं	तर्जनी बन्द करें
टं ठं डं ढं णं	मध्यमा बन्द करें
तं थं दं धं नं	अनामिका बन्द करें
पं फं बं भं मं	कनिष्ठिका बन्द करें
यं रं लं वं	कनिष्ठिका खोलें
शं षं सं	अनामिका खोलें

हं क्षं	मध्यमा खोलें
त्रं	तर्जनी खोलें
ज्ञं	अंगूठा खोलें

सर्वांङ्गे

ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं
अं अः —कंठे।
ॐ कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं —हृदये।
ॐ टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं — नाभौ।
ॐ पं फं बं भं मं — लिंगे।
ॐ यं रं लं वं शं षं — गुदे।
ॐ सं हं क्षं — भ्रुवोर्मध्ये।

ध्यान

आधारे लिंग नाभौ प्रकटित हृदये तालुमूले ललाटे।
द्वे पत्रे षोडशारे द्विदश दश दले द्वादशार्द्धे चतुष्के।
वासान्ते बालमध्ये उ-फ-क-ठ सहिते कंठ देशे स्वराणां।
हं-क्षं-तत्वार्थ युक्तं सकल दल गतं वर्ण रूपं नमामि।

बहिर्मातृका न्यास

ॐ अं नमः केशान्ते
ॐ आं नमः मुखे
ॐ इं नमः दक्षिण नेत्रे
ॐ ईं नमः वाम नेत्रे

ॐ उं नमः दक्षिण कर्णे

ॐ ऊं नमः वाम कर्णे

ॐ ऋं नमः दक्षिण नासा पुटे

ॐ ॠं नमः वाम नासा पुटे

ॐ लृं नमः दक्षिण गण्डे

ॐ लॄं नमः वाम गण्डे

ॐ एं नमः ऊर्ध्वोष्ठे

ॐ ऐं नमः अधरोष्ठे

ॐ ओं नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ

ॐ औं नमः अधोदन्तपंक्तौ

ॐ अं नमः मूर्ध्नि

ॐ अः नमः आस्ये

ॐ कं नमः दक्षिण बाहुमूले

ॐ खं नमः दक्षिण कर्पूरे

ॐ गं नमः दक्षिण मणिबन्धे

ॐ घं नमः दक्षिण करांगुलिमूले

ॐ ङं नमः दक्षिण कराङ्गुल्यग्रे

ॐ चं नमः वाम बाहुमूले

ॐ छं नमः वाम कर्पूरे

ॐ जं नमः वाम मणिबन्धे

ॐ झं नमः वाम करांगुलिमूले

ॐ ञं नमः वाम कराङ्गुल्यग्रे

ॐ टं नमः दक्षिण पाद मूले

ॐ ठं नमः दक्षिण जानुनि

ॐ डं नमः दक्षिण गुल्फे

ॐ ढं नमः दक्षिण पादाङ्गुलि मूले

ॐ णं नमः दक्षिण पादाङ्गुल्यग्रे

ॐ तं नमः वाम पाद मूले

ॐ थं नमः वाम जानुनि

ॐ दं नमः वाम गुल्फे

ॐ धं नमः वाम पादाङ्गुलि मूले

ॐ नं नमः वाम पादाङ्ल्यग्रे

ॐ पं नमः दक्षिण कुक्षौ

ॐ फं नमः वाम कुक्षौ

ॐ बं नमः पृष्ठे

ॐ भं नमः नाभौ

ॐ मं नमः उदरे

ॐ यं त्वगात्मने नमः हृदि

ॐ रं असृगात्मने नमः दक्षिणांसे

ॐ लं मांसात्मने नमः ककुदि

ॐ वं मेदात्मने नमः वामांसे

ॐ शं अस्थ्यात्मने नमः हृदयादि वामहस्ताग्रांतम्

ॐ षं मज्जात्मने नमः दक्षिण पादाग्रान्तम्

ॐ सं शुक्रात्मने नमः हृदयादि पादान्तम्

ॐ हं आत्मशक्त्यात्मने नमः हृदयादि जठरे
ॐ क्षं जीवात्मने नमः नाभ्यादि हृदयान्तम्
ॐ त्रं परमात्मने नमः हृदयादि मस्तकान्तम्
ॐ ज्ञं छन्दपुरुषाय नमः शिरसि

अनेन यथाशक्त्या कृतेन भूशुद्धि, भूत शुद्धि, प्राण प्रतिष्ठान्तर्मातृका बहिर्मातृका न्यासाख्य कर्मणा पंचांगुली देवी प्रीयतां न ममः।।

इसके पश्चात् यंत्र के मध्य में स्थित बिन्दु पर महामंत्र '**काल ज्ञान मंत्र**' को पढ़ते हुए एक सौ आठ पुष्प चढ़ावें।

काल ज्ञान मंत्र

ॐ नमो भगवते ब्रह्मानन्दपदः गोलोकादि असंख्य ब्रह्माण्ड भुवन नाथाय शशांक शंख गोक्षीर कर्पूर धवल गात्राय, नीलांभोधि जलद पटलाधिव्यक्तस्वरूपाय व्याधिकर्म निर्मूलोच्छेदन कराय, जाति जरामरण विनाशाय, संसारकान्तारोन्मूलनाय, अचिन्त्य बल पराक्रमाय, अति प्रतिमाह चक्राय, त्रैलोक्याधीश्वराय, शब्दैके त्रैलोक्याधिनरिंवल भुवन कारकाय, सर्वसत्व हिताय, निज भक्ताय, अभीष्ट फल प्रदाय, भक्त्याधीनाय सुरासुरेन्द्रादि मुकुटकोटि धृष्टपाद पीठाय, अनन्त युग नाथाय, देवाधिदेवाय, धर्मचक्राधीश्वराय, सर्व विद्या परमेश्वराय, कुविद्याविघ्न प्रदाय।

तत्पादपंकजाश्रयानि यवनी देवी सासन देवते त्रिभुवन संक्षोभनी, त्रैलोक्य शिवापहारकारिणी श्री अद्भुत जातवेदा श्री महालक्ष्मी देवी (अमुकस्य) स्थावर जंगम कृत्रिम विषमुख संहारिणी सर्वाभिचार कर्मापहारिणी परविद्याछेदनी परमंत्र प्रनाशिनी अष्ट महानाग कुलोच्चाटनी कालदंष्ट्र मृत कोत्यापिनी (अमुकस्य) सर्वरोग प्रमोचनी, ब्रह्माविष्णुरुद्रेन्द्र चन्द्रादित्यादिग्रह नक्षत्रोत्पात मरण भय पीड़ा मर्दिनी त्रैलोक्य विश्वलोक वशंकरि, भुविलोक हितंकरि महाभैरवि भैरव शस्त्रोपधारिणि रौद्रे, रौद्ररूप धारी प्रसिद्धे, सिद्ध विद्याधर यक्ष राक्षस गरुड़ गंधर्व किन्नर किं पुरुषदैत्योरगेन्द्र पूजिते ज्वालापात कराल दिगंतराले महावृषभ वाहिनी, खेटक कृपाण त्रिशूल शक्ति चक्रपाश शरासन शिव विराजमान षोडशार्द्ध भुजे।

एहि एहि लं ज्वाला मालिनी ह्रीं ह्रीं ब्रुं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः देवान् आकर्षय आकर्षय, नाग ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, यक्ष ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, गंधर्व ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, ब्रह्म ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, राक्षस ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, भूतग्रहान् आकर्षय आकर्षय, दिव्यतर ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, चतुराशि जैन्य मार्ग ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, चतुर्विंशति जिनग्रहान् आकर्षय आकर्षय, सर्व जटिल ग्रहान् आकर्षय

आकर्षय, अखिल मुंडित ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, जंगम ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, सर्व दुर्गेशादि विद्याग्रहान् आकर्षय आकर्षय, सर्व नाग निग्रह वासी ग्रहान् आकर्षय आकर्षय।

सर्व जलाशय वासी ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, सर्व स्थल वासी ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, सर्वान्तरिक्षवासी ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, सर्व श्मशान वासी ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, सर्व पव वासी ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, सर्व धर्म शापादि गो शाप ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, सर्व गिरिगुहा दुर्गवासी ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, श्रापित ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, सर्व दुष्ट ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, सर्व नाथपंथी ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, सर्व भूवासी प्रेत ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, वक्र पिंड ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, कट कट कंपय कंपय शीर्षं चालय, शीर्षं चालय, गात्रं चालय गात्रं चालय बाहुं चालय बाहुं चालय पादं चालय पादं चालय, कर पल्लवान चालय कर पल्लवान चालय सर्वांगं चालय सर्वांगं चालय लोलय लोलय धुन धुन कंपय कंपय शीघ्रं भव तारय तारय ग्रहि ग्रहि ग्राह्य ग्राह्य अक्षय अक्षय आवेशय आवेशय।

ज्वलूं ज्वलूं ज्वालामालिनीं ह्रां क्कीं ब्लूं द्रां द्रां ज्वल ज्वल र र र र र र र प्रज्वल प्रज्वल धग

धग धूमाक्ष करणी ज्वल विशोषय विशोषय देव ग्रहान् दह दह नाग ग्रहान् दह दह यक्ष ग्रहान् दह दह गंधर्व ग्रहान् दह दह ब्रह्म ग्रहान् दह दह राक्षस ग्रहान् दह दह भूत ग्रहान् दह दह दिव्यन्तर ग्रहान् दह दह चतुराशि जैन्य मार्ग ग्रहान् दह दह चतुर्विंश जिन ग्रहान् दह दह सर्व जटिल ग्रहान् दह दह अखिल मुंडित ग्रहान् दह दह सर्व जंगम ग्रहान् दह दह सर्व दुर्गेशादि विद्या ग्रहान् दह दह सर्व नाग निग्रह वासी ग्रहान् दह दह सर्व स्थलवासी ग्रहान् दह दह सर्वान्तरिक्ष वासी ग्रहान् दह दह श्मशान वासी ग्रहान् दह दह।

सर्व पवनाहार्त ग्रहान् दह दह सर्व धर्म शापादि गोशापवासी ग्रहान् दह दह सर्व गिरिगुहा दुर्ग वासी ग्रहान् दह दह श्रापित ग्रहान् दह दह सर्व नाथ पंथी ग्रहान् दह दह सर्व भूवासी प्रेत ग्रहान् दह दह (अमुक गृहे) असद्गति ग्रहान् दह दह वक्रपिण्ड ग्रहान् दह दह सर्वदुष्ट ग्रहान् दह दह शतकोटि योजने दोषदायी ग्रहान् दह दह सहस्त्रकोटि योजने दोषदायी ग्रहान् दह दह आसमुद्रात् पृथ्वी मध्ये देवभूत पिशाचादि (अमुकस्य) परिकृत दोषान् तस्य दोषान् दह दह शत्रुकृताभिचार दोषान् दह दह घे घे स्फोटय स्फोटय मारय मारय धगि धगि धागत मुखे ज्वालामालिनी ह्रां ह्रीं ह्रं ह्रैं ह्रौं ह्रः सर्व ग्रहाणां हृदये दह दह पच पच छिन्दी छिन्दी

भिन्दी भिन्दी दह दह हा हा स्फुट स्फुट घे घे।

क्ष्म्लुं क्षां क्षीं क्षुं क्षें क्षौं क्षः स्तंभय स्तंभय। भ्म्लुं भ्रां भ्रीं भ्रुं भ्रें भ्रौं भ्रः बाडय बाडय। म्म्लुं म्रां म्रीं मुं म्रें म्रौं म्रः नैत्रं स्फोटय स्फोटय दर्शय दर्शय। यम्लुं यां यीं युं यें यौं यः प्रेषय प्रेषय। घ्म्लुं घ्रां घ्रीं घ्रुं घ्रें घ्रौं घ्रः जठरं भेदय भेदय। ग्म्लु ग्रां ग्रीं ग्रुं ग्रें ग्रौं ग्रः मुखं बंधय बंधय। ख्म्रुं खां खीं खुं खें खौं खः ग्रीवां भंजय भंजय। छप्लुं छ्रां छ्रीं छ्रूं छ्रें छ्रौं छ्रः अस्त्रान् भेदय भेदय। ढप्लुं ढ्रां ढ्रीं ढ्रूं ढ्रें ढ्रौं ढ्रः महाविद्युत्पाषाणा स्त्रैहन स्त्रैहन। व्म्रुं व्रां व्रीं व्रुं व्रें व्रौं व्रः समुद्रे मज्जय मज्जय। द्म्रुं द्रां द्रीं द्रुं द्रें द्रौं द्रः सर्व डाकिनी सुन्दरीं मर्दय मर्दय सर्व योगिनीं सर्वज्जय सवर्ज्जय।

सर्व शत्रूं ग्रासय ग्रासय ख ख ख ख ख ख ख खादय खादय सर्व दैत्यान् विध्वंसय विध्वंसय सर्व मृत्युं नाशय नाशय सर्वोपद्रवान् स्तंभय स्तंभय जः जः जः जः जः जः जः ज्वरान् दह दह पच पच घुमु घुमु घुरु घुरु खरु खरु खंग रावण सुविद्यायां घातय घातय अखिल रुजान् दोषोदयान् कृत कार्येणाभिचारोत्थान (अमुकस्य) देहे स्थितान् अधुना रुजकारकान् चन्द्रहास शस्त्रेण छेदय छेदय भेदय भेदय उरू उरू छरु छरु स्फुट स्फुट घे घे आं क्रौं क्षीं क्षं क्षें क्षौं क्षः ज्वालामालिनी (अमुकस्य) सौख्यं कुरु कुरु

निरुजं कुरु कुरु अभिलषित कामनां देहि देहि
ज्वाला मालिनीं विज्ञापयते स्वाहा।

(नोट– यह काल ज्ञान मंत्र वराहमिहिर द्वारा रचित है)

यंत्र को यथास्थान रखकर इसके बाद कलशपूजा करें।

कलशपूजा

जमीन पर कुंकुम से स्वस्तिक बनाकर उस पर कलश रखें। फिर उसमें धान्य[1] डालें। उस पर नारियल रखकर रक्त वस्त्र वेष्टित करें, फिर कलश में जल (पंचनद्य)[2] डालें। गन्ध प्रक्षेप कर सर्वौषधि[3] डालें। पंचपल्लव[4] रखें। सप्तमृत्तिका[5] डालें। पूंगीफल तथा पंचरत्न[6] प्रक्षेप करें। फिर दक्षिणा डालें, कुश पवित्र[7] प्रक्षेप करें, उस पर चावलों से भरकर पूर्ण पात्र रखें। फिर ध्यान करें–

वरुणः पाशभृत्सौम्यः प्रतीच्यां मकराश्रयः।
पाश हस्तात्मको देवो जलराश्यधिपो महान्।।

हाथ में अक्षत लेकर कलश पर न्यौछावर करें–

ॐ ऋग्वेदाय नमः

ॐ यजुर्वेदाय नमः।

ॐ सामवेदाय नमः

ॐ अथर्ववेदाय नमः

ॐ कलशाय नमः

ॐ रुद्राय नमः

ॐ समुद्राय नमः

ॐ गंगायै नमः

ॐ यमुनायै नमः

ॐ सरस्वत्यै नमः
ॐ कलशकुंभाय नमः

फिर कलश को स्पर्श करके बोलें–

कलशस्य मुखे विष्णुः कंठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणा स्मृतः।
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्त द्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वणः।
अंगैश्च संहिताः सर्वे कलशन्तु समाश्रिताः।
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।
आयान्तु यजमानस्य दुरितक्षय कारकाः।

कलश प्रार्थना

देव दानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदाकुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयं।
त्वत्तोये सर्व तीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वे देवाः सपैतृका।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः काम फलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिदं कर्म कर्तुमीहे जलोद्भव।
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।

पुण्याह वाचन[1]

कलश पूजा के पश्चात् पुण्याह वाचन करना चाहिए।

श्री गणेशाय नमः।

अथ दानखंडोक्त पुण्याहवाचन प्रयोगः।

**संपूज्य गन्ध माल्याद्यैर्ब्राह्मणान्स्वस्ति वाचयेत्।
धर्मकर्मणि मांगल्ये संग्रामेऽद्भूतदर्शने।।**

**पुण्याहवाचनं दैवं ब्राह्मणस्य विधीयते।
एतदेव निरोंकारं कुर्यात्क्षत्रियवैश्ययोः।।**

अवनिकृतजानुमंडलाः कमलमुकुलसदृशमंजलिं शिरस्याधाय दक्षिणेन पाणिना स्वर्ण कलशं धारयित्वा दीर्घाना गानद्योगिरयस्त्रीणिविष्णुपदानि च तेनायुः प्रमाणेन पुण्याहंदीर्घमायुरस्तु।।

**अपांमध्येस्थिता देवाः सर्वमप्सुप्रतिष्ठितम्।
ब्राह्मणानां करे न्यस्ताः शिवाआपोभवन्तु ताः।।**

शिवा आपः सन्तु।

**लक्ष्मीर्वसतिपुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्करे।
सा मे वसतु वै नित्यं सौमनस्य तथास्तु नः।।**

सौमनस्यमस्तु।

**अक्षतंचास्तुमे पुण्यं दीर्घमायुर्यशोबलम्।
यद्यच्छ्रेयस्करं लोके तत्तदस्तु सदा मम।।**

अक्षतं चारिष्टं चास्तु।

ब्राह्मणानां हस्ते गन्धादि दत्त्वा।

गंधं प्रदयोदेवानामपत्यपुष्टिदश्च यत्।
गंधद्वारांदुराधर्षामितिमंत्रेण भक्तितः।।

गंधा पांतु सौमंगल्यंचास्तु।।

पुष्पाणि पान्तुसौ श्रीयमस्तु।।

अक्षताः पांतु आयुष्यमस्तु।

तांबूलानि पांतु ऐश्वर्यमस्तु।

दक्षिणाः पांतु आरोग्यमस्तुदीर्घमायुः श्रेयः
शांतिः पुष्टि स्तुष्टिश्चास्तु।

श्रीर्यशोविद्याविनयो वित्तंबहुपुत्रं
चारोग्यं चायुष्यं चास्तु।।

यं कृत्वा सर्ववेदयज्ञ क्रियाकरणकर्म्मारम्भाः
शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहोंकारमादिकृत्वा
ऋग्यजुः सामाथर्वाशीर्वचनं बह्वर्षिसंमतमनुज्ञातं
भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।
वाच्यताम् ॥ ऋक् ॥

द्रविणोदाद्रविणसस्तुस्यद्रविणोदाः सनरस्यप्रियंसत्।
द्रविणादा वीरवतीमिषन्नो द्रविणोदारा सते
दीर्घमायुः।। 1 यजुः।।

द्रविणोदाः पिपीषतिजुहोतप्रचतिष्ठत।
नेष्टादृतुभिरिष्यत।। ऋक् ।।

सवितापश्चात्तात्सविता पुरस्त्तात्स

वितोत्तरात्तात्सविताधरात्तात्।
सविता नः सुवतुसर्वतातिसविता नोरासतांदीर्घमायुः।। यजुः।।

सवितात्वा प्रसवानाꣳसुवता मग्निर्गृह पतीनाꣳसोमोव्वनस्पती नाम्।।
बृहस्पस्पतिर्व्वाचऽइंद्रोज्यैष्ठ्यायरुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्योव्वरुणोधर्मपतीनाम्।। ऋक् ।।

ॐ नवोनवोभवति जायमानोऽह्नांके तुरुषसामे त्वग्रम।। भागं देवेभ्यो विदधात्यायन् प्रचंद्रमास्तिरतेदीर्घमायुः।। यजुः।।

ॐ नत द्रक्षा ꣳ सिनपिशाचास्तरंति देवानामोजः प्रथमजर्ठह्येतत्।। योबिभर्तिदाक्षायण ꣳ हिरण्य ꣳ सदेवेषुकृणुतेदीर्घमायुः समनुष्येषुकृणुते दीर्घमायुः।। ऋक् ।।
ॐ उच्चादिविदक्षिणावन्तो अस्थुर्येअश्वदाः सहते सूर्येण।। हिरण्यदा अमृतत्वंभजन्तेवासोदाः सोमप्रतिरन्तऽआयुः।। 1 यजुः।।

उच्चातेजातमन्ध सोदि विसद्भूम्याददे।। उग्रꣳशर्म्ममहिश्रवः।। इत्येताऋच ꣳ पुण्याहे ब्रूयात्।। व्रतनियमतपः स्वाध्यायक्रतुदया दमदानविशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्। समाहित मनसः स्मः। प्रसीदन्तु भवन्तः। प्रसन्ना स्मः अथ पूर्वस्थापितकलश

ताम्रपात्रे जलमादाय यजमानमूर्धनि दूर्वया सेचनं कुर्यात्।। शांतिरस्तु पुष्टिरस्तु तुष्टिरस्तु वृद्धिरस्तु ऋद्धिरस्तु अविघ्नमस्तु आयुष्यमस्तु आरोग्यमस्तु शिवमस्तु शिवं कर्म्मास्तु कर्म्म समृद्धिरस्तु धर्मसमृद्धिरस्तु वेदसमृद्धिरस्तु शास्त्रसमृद्धिरस्तु पुत्रपौत्रसमृद्धिरस्तु धनधान्यसमृद्धिरस्तु इष्टसंपदस्तु अनिष्ट निरसनमस्तु।। . . . . . . भूमी।।

यत्पापंरोगमशुभमकल्याणंतद्दूरेप्रतिहतमस्तु।। पात्रे।। यद्यस्छ्रेयस्तत्तदस्तु उत्तरेकर्मणिनिर्विघ्नमस्तु उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः संपद्यतां तिथिकरण-मुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नसंपदस्तु तिथि करणमुहूर्तनक्षत्र ग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयंताम्।। तिथिकरणेसमुहूर्ते सनक्षत्रेसग्रहेसलग्ने सदैवते प्रीयेताम् दुर्गापांचाल्यौ प्रीयेताम्।। अग्निपुरोगाविश्वेदेवाः प्रीयंताम् इंद्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयंताम् वसिष्ठपुरोगाः ऋषिगणाः प्रीयंताम् माहेश्वरीपुरोगा उमामातरः प्रीयंताम्।।

अरुन्धतीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम् विष्णुपुरोगाः सर्वेदेवाः प्रीयंताम् ब्रह्मपुरोगाः सर्वेवेदाः प्रीयंताम् आदित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयंताम् ब्रह्मचब्राह्मणाश्चप्रीयंताम् अंबिका सरस्वत्यौ प्रीयेताम् श्रद्धामेधे प्रीयेताम् भगवती कात्यायनीप्रीयंताम् भगवती माहेश्वरी प्रीयंताम्

भगवती ऋद्धिकरी प्रीयंताम् भगवती वृद्धिकरी प्रीयंताम् भगवती ऋद्धिकरी प्रीयंताम् भगवती पुष्टिकरी प्रीयंताम् भगवती तुष्टिकरी प्रीयंताम् भगवतौ विघ्न विनायकौ प्रीयंताम् सर्वाः कुलदेवताः प्रीयंताम् सर्वा ग्रामदेवताः प्रीयंताम् सर्वाइष्टदेवताः प्रीयंताम्। . . . . . . भूमौ।

हताश्चब्रह्मद्विषः हताश्चपरिपंथिनः।। हताश्चविघ्नकर्तारः शत्रवः पराभवं यांन्तु शाम्यं तुघोराणि शाम्यंतुपापानि शाम्यंत्वीतयः। पात्रे। शुभानिवर्धताशिवा आपः सन्तु शिवाऋतवः सन्तु शिवाअग्नयः सन्तु शिवाआहुतयः सन्तु शिवाओषधयः सन्तु शिवावनस्पतयः सन्तु शिवाअतिथयः सन्तु अहोरात्रे शिवेस्याताम्।। ऋक् ।।

शन्नःकनिक्रदद्देवः पर्जन्यो अभिवर्षतु। शन्नोद्यावापृथिवी शंप्रजाभ्यः शन्नऐधि द्विपदे शंचतुष्पदे।। ॐ नि कामेनिकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यंतां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।2।। पूर्णपात्रे जलं क्षिपेत्।

शुक्रांगारकबुधबृहस्पति शनैश्चरराहुकेतु सोमसहिता आदित्यपुरोगाः सर्वेग्रहाः प्रीयंताम्। भगन्नारायणः प्रीयंताम् भगवान्स्वामी महासेनः प्रीयंताम्। पुरोनुवाक्यया यत्पुण्यंतदस्तु याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु वषट्कारेणयत्पुण्यं तदस्तु प्रातः सूर्योदये

यत्पुण्यं तदस्तु एतत्कल्याणयुक्तं पुण्यमस्तु
पुण्याह कालान्वाचयिष्ये, वाच्यताम्।।

ब्राह्मपुण्यमहर्यच्चसृष्टयुत्पादनकारकम्।
वेदवृक्षोद्भवंनित्यं तत्पुण्याहंब्रुवन्तु नः।।
भो! ब्राह्मणाः मम सकुटुंबस्य सपरिवारस्य
गृहेपुण्याहंभवंतो ब्रुवंतु।। 3।।

ॐ पुण्याहं 3 ।। ऋक् ।।

ॐ उग्दातेवशकुनेसा मगायसि ब्रह्मपुत्रइव
सवनेषुशंससि।। वृषेववा जी शिशुमतीरपीत्या
सर्वतोनः शकुनेभद्रमा वदविश्वतोनः
शकुनेपुण्यमावद।। यजुः।।

ॐ पुनंतुमादेवजनाः पुनंतुमनसाधियः।
पुनंतुविश्वाभूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।
पृथिव्या मुद्धतायां तुयत्कल्याणंपुराकृतम्।
ऋषिभिः सिद्धगंधवैस्तत्कल्याणंब्रुवंतुनः।।
भो ब्राह्मणाः ममसकुटुंबस्यसपरिवारस्य
गृहे कल्याणंभवंतोब्रुवंतु ।। 3।।

ॐ कल्याणम्।। ऋक्।।

ॐ अपासोपमस्तेमिन्द्रप्रयाहि कल्याणी
र्जायासुरणंगृहेते।। यत्रारथस्यबृहतोनिधानं
विमोचनंवाजिनोदक्षिणावत्।। यजुः।।

ॐ यथे मां वाचंकल्याणी मावदानिजनेभ्यः।।

ब्रह्म राजन्याभ्या ॐ शूद्रायचार्य्याय च स्वायचारणायच।। प्रियोदेवानांदक्षिणायै दातुरिहभूयासमयम्मेकामः समृद्धयतामुपमादोनमतु।।

सागरस्यतु यात्रृद्धिंमहालक्ष्म्यादिभिः कृता।
संपूर्णासुप्रभावांचतांतामृद्धिभोब्रुवंतुनः।।

भो ब्राह्मणाः ममसकुटुंबस्य सपरिवारस्यगृहेऋद्धिंभवंतोब्रुवंतु।। 3।।

ॐ ऋद्धयताम्।। ऋक्।।

ॐ ऋद्धयामस्तोमंसनुयामवाजमानोमंत्रं स रथेहोपयातम्।। यशोनपक्वं मधुगोष्वंतरा भूतांशोअश्विनोः काममप्राः।। 1 यजुः।।

ॐ सत्रस्यऽऋद्धिरस्यगन्मज्योतिरमृताऽअभूम। दिवं अद्वयारुहामाविदामदेवान्त्स्व ज्योंतिः।।

स्वस्तिस्तुयाऽविनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा।
विनायकप्रियानित्यंतांतां स्वस्तिब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः ममसकुटुंबस्य सपरिवारस्यगृहेस्वस्ति भवन्तोब्रुवंतु।। 3।।

ॐ स्वस्ति।। 3 ऋक् ।।

ॐ स्वस्तिऋद्धिप्रपथे श्रेष्ठा रेक्णस्वस्त्यभिया-वाममेति।। सानो अमासोअरणेनिपातुस्वावेशा भवतु देवगोपाः।। यजुः।।

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः

पूषाव्विश्ववेदाः।। स्वस्ति नस्ताक्ष्यों ऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु।।

मृकंडसूनोरायुर्यद्धुवलोमशायोस्तथा। आयुषातेनसंयुक्ताजीवेमशरदः शतम्।। जीवंतुभवंतः।। ऋक् ।।

ॐ शतंजीवशरदोवर्द्धमानः शतंहेमं ताञ्छतमुवसंतान्। शतमिंद्राग्नीसविताबृहस्पतिः शतायुषाहविषेमंपुनर्दुः।। यजुः।।

ॐ शतमिन्नुशरदोऽअंतिदेवायत्रानश्चक्रा जर संत नूनाम्।
पुत्रा सोयत्र पितरो भवन्ति मानो मध्यारीरिषतायुर्गतोः।। 2।।

'शिवगौरीविवाहे' या 'श्रीराम नृपात्मजे धनदस्य गृहे' या 'श्री रस्त्वकं धनदात्मजे' ।।

भो ब्राह्मणाः मम सकुटुंबस्य सपरिवारस्यगृहे श्रीरस्त्वितिभवंतो ब्रुवंतु।।

ॐ अस्तु श्रीः।। ऋक् ।।

ॐ श्रियेजातः श्रियआनिरीयायश्रियंव योजरितृभ्यो दधाति।। श्रीयंवसानाऽअमृतत्व मायन्भवंति सत्यासमिथामितद्रौ।। यजुः।।

ॐ मनसः काममाकूतिंवाचः सत्यमशीमहि।। पशुनार्ठरूपमन्नस्यरसोयशः श्रीः श्रयताम्मयि स्वाहा।।

प्रजापतिर्लोंक पालो धाताब्रह्मासदेवराट्
भगवाञ्छाश्वतो नित्यंसनोरक्षतुसर्वतः ।।
भगवान्प्रजापतिः प्रीयंताम् ।। ऋक् ।।
ॐ प्रजापतेनत्वदेतान्यन्योविश्वारूपाणि
परिताबभूव।। यत्कामास्ते जुहूमस्तन्नोऽस्त्वयममुष्य
पितसाव स्य पितावयंस्यामपतयो रयीणां ध्व स्वाहा।।
आयुष्मतेस्वस्तिमते यजमानायदाशुषे ।।
कृताः सर्वाशिषःसंतुऋत्विग्भिर्वेदपारगैः ।।
देवेन्द्रस्य यथास्वस्तितथास्वस्तिगुरोर्गृहे ।।
एकलिंगे यथास्वस्तितथास्वस्तिसदामम ।।
ॐ आयुष्मते स्वस्ति ।।ऋक् ।।
ॐ स्वस्तये वायुमुपब्रवामहे सोमस्वस्ति
भुवनस्ययस्पतिः ।। बृहस्पतिसर्वगणंस्वस्तये
स्वस्तयआदित्यासोभवंतुनः ।। यजुः ।।
ॐ प्रतिपन्थामपद्महिस्पति गामनेहसम् ।।
येनविश्वाः परिद्विषोवृणक्तिविन्दतेवसु ।। ऋक् ।।
ॐ महो अग्नेसमिधानस्यशर्म्मण्यनागा मित्रे वरुणे
स्वस्तये । श्रेष्ठे स्यामसवितुः
सवीमनितद्देवानामवोअद्यावृणीमहे।। यजुः ।।
ॐ विश्वानिदेवसवितर्दुरितानिपरासुव ।
यद्भद्रंतन्नऽआसुव ।।
मंत्रार्थाः सफलाः सन्तुपूर्णाः मनोरथाः ।

शत्रूणांबुद्धिनाशोस्तुमित्राणामुदयोऽस्तवः।।
ऋग्वेदोऽयजुर्वेदः सामवेदोह्यथर्वणः
ब्रह्मवक्रेस्थितानित्यं निर्विघ्नं तव शत्रुवान्।।
अक्षतान्वि प्रहस्तात्तु नित्यंगृह्णन्ति ये नराः।
चत्वारितेषां वर्धन्ते आयुःकीर्तिर्यशोबलम्।।
श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यम्।। धनवान्पुत्र वान्लक्ष्मीवान्भव।।
इति दान खंडोक्तं पुण्याहवाचनं संपूर्णम्।।

पुण्याह वाचने : विप्रा

न तत्र कुनखी काणो हीनाङ्गोऽविकलस्तथा।
बन्धाश्च विधुरो वापि क्रूरस्तु खलसेवकः।
बक वृत्तिश्च दंभी च हेतुको ज्ञान दुर्बलः।
एते चान्ये च विप्राः स्युर्न वाच्या स्वस्तिवाचने।।

पुण्याह वाचन के बाद कलश में से जल लेकर यजमान अपने शरीर पर छिड़कें या ब्राह्मण यजमान का अभिषेक करें।

ततः ऽ विधुराश्चत्वारो[1] ब्राह्मणः[2] कर्तुर्वामतः पत्नीः[3] (पुत्रादि सहिता) मुपवेश्य।

मंत्र

आपोहिष्ठात्यादि।
द्यौ शान्ति0
ॐ अमृताभिषेकोऽस्तु शांति शांति सुशान्तिर्भवतु।

संकल्प

ॐ अद्य कृतैतत्पुण्याह वाचन कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण फल प्राप्त्यर्थं च पुण्याह वाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथा शक्ति मनसोद्दिष्टां दक्षिणां विभज्य दातु मवभत्सृजे।

हवन विधि

यंत्र पूजन की समाप्ति के बाद हवन करें। सुयोग्य विद्वानों द्वारा वेदी बनवावें। यदि हवन न कर सकें, तो बयालीस (42) हजार जप कर लें।

यों साधक की जानकारी के लिए बता दूं, कि यंत्र पूजन के बाद पंचांगुली मंत्र साधना करें। इक्कीस हजार जप करने से मंत्र सिद्ध होता है। सवा लक्ष जपने पर भविष्य सिद्धि होती है। अतः सवा लक्ष मंत्र जप करना चाहिए।

इसके बाद शुभ दिन, शुभ मुहूर्त में यज्ञ प्रारम्भ करना चाहिए। यदि यज्ञ करने की सामर्थ्य न हो, तो बयालीस हजार पंचांगुली मंत्र जप अतिरिक्त कर लेना चाहिए।[1] ब्राह्मण से इतर वर्ण का कोई साधक हो, तो उसको तिरसठ (63) हजार जप करना चाहिए।

हवन कर्म में वेदी बनाकर उसे लीप लेना चाहिए।[2] फिर अनामिका एवं अंगुष्ठ से तीन बार वेदी मृत्तिका लेकर माया बीज[3] उच्चारित करते हुए बाहर फेंके। उसके बाद शुभ समय तथा अग्निवास का विचार कर स्थंडल पर अग्नि स्थापना करनी चाहिए।[4]

फिर 'हुं फट्' मंत्र से थोड़ी सी अग्नि बाहर निकाल कर 'क्रव्यमादाय स्वाहा' कहते हुए उसे नैऋत्य दिशा में वेदी के नीचे रख दें। तत्पश्चात् वेदी पर अग्नि का नाम लेकर[5] उसे स्थापित करें। अग्नि चूल्हे में से नहीं लानी चाहिए, अपितु एक तरफ उसे प्रज्वलित कर लानी चाहिए—

न चुल्लयामायसे पात्रे न भूमौ न च खर्परे।
वैश्वदेवं प्रकुर्वीत कुण्डेवा स्थण्डिलेऽपि वा।।

अग्निजिह्वा

कराली घूमिनी श्वेता लोहिता नील लोहिता।
सुवर्ण पद्‌मरागा च सप्त जिह्वा विभावसोः।।

अग्नि शक्ति नामानि

पीता श्वेताऽरुणा कृष्णा धूम्रा तीक्ष्णा स्फुलिंगिनी।
ज्वलिनी ज्वालिनी चेति कृशानोर्नव शक्तयः।।

तत्पश्चात् अग्नि प्रज्वलित कर उसे सम्मुख करें।[1] शिखाबन्धन करें।[2] तत्पश्चात् यज्ञ प्रारम्भ करें। अग्नि पूजा करें[3] एवं होमद्रव्य सामने रखें।[4] अग्नि को मुंह से प्रज्वलित न करें।[5] इसके बाद कुंकुम से अग्नि पूजा कर उसके रूप का ध्यान करें–

अग्निध्यान

रुद्रतेजः समुद्‌भूतं द्विमूर्द्धानं द्विनाशिकम्।
षण्णेत्रं च चतुःश्रोत्रं त्रिपादं सप्तहस्तकम्।।
याम्यभागे चतुर्हस्तं सव्ये भागे त्रिहस्तकम्।
स्त्रुवं स्त्रुचं च शक्तिं च अक्षमालां च दक्षिणे।।
तोमरं व्यजनं चैव घृत पात्रं तु वामके।
बिभ्रतं सप्तभिर्हस्तैर्द्विमुखं सप्त जिह्वकम्।
दक्षिणे तु चतुर्जिह्वं त्रिजिह्वमुत्तरे मुखे।
द्वादशकोटि मूर्त्याख्यं द्विपञ्चाशत्कलायुतम्।

स्वाहा स्वधा वषट्कारै रंकितं मेष वाहनम्।
रक्त माल्याम्बरधरं रक्तपद्मासने स्थितम्।
रौद्रं तु वह्नि नामानि वह्निमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने वैश्वानर शाण्डिल्यगोत्र
शाण्डिलासित देवलेति त्रिप्रसन्वित भूमि मातः
वरूणपितः मेषध्वजः प्राङ्मुख मम सम्मुखो भव।

अग्नि वेदी के दक्षिण में ब्रह्मासन स्थापित करें।[1] तत्पश्चात् यज्ञ प्रारम्भ करें—

ॐ अग्नये स्वाहा।
ॐ सोमाय स्वाहा।
ॐ अग्निसोमाभ्यां स्वाहा।

फिर घृताहुति से व्याहृति होम करें—

ॐ भूः स्वाहा।
ॐ भुवः स्वाहा।
ॐ स्वः स्वाहा।
ॐ ब्रह्मणे स्वाहा
इदं ब्रह्मणे न मम।
ॐ प्रजापतये स्वाहा
इदं प्रजापतये न मम।
ॐ गृह्माभ्यः स्वाहा
इदं गृह्माभ्यो न मम।
ॐ कश्यपाय स्वाहा

इदं कश्यपाय न मम।

ॐ अनुमतये स्वाहा

इदं अनुमतये न मम।

ॐ पर्जन्याय स्वाहा

इदं पर्जन्याय न मम।

ॐ अद्भ्यः स्वाहा

इदं अद्भ्यो न मम।

ॐ पृथिव्यै स्वाहा

इदं पृथिव्यै न मम।

फिर भूत यज्ञ करें—

ॐ धात्रे स्वाहा

इदं धात्रे न मम।

ॐ विधात्रे स्वाहा

इदं विधात्रे न मम।

ॐ वायवे स्वाहा

इदं वायवे न मम।

ॐ प्राच्यै स्वाहा

इदं प्राच्यै न मम।

ॐ अवाच्यै स्वाहा

इदं अवाच्यै न मम।

ॐ प्रतीच्यै स्वाहा

इदं प्रतीच्यै न मम।

ॐ उदीच्यै स्वाहा

इदं उदीच्यै न मम।

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा

इदं ब्रह्मणे न मम।

ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा

इदं अन्तरिक्षाय न मम।

ॐ सूर्याय स्वाहा

इदं सूर्याय न मम।

ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो स्वाहा

इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यो न मम।

ॐ विश्वेभ्यो भूतेभ्यो स्वाहा

इदं विश्वेभ्यो भूतेभ्यो न मम।

ॐ उषसे स्वाहा

इदं उषसे न मम।

ॐ भूतेभ्यो स्वाहा

इदं भूतानां न मम।

फिर नवग्रह यज्ञ करें—

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय स्वाहा।

ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे स्वाहा।

ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय स्वाहा।

ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय स्वाहा।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः गुरवे स्वाहा।

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय स्वाहा।
ॐ खां खीं खौं सः शनये स्वाहा।
ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे स्वाहा।
ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः केतवे स्वाहा।

फिर अधिदेवता होम करें—

ॐ श्रीं लक्ष्म्यै स्वाहा।
ॐ स्कं स्कन्दाय स्वाहा।
ॐ विं विष्णवे स्वाहा।
ॐ ब्रं ब्रह्मणे स्वाहा।
ॐ इं इन्द्राय स्वाहा।
ॐ यं यमाय स्वाहा।
ॐ क्षं कालाय स्वाहा।
ॐ वं चित्रगुप्ताय स्वाहा।

फिर प्रत्याधिदेवता आहुति दें—

ॐ अग्नये स्वाहा।
ॐ अदभ्यः स्वाहा।
ॐ पृथिव्यै स्वाहा।
ॐ विष्णवे स्वाहा।
ॐ इन्द्राय स्वाहा।
ॐ इन्द्राण्यै स्वाहा।
ॐ प्रजापतये स्वाहा।
ॐ सर्पेभ्यः स्वाहा।
ॐ ब्रह्मणे स्वाहा।

फिर पंचलोकपाल आहुति दें—

ॐ गं गणेशाय स्वाहा।

ॐ ह्रीं अम्बिकायै स्वाहा।

ॐ वं वायवे स्वाहा।

ॐ क्षं आकाशाय स्वाहा।

ॐ बं अश्विभ्यां स्वाहा।

फिर दस दिक्पाल आहुति दें—

ॐ इन्द्राय स्वाहा
इदमिन्द्राय।

ॐ अग्नये स्वाहा
इदमग्नये।

ॐ यमाय स्वाहा
इदं यमाय।

ॐ निऋत्यै स्वाहा
इदं निऋत्यै।

ॐ वरुणाय स्वाहा
इदं वरुणाय।

ॐ वायवे स्वाहा
इदं वायवे।

ॐ कुबेराय स्वाहा
इदं कुबेराय।

ॐ ईशानाय स्वाहा

इदमीशानाय।

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा

इदं ब्रह्मणे।

ॐ अनन्ताय स्वाहा

इदमनन्ताय।

फिर देव होम करें—

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा।

ॐ विष्णवे स्वाहा।

ॐ शंकराय स्वाहा।

ॐ गणपतये स्वाहा।

ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा।

ॐ सरस्वत्यै स्वाहा।

ॐ दुर्गायै स्वाहा।

ॐ क्षेत्रपालाय स्वाहा।

ॐ भूतेभ्यः स्वाहा।

ॐ वास्तोष्पतये स्वाहा।

ॐ विश्वकर्मणे स्वाहा।

इसके बाद मुख्य आहुतियां दें।

अन्यच्च

आयुः क्षयो यवाधिक्ये यवा साम्ये धन क्षयः।
सर्वकाम समृद्ध्यर्थं तिलाधिक्यं सदैव हि।।

तिलाःस्यु षोडशप्रथा यवा द्वादश तण्डुला।
चत्वारो गोघृतं चाट प्रस्थं यागेऽयुतात्मके।।
चतुर्भागं तिलान्नं च द्विभागं चाज्यमेव च।
यवानस्तु त्रिभागं स्याद् भागमेकश्च तंडुलम्।।

प्रधानहोम

ॐ अस्याग्ने गर्भाधान संस्कारं करोमि स्वाहा।
ॐ अस्याग्ने पुंसवनं संस्कारं करोमि स्वाहा।
ॐ अस्याग्ने सीमन्तोन्नयन संस्कारं करोमि स्वाहा।
ॐ अस्याग्ने जातकर्म संस्कारं करोमि स्वाहा।
ॐ अस्याग्ने नामकर्म संस्कारं करोमि स्वाहा।
ॐ अस्याग्ने निष्क्रामण संस्कारं करोमि स्वाहा।
ॐ अस्याग्ने कर्णवेध संस्कारं करोमि स्वाहा।
ॐ अस्याग्ने अन्नप्राशन संस्कारं करोमि स्वाहा।
ॐ अस्याग्ने चौल संस्कारं करोमि स्वाहा।
ॐ अस्याग्ने उपनयन संस्कारं करोमि स्वाहा।
ॐ अस्याग्ने वेदारंभ संस्कारं करोमि स्वाहा।
ॐ अस्याग्ने महाघृत संस्कारं करोमि स्वाहा।
ॐ अस्याग्ने उपनिषद् व्रत संस्कारं करोमि स्वाहा।
ॐ अस्याग्ने व्रत विसर्ग संस्कारं करोमि स्वाहा।
ॐ अस्याग्ने केशांत गोदान संस्कारं करोमि स्वाहा।
ॐ अस्याग्ने विवाह संस्कारं करोमि स्वाहा।

फिर अग्निजिह्वा होम करें—

इसमें हर आहुति में पंचसमिधाएं[1] लेकर उनकी नोक घृत में डुबोकर स्वाहा कहने के साथ अग्नि को समर्पित करें—

ॐ ष्प्रुं हिरण्यायै अग्निजिह्वायै नमः स्वाहा,
इदं हिरण्यायै अग्निजिह्वायै न मम।

ॐ स्प्रुं गगनायै अग्निजिह्वायै नमः स्वाहा,
इदं गगनायै अग्निजिह्वायै न मम।

ॐ ष्प्रुं रक्तायै अग्निजिह्वायै नमः स्वाहा,
इदं रक्तायै अग्निजिह्वायै न मम।

ॐ व्यूं कृष्णायै अग्निजिह्वायै नमः स्वाहा,
इदं कृष्णायै अग्निजिह्वायै न मम।

ॐ ल्युं सुप्रभायै अग्निजिह्वायै नमः स्वाहा,
इदं सुप्रभायै अग्निजिह्वायै न मम।

ॐ ब्लूं बहुरूपायै अग्निजिह्वायै नमः स्वाहा,
इदं बहुरूपायै अग्निजिह्वायै न मम।

ॐ व्य्यूं अतिरिक्तायै अग्निजिह्वायै नमः स्वाहा,
इदं अतिरिक्तायै अग्निजिह्वायै न मम।

फिर घृताहुति दें—

ॐ अमृताय स्वाहा।

ॐ पितृभ्यो स्वाहा।

ॐ गन्धर्वेभ्यो स्वाहा।

ॐ यक्षेभ्यो स्वाहा।

ॐ नागेभ्यो स्वाहा।

ॐ पिशाचेभ्यो स्वाहा।

ॐ राक्षसेभ्यो स्वाहा।

फिर अग्नि अंगदेवता को आहुतियां दें—

श्रीं सहस्त्रार्चिषे स्वाहा।

श्रीं स्वस्ति पूर्णाय स्वाहा।

श्रीं उत्तिष्ठ पुरुषाय स्वाहा।

श्रीं धूम्रव्यापिने स्वाहा।

श्रीं सप्तजिह्वाय स्वाहा।

श्रीं धनुर्धराय स्वाहा।

फिर सायुध होम साकल्य से करें—

ॐ वज्रहस्ताय स्वाहा।

ॐ छागवाहनाय स्वाहा।

ॐ दंड हस्ताय स्वाहा।

ॐ खड्ग हस्ताय स्वाहा।

ॐ पाश हस्ताय स्वाहा।

ॐ ध्वज हस्ताय स्वाहा।

ॐ गदा हस्ताय स्वाहा।

ॐ त्रिशूल हस्ताय स्वाहा।

ॐ पद्म हस्ताय स्वाहा।

ॐ चक्र हस्ताय स्वाहा।

फिर देव्याहुति दें—

ॐ अग्नये जातवेदसे नमः स्वाहा।

ॐ अग्नये सप्तजिह्वायै नमः स्वाहा।

ॐ अग्नये हव्यवाहनाय नमः स्वाहा।

ॐ अग्नये अश्वोदराय नमः स्वाहा।

ॐ अग्नये वैश्वानराय नमः स्वाहा।

ॐ अग्नये कौमार तेजसे नमः स्वाहा।

ॐ अग्नये विश्व मुखाय नमः स्वाहा।

ॐ अग्नये देव मुखाय नमः स्वाहा।

ॐ अग्नये पंचांगुल्यै नमः स्वाहा।

ॐ अग्नये तर्जन्यै नमः स्वाहा।

ॐ अग्नये मध्यमायै नमः स्वाहा।

ॐ अग्नये अनामिकायै नमः स्वाहा।

ॐ अग्नये कनिष्ठिकायै नमः स्वाहा।

ॐ अग्नये अंगुष्ठायै नमः स्वाहा।

ॐ अग्नये कालज्ञानायै नमः स्वाहा।

ॐ अग्नये भवितव्यतायै नमः स्वाहा।

ॐ अग्नये सिद्ध्यै नमः स्वाहा।

ॐ अग्नये श्रियै नमः स्वाहा।

ॐ अग्नये काल्यै नमः स्वाहा।

ॐ अग्नये ज्ञानायै नमः स्वाहा।

ॐ अग्नये धीप्रदायै नमः स्वाहा।

ॐ अग्नये अन्तरिक्षायै नमः स्वाहा।

ॐ अग्नये वैराज्यै नमः स्वाहा।

ॐ अग्नये विरूपायै नमः स्वाहा।

ॐ अग्नये सरूपायै नमः स्वाहा।

ॐ अग्नये अष्टलक्ष्म्यै नमः स्वाहा।

ॐ अग्नये पंचांगुल्यै नमः स्वाहा।

ॐ त्रैलोक्य मोहिन्यै स्वाहा।

ॐ सर्वसिद्धि प्रदायै स्वाहा।

ॐ सर्वरक्षाकरायै स्वाहा।

ॐ ब्राह्मण्यै स्वाहा।

ॐ माहेश्वर्यै स्वाहा।

ॐ कौमार्यै स्वाहा।

ॐ वैष्णव्यै स्वाहा।

ॐ वाराह्यै स्वाहा।

ॐ इन्द्राण्यै स्वाहा।

ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा।

ॐ पंचांगुल्यै स्वाहा।

ॐ कामाकर्षिणी स्वाहा।

ॐ बुद्धाकर्षिणी स्वाहा।

ॐ अहंकाराकर्षिणी स्वाहा।

ॐ शब्दाकर्षिणी स्वाहा।

ॐ स्पर्शाकर्षिणी स्वाहा।

ॐ रूपाकर्षिणी स्वाहा।

ॐ रसाकर्षिणी स्वाहा।

ॐ गन्धाकर्षिणी स्वाहा।

ॐ चित्ताकर्षिणी स्वाहा।

ॐ धैर्याकर्षिणी स्वाहा।

ॐ स्मृत्याकर्षिणी स्वाहा।

ॐ नामाकर्षिणी स्वाहा।

ॐ बीजाकर्षिणी स्वाहा।

ॐ आत्माकर्षिणी स्वाहा।

ॐ अमृताकर्षिणी स्वाहा।

ॐ शरीराकर्षिणी स्वाहा।

ॐ सर्वज्ञायै स्वाहा।

ॐ सर्वशक्तिप्रदायै स्वाहा।

ॐ सर्वैश्वर्ये स्वाहा।

ॐ सर्वज्ञानमयी स्वाहा।

ॐ सर्वव्याधिनाशिनी स्वाहा।

ॐ सर्वाधारा स्वाहा।

ॐ सर्व पापहरा स्वाहा।

ॐ सर्वानन्दमयी स्वाहा।

ॐ सर्वरक्षामयी स्वाहा।

ॐ सर्वेप्सित फलप्रदामयी स्वाहा।

ॐ कामेश्वरी स्वाहा।

ॐ सर्वेश्वरी स्वाहा।

ॐ मोहिन्यै स्वाहा।

ॐ जयायै स्वाहा।

ॐ कामरूपायै स्वाहा।

ॐ विश्वमोहिन्यै स्वाहा।

ॐ ब्राह्मयै स्वाहा।

ॐ माहेश्वर्यै स्वाहा।

ॐ कौमार्यै स्वाहा।

ॐ वैष्णव्यै स्वाहा।

ॐ वाराह्यै स्वाहा।

ॐ ऐन्द्रयै स्वाहा।

ॐ चामुण्डायै स्वाहा।

ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा।

ॐ ॐ स्वाहा।

ॐ श्रीं स्वाहा।

ॐ ह्रीं स्वाहा।

ॐ क्रीं स्वाहा।

ॐ सौं स्वाहा।

ॐ हौं स्वाहा।

ॐ वं स्वाहा।

ॐ सं स्वाहा।

ॐ हं स्वाहा।

ॐ गं स्वाहा।

ॐ ज्रं स्वाहा।

ॐ भ्रां स्वाहा।

ॐ ज्रं स्वाहा।

ॐ क्रौं स्वाहा।

ॐ ठं स्वाहा।

ॐ दं स्वाहा।

ॐ अलम्बुसायै स्वाहा।

ॐ कुहू स्वाहा।

ॐ विश्वोदरी स्वाहा।

ॐ वारणा स्वाहा।

ॐ हस्तिजिह्वा स्वाहा।

ॐ यशोवती स्वाहा।

ॐ पयस्विनी स्वाहा।

ॐ गांधारी स्वाहा।

ॐ पूषा स्वाहा।

ॐ शंखिनी स्वाहा।

ॐ सरस्वती स्वाहा।

ॐ इडा स्वाहा।

ॐ पिंगला स्वाहा।

ॐ सुषुम्ना स्वाहा।

ॐ सर्वज्ञै स्वाहा।

ॐ सर्वशक्तिमयी स्वाहा।

ॐ सर्वैश्वर्यप्रदा स्वाहा।

ॐ सर्वज्ञानप्रदा स्वाहा।

ॐ करज्ञानप्रदा स्वाहा।

ॐ कालज्ञानप्रदा स्वाहा।

ॐ सर्वसिद्धिप्रदा स्वाहा।

ॐ सर्वातीतास्वाहा।

ॐ सर्वभावी स्वाहा।

ॐ सम्मोहनाय स्वाहा।

ॐ ज्ञानप्रदाय स्वाहा।

ॐ धी प्रदाय स्वाहा।

ॐ आकर्षय स्वाहा।

ॐ बीजाय स्वाहा।

ॐ धिष्ठाय स्वाहा।

ॐ विष्ठाय स्वाहा।

ॐ त्र्यष्ठाय स्वाहा।

ॐ अविष्ठाय स्वाहा।

ॐ महिष्ठाय स्वाहा।

ॐ पुरिष्ठाय स्वाहा।

ॐ हविष्ठाय स्वाहा।

ॐ श्रीष्ठाय स्वाहा।

ॐ पंचांगुल्यै स्वाहा।

इसके पश्चात् पंचांगुली मंत्र की ग्यारह आहुतियां दें। तत्पश्चात् पूर्णाहुति प्रयोग करें–

पूर्णाहुति होम[1]

दायें हाथ में जल लें–

ॐ अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य। मम मनोऽभिलिषित धर्मार्थ कामादि यथेप्सितायुरारोग्यैश्वर्य पुत्र पौत्र सुहृद बन्धु बान्धवादि प्राप्तये पंचांगुली सिद्ध्यै श्री गणपति गौर्यादि वाहितेष्ट देवता प्रीतये च स्वैर्मतैर्यव तिल तण्डुलाज्याहुतिभिः परिपूर्णता सिद्धये वसोर्द्धारा समन्वितं पूर्णाहुति होम महं करिष्ये।

फिर यजमान खड़ा हो[2] जाय तथा हाथ में वस्त्रवेष्टित नारियल ले कर निम्न मंत्रोच्चारण करें–

मंत्र

ॐ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरममृत आजात मग्निम्। कवि ७ सम्राजमतिथिञ्जनामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः।।

ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत वस्नेव विक्रीणा वहा इष मूर्ज ७ शतक्रतोः स्वाहा।

नारियल को अग्नि में समर्पित कर दें–

इदमग्नये वैश्वानराय वसु रुद्रादित्येभ्यः शतक्रतवे सप्तवते अग्नये अद्भ्यः पुरुषाय श्रियै च न मम।

फिर घृतधारा दें–

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्त्वा कामधुक्षः स्वाहा। इदं वाजादिभ्योऽग्नये विष्णवे रुद्राय सोमाय वैश्वानराय पंचांगुल्यै न मम।

फिर यज्ञ भस्म को ललाट पर लगावें एवं प्रधान कलश से यजमान को अभिषेक[1] दें। निम्न वेदोक्त मंत्र बोलें–

ॐ आपोहिष्ठा।

ॐ वरुणस्यो।

ॐ पुनन्तुमा।

ॐ पयः पृथिव्या।

ॐ देवस्त्वा।

ॐ द्यौः शान्ति।

ॐ सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्मा विष्णु महेश्वराः
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा संकर्षणो विभुः।।
प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते।।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वैनिकृतिस्तथा।
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा विभुः।
ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा।।
कीर्तिर्लक्ष्मी धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धाक्रिया मतिः।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिस्तुष्टिः कान्तिश्च मातरः।
एतास्त्वामभिषिंचन्तु देवपत्न्यः समागताः।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुध जीव सितार्कजा।
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिता।
देव दानव गन्धर्वा यक्ष राक्षस पन्नगाः।
ऋषयो मनवो गावो देव मातर एव च।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैव्याश्चाप्सरसां तथा।
अस्त्राणि सर्व शस्त्राणि राजनो वाहनानिच।
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये।
सरितः सागराः शैलास्तीर्थ्यानि जलदा नदी।
एते त्वामभिषिंचन्तु धर्म कामार्थ सिद्धये।
सर्वेषु धर्मकार्येषु पत्नी दक्षिणतः शुभाः।
अभिषेके विप्रपाद प्रक्षालने चैव वामतः।।

आदित्या वसवो रुद्रा विश्वे देवा मरुद्गणा।
अभिषिञ्चन्तु ते सर्वे धर्म कामार्थ सिद्धये।।

अमृताभिषेकोऽस्तु।

इसके पश्चात् दक्षिणा संकल्प, ब्राह्मण भोजन संकल्प, गोदान संकल्प, भूयसि दक्षिणा संकल्प, छायापात्र दान संकल्प करें।

फिर उत्तर पूजन करें एवं बन्धु-बान्धवों सहित यज्ञ प्रदक्षिणा कर साष्टांग प्रणाम[1] करें।

ब्राह्मणों से आशीर्वाद लें और देवताओं से क्षमा प्रार्थना करें—

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वरि।।
अपराध सहस्त्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि।।
मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे।

फिर देव विसर्जन करें—

यान्तु देव गणाः सर्वे स्वशक्त्या पूजिता मया।
इष्ट काम प्रसिध्यर्थं पुनरागमनाय च।।
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशनः।।

पूर्णाहुति आदि कार्य के बाद स्तोत्र का पाठ करें तथा प्रसाद बांटें।

मीनाक्षीपञ्चरत्नम् स्तोत्र

उद्यद्भानुसहस्रकोटिसदृशां केयूरहारोज्ज्वलां
विम्बोष्ठीं स्मितदन्तपङ्क्तिरुचिरां पीताम्बरालङ्कृतम्।
विष्णुब्रह्मसुरेन्द्रसेवितपदां तत्त्वस्वरूपां शिवां
मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि सनततमहं कारुझयवारांनिधिम्।।1।।

मुक्ताहारलसत्किरीटरुचिरां पूर्णेन्दुवक्त्रप्रभां
शिञ्जन्नूपुरकिङ्कणीमणिधरां पद्मप्रभाभासुराम्।
सर्वाभीष्टफलप्रदां गिरिसुतां वाणीरमासेवितां। मीनाक्षीं० ।।2।।

श्रीविद्यां शिववामभागनिलयां ह्रीङ्कारमन्त्रोज्ज्वलां
श्रीचक्राङ्कितबिन्दुमध्यवसतिं श्रीमत्सभानायिकाम्।
श्रीमत्षण्मुखविघ्नराजजननीं श्रीमज्जगन्मोहिनीं। मीनाक्षीं० ।।3।।

श्रीमत्सुन्दरनायिकां भयहरां ज्ञानप्रदां निर्मलां
श्यामाभां कमलासनार्चितपदां नारायणस्यानुजाम्।
वीणावेणुमृदङ्गवाद्यरसिकां नानाविधामम्बिकां। मीनाक्षीं० ।।4।।

नानायोगिमुनीन्द्रहृत्सुवसतिं नानार्थसिद्धिप्रदां
नानापुष्पविराजिताङ्घ्रियुगलां नारायणेनार्चिताम्।
नादब्रह्ममयीं परात्परतरां नानार्थतत्त्वात्मिकां। मीनाक्षीं० ।।5।।

(श्रीमच्छङ्कराचार्यकृतं मीनाक्षीपञ्चरत्नं सम्पूर्णम्।)

◎

पंचांगुली साधना

भारत अपने आप में विलक्षण है और ऐसा विलक्षण कि जिसकी तुलना हम किसी अन्य से कर ही नहीं सकते। यह ठीक उस बादाम की तरह है, जो ऊपर से अत्यन्त कठोर है, उसके अन्दर घुसना पूरा श्रम साध्य है, पर एक बार जो अन्दर घुस जाता है, उसे बादाम की गिरी के समान सुस्वादु पौष्टिक पदार्थ मिल जाता है।

भारत ऊपर से वैसा ही कठोर है, जैसा बादाम है। सामान्य परिश्रम से इसकी तह तक पहुंचना संभव नहीं। इसीलिए सामान्य व्यक्ति इसकी वास्तविकता को भी पहिचानने में अक्षम है, मगर गहराई में जाने पर इसी भारत में तंत्र-मंत्र-यंत्र शास्त्र का एक ऐसा अटूट खजाना मिलता है, जो अवर्णनीय है, अतुलनीय है। संसार के अन्य किसी भाग में ऐसा खजाना मिलना संभव नहीं है।

भारत मुख्यतः दो वर्गों में विभाजित है। एक वर्ग है गरीब, निरीह, सीधा-सादा, सामान्य साक्षर; और दूसरा वर्ग है अति बुद्धिवादी, जिसकी आंखों पर अंग्रेजी चश्मा— अंग्रेज सभ्यता का चश्मा— चढ़ा हुआ है और

भारत को स्वतंत्र होते हुए इतने साल हो जाने के बाद भी वे उसी वातावरण में जी रहे हैं, उसी सभ्यता में सांस ले रहे हैं, उसी नजरिये से देख रहे हैं।

अंग्रेजों ने भारत पर लगभग तीन सौ वर्षों तक शासन किया। इन तीन सौ वर्षों में उनके सामने एक ही ध्येय रहा, कि "यदि यहां शासन करना है, तो यहां की कला, विशेषता और संस्कृति के प्रति इनके मन में घृणा भर दो" और इसी नीति पर चलते हुए उन्होंने 'ढाका की मलमल' जैसे वस्त्र उत्पाद को बरबाद कर दिया। जिन कारीगरों ने संसार का आश्चर्य 'ताजमहल' बनाया था, उन कारीगरों को निकम्मा कर भारत की कला को मिटा दिया और भारत की आत्मा, भारत की धरोहर ज्योतिष शास्त्र, मंत्रशाला आदि को दकियानूसी, पोंगापंथी आदि कह कर मखौल बना दिया– और वे अतिबुद्धिवादी व्यक्ति, जो भारतीय हैं, उसी परिवेश में पलने के कारण ऐसे शास्त्र और विज्ञान को आज तक भी मखौल समझ रहे हैं।

मुझे हंसी आती है और दुःख भी तब होता है, जब दिन में वे यह कहते हैं, कि हमें ज्योतिष, मंत्र-तंत्र में विश्वास नहीं है और रात को मेरे यहां आते हैं, जन्म पत्रिका मेरे सामने रखते हैं और भविष्य के प्रति चिंतित नजर आते हैं! अस्तु!

मैं एम.ए. और डॉक्टरेट करने के बाद जबकि मैं अपने आप को पूर्ण साक्षर कह सकता था, अंग्रेजी साहित्य पढ़ने से अंग्रेजी नीति पर विचार कर सकता था। एक दिन झुंझलाहट के क्षणों में यह निर्णय लिया, कि आखिर ज्योतिष और तंत्र-मंत्रों में कुछ है भी या कोरा बकवास है? यदि ढोंग या बकवास है, तो डंका पीटकर सबके सामने खुल्लमखुल्ला यह बात कह देनी चाहिए और यदि इन सबमें कुछ सत्य है, तो वह सबके सामने रखना चाहिए।

– और उस क्षण के बाद पूरे दस कीमती वर्ष इन तंत्र, मंत्र और ज्योतिष की खोज में लगा दिये। वे दस वर्ष, जो मेरे जीवन के आधार थे . . . और इन दस वर्षों में कहां-कहां नहीं भटका, कौन-सी ऐसी जगह थी, जहां पर नहीं पहुंचा। इन दस वर्षों में मुझे पाखण्डी और ढोंगी साधु भी मिले और ऐसे उच्च महात्माओं के दर्शन भी किये, जो अद्वितीय हैं,

परम साधक हैं, सही अर्थों में तपस्वी हैं। इन वर्षों में तिब्बती लामाओं के पास भी कुछ दिन रहने और सीखने का संयोग मिला, तो अघोर पंथियों के संग भी दिन बीताने पड़े . . . जहां भी, जो भी श्रेयस्कर मुझे मिला, मैंने श्रद्धानत होकर लिया। न उन्होंने देने में कंजूसी की और न मैं लेने से हिचकिचाया।

हिमालय की कंदराओं में ऐसे साधु भी मिले, जो पृथ्वी से तीन-चार फीट ऊपर आसन लगाकर समाधि लगा रहे थे। ऐसे साधु भी, जो दिन में जितने चाहे रूप बदल सकते थे और ऐसे साधु भी, जिनके लिए संसार की कोई वस्तु दुर्लभ नहीं, तपस्या और साधना के बल पर वह दूसरे ही क्षण उनके हाथों में होती थी। मगर जैसा मैंने अभी कहा, कि हम अतिबुद्धिवादी हैं अतः हमारा प्रधान रुख तो नकारात्मक ही रहता है, पर जो बातें अपनी आंखों से देख चुका हूं, मेरे साथ मेरे सामने घटित हुई हैं, उन्हें कैसे झुठला दूं, कैसे मना कर दूं!

हां, सच्चा साधक प्रच्छन्न ही रहना चाहता है, प्रचार में विश्वास नहीं, दुनिया से उन्हें सरोकार नहीं, दिखने में वे साधारणजन . . . पर सूक्ष्मता से यदि उनके चेहरे पर देखें, तो एक अपूर्व आभा दृष्टिगोचर होगी . . . पर आज का व्यक्ति क्षणिक चमत्कार में विश्वास करता है, जबकि ये साधु-तपस्वी शाश्वत मूलों के उपासक हैं, क्षणिक चमत्कार, प्रशंसा, प्रचार आदि में लीन नहीं।

उन्हीं दिनों की घटना है। मैं गुलमर्ग में कुछ दिन के लिए ठहर गया था। गुलमर्ग से आगे खिलनमर्ग है, जहां बर्फ ही बर्फ है। सांझ होते ही लौट आना पड़ता है। गुलमर्ग से आगे और खिलनमर्ग से कुछ पहले एक चाय की छोटी-सी दुकान है। दुकान क्या एक छोटा-सा टपारा है। एक दिन मैं खिलनमर्ग नगाधिराज हिमालय के दर्शन को जा रहा था, तो उस होटल पर रुक गया। वहां किसी साधु की चर्चा चल रही थी। मुझे रस लेते देख वे ग्रामीण कश्मीरी परेशान से हुए, बोले— आप उधर मत जाना। वे साधु कभी-कभी बनते हैं, बाकी तो वे भयानक जंगली जानवर के रूप में

ही रहते हैं। कुछ लोग उधर गये भी, पर वापिस लौटे ही नहीं . . .

मुझे कौतुहल हुआ। उस समय तो कुछ बोला नहीं, वापिस गुलमर्ग लौट आया। पर मन की शांति जैसे छिन गई। आत्मा कह रही थी, मुझे वहां जाना ही है . . . एक अज्ञात डर और आशंका भी यदाकदा मस्तिष्क में कौंध जाती, पर दूसरे ही क्षण मन कह उठता– "वासांसि जीर्णानि यथा विहाय . . . ।" जब घर से निकल ही गये हो, तो फिर मृत्यु का भय कैसा? . . . और दूसरे ही दिन उन ग्रामीणों के एक दिन पहले बताये इशारे की तरफ पांव चल पड़े।

लगभग मैं तीन मील चला होऊंगा, या इससे भी कुछ कम होगा . . . एक जगह बर्फ का टीला-सा नजर आया। मैं बढ़ा, तो वहां हड्डियां ही हड्डियां इधर-उधर बिखरी पड़ी थीं . . . निश्चय ही आगे प्राणी तो है ही . . . चाहे जानवर हो अथवा महर्षि . . . संभवतः लोगों द्वारा तपस्या में विघ्न पड़ता देख हड्डियां इधर-उधर बिखेर दी हों . . . और ऐसा ही प्रचार कर दिया हो। बाद में बातचीत में यही बात सच भी निकली।

थोड़ा-सा ही आगे जाने पर बर्फ की खोह नजर आई, जिसमें झांकने पर अन्दर कोई अस्थिपंजर-सा नजर आया। "चिन्तामणि मंत्र" का स्मरण किया और बेहिचक अन्दर घुस गया . . . खोह में ही कृशकाय . . . लगभग नंगे से . . . तपस्वी समाधिस्थ थे। चेहरे पर झुर्रियां थीं, पर एक अपूर्व ओज भी था, सिर के बाल दुग्ध धवल थे . . . ऐसा लग रहा था; जैसे कोई सौ-सवा सौ वर्षों की आयु का तपस्वी बैठा हो।

मैं उनके सामने बैठ गया और निर्भीक होकर "हादी मंत्र" जपने लगा, जिससे उनकी समाधि शीघ्रातिशीघ्र खुल सके। लगभग दस-बारह मिनटों के बाद ही उन्होंने आंखें खोल दीं . . . सहज . . . निश्छल . . . सौम्य . . . देवदूत से . . . आशीर्वादात्मक रूप में बोले– 'आ गए तुम!'

'जी'– संक्षिप्त से उत्तर था।

'हादी मंत्र तुमने ही जपा था?'

मैंने स्वीकृति में गरदन हिलाई।

'पर क्यों?'

वे एकदम से लाल भभूका हो गए थे, तप्त अंगारे की तरह . . . दुर्वासा की तरह . . . ऐसा लगता था, जैसे क्रोध का कोई ज्वलन्त रूप मेरे सामने हो . . . और दूसरे ही क्षण उस कुटिया में महात्मा जी नहीं थे, शायद मेरी एक पलक झपकी, इतनी ही देर हुई थी, मेरे सामने केवल एक फुट की दूरी पर क्रोधित बब्बर शेर खड़ा था . . . लम्बे-लम्बे बाल उसकी अयाल पर झूम रहे थे, आंखों से चिनगारियां निकल रही थीं . . . मुंह से मांस की दुर्गन्ध-सी आ रही थी . . .

एक क्षण के लिए तो मैं अन्दर तक हिल उठा। इतनी नजदीक खड़ी मौत से साक्षात्कार इससे पहले मैंने नहीं किया था . . . पर दूसरे ही क्षण मेरा साहस लौट आया। "चिन्तामणि मंत्र" जपना शुरु कर दिया था . . . स्फुटात्मक रूप में बिना हिचकिचाये . . . अनवरत चिन्तामणि मंत्र जपता जा रहा था . . .

वे पांच मिनट पांच युग थे . . . शिष्य की पात्रता-अपात्रता की परीक्षा . . . एकदम से वह शेर दहाड़ा . . . कानों के पर्दे फाड़ देने वाली आवाज . . . हुंकार . . . जैसे पूरा वन प्रदेश उस हुंकार से ध्वनित हो गया हो . . . पर मेरी आत्मा दृढ़ थी . . . दृढ़ता पर अत्यन्त विनय एवं नम्रता से चिन्तामणि जप चालू था . . .

ऐसा लगने लगा . . . जैसे तूफान थम गया हो . . . उनकी क्रोधाग्नि कुछ ठण्ढी होने लगी . . . और अगले एक-दो क्षणों में ही मेरे सामने वही सौम्य मूर्ति बैठी थी मन्द-मन्द हास्य बिखेरती हुई . . . शांत . . . सरल . . . सौम्य . . . देवदूत की तरह पवित्र।

शेर का कहीं पता तक नहीं था।

मैंने जप बंद कर दिया, हाथ जोड़ दिये, बोला— बड़ी कठिन परीक्षा ली देव!

वे बोले नहीं . . . उसी प्रकार स्नेह बरसाते रहे। लगभग दस मिनट बीत गये . . . इसी प्रकार। फिर बोले–

– क्यों आया यहां?

– केवल आपके दर्शन करने . . .

– तो कर लिये . . . अब चला जा।

– लोहा पारस के सम्पर्क में आवे और सोना भी न बन सके . . . तो फिर . . .

वे हंस दिये . . . बालकों की-सी हंसी . . . सरल निश्छल, निष्कपट हंसी।

बोले– चिन्तामणि मंत्र कहां से सीखा?

मैंने पूरी घटना . . . जीवन का उद्देश्य उनके सामने रख दिया।

बोले– मुझे पता है . . . पर मैं तुझे क्या दूं? मुझे तो कुछ आता-जाता नहीं।

मैं चुप रहा।

फिर स्वतः ही कुछ समय बाद बोले– तू भूखा होगा रे! क्या खायेगा? क्या इच्छा है?

अब तक मैं सहज हो गया था, दिमाग में मेरी अतिबुद्धिवादिता कुलबुला रही थी . . . मुझसे मूर्खता हो गई . . . उनकी परीक्षा लेने के विचार से बोला– भूख तो लगी है . . . रही बात इच्छा की . . . तो आम खाये काफी समय हो गया . . . मुझे ज्ञात था, इस कुटिया में तो कुछ भी नहीं है और न वह मौसम आम का था।

वे हंस दिये। बोले– 'अच्छा! आम खायेगा' और जब वे दाहिना हाथ उठाकर नीचे लाये तो उनके हाथ में दो आम थे . . . रस से भरे . . . पके . . . ताजे तोड़े हुए . . . दोनों मेरे सामने रख दिये।

–पर देव! मैं तो तभी खाऊंगा, जब एक आप भी प्रसाद के रूप

में लें। मेरी बाल्य चंचलता मचल पड़ी।

एक आम मेरे सामने फेंक दूसरा उन्होंने उठा लिया और बालकों की तरह चूसने लगे . . . मैं भी आम्ररस पी रहा था . . . सच कहता हूं . . . उस एक आम से ही मैं इतना तृप्त हो गया था, कि उसके बाद कई बार छत्तीसों प्रकार के सुस्वादु व्यंजन खाकर भी तृप्त नहीं हुआ हूं।

फिर बोले— कोने में थोड़ी बर्फ हटा दे, नीचे जलस्रोत है, उसमें हाथ धो ले।

मैंने आज्ञा का पालन किया। फिर उनके चरणों में बैठने की स्वीकृति मिली। मंत्र-तंत्र की चर्चा चलने पर उन्होंने कई दुर्लभ मंत्र लिखाये, साधना पद्धति समझाई . . . उन्हीं में एक "शाम्ब मंत्र" और उसकी साधना थी, जिसके लिए मैं तीन साल से भटक रहा था। उनका यह मंत्र मेरे लिए आशीर्वादात्मक है और उनकी स्मृति का ज्वलंत प्रतीक।

मेरे पास जितने भी मंत्र-रत्न हैं, उन सबमें यह सर्वश्रेष्ठ है . . . उज्ज्वलतम है . . . जब-जब भी इसका उपयोग किया है . . . आश्चर्यजनक फल मिला है।

रात को मैं वहीं सोया . . . ज्योतिष की चर्चा चलने पर उन्होंने भी पंचांगुली देवी की साधना करने की सलाह दी, पंचांगुली मंत्र का भगवान शिव द्वारा जिस प्रकार कीलन हुआ था, वह भी बताया और सिद्ध करने के लिए उसका दीपन भी बताया . . . यद्यपि इससे पूर्व मैं इस मंत्र का कीलन व दीपन रहस्य जान चुका था।

दूसरे दिन प्रातः उठते ही बोले— अब तुम चले जाओ . . . वापिस कभी इधर मत आना . . . न तो तुम्हें यह खोह मिलेगी . . . और न मैं . . . और मेरे सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया . . . मेरे हाथ स्वतः ही उनके चरणों को छू रहे थे . . . आंखें पाद प्रक्षालन कर रही थीं . . . अस्तु।

मैं भारी मन से गुलमर्ग लौट आया। फिर तीन वर्ष तक उधर जाने

का संयोग ही नही हुआ। चौथे वर्ष उधर गया भी . . . जान-बूझकर मैं उस स्थान तक भी गया . . . पर वहां न तो कोई खोह थी और न वे महात्मा . . . संभवतः विघ्न भय से बचने के लिए और ऊपर चले गये हों।

हो सकता है आज के अतिबुद्धिवादी इस घटना पर विश्वास न करें, यह भी हो सकता है, कि कुछ लोग इसे मनगढ़न्त कह दें, पर इससे मुझे क्या? 'गूंगे के गुड़' की तरह मेरे हृदय में उनकी स्मृति आज भी अक्षुण्ण है . . . और शाम्ब मंत्र के रूप में उनका आशीर्वाद आज भी मेरे पास सुरक्षित है . . . अस्तु।

जैसा कि मैं ऊपर ही कह चुका हूं, हमारे भारत की सांस्कृतिक निधि इतनी अमूल्य है, कि हमें उसका एहसास ही नहीं। हम गम्भीरता से उसे समझने की कोशिश ही नहीं करते। हम विश्वास ही नहीं कर सकते हैं, कि इन यंत्रों-मंत्रों की कितनी अमूल्य थाती हमारे पास सुरक्षित है, पर धीरे-धीरे यह सब लुप्त होती जा रही है, पुरानी पीढ़ी समाप्त होती जा रही है, नई पीढ़ी में इसके प्रति वह रुझान और ललक नहीं . . . और कोई आश्चर्य नहीं, कि कुछ वर्षों बाद हम इन अमूल्य रत्नों से सदा-सदा के लिए हाथ धो बैठेंगे, जो तपस्वियों, साधुओं एवं संन्यासियों के पास सुरक्षित है।

यंत्र प्रतीकात्मक हैं और मंत्र ध्वन्यात्मक। ध्वनि कम्पन उत्पन्न करती है। हम जो भी, जैसी भी ध्वनि निकालेंगे, उसका ठीक वही प्रभाव उसपर भी होगा, जिसे ध्वनि कम्पन स्पर्श करेंगे। ये ध्वनि कम्पन एक सेकण्ड में पृथ्वी के तीन चक्कर लगा लेते हैं। इसके बाद ये नष्ट नहीं होते . . . ईथर इसी का तो सुधरा रूप है और रेडियो प्रणाली इसका प्रमाण है।

एक छोटा उदाहरण लूं। 'मंत्र' शब्दों का विशेष पंजीकृत रूप ही तो है। एक कवि हास्य रस की कविता पढ़ता है और सामने बैठी भीड़ खिलखिलाकर हंसने लग जाती है। वह क्यों हंसने लग गई? जबकि न तो कवि ने उन व्यक्तियों को स्पर्श किया है और न गुदगुदी दी है। वास्तव में तो उन शब्द विशेष के ध्वनि कम्पन ही सामने बैठे व्यक्तियों को स्पर्श करते हैं। फलस्वरूप वे हंसने-खिलखिलाने लग जाते हैं, क्योंकि उसके शब्दों

का उद्देश्य ही यही था।

इसी प्रकार मंत्र भी हैं। ये भी शब्द ध्वनियों का विशेष संगठित रूप हैं . . . इसके उच्चारण से वैसा ही प्रभाव उत्पन्न होता है, जो उस मंत्र का उद्देश्य है और वह मंत्र सामने वाले को उसी रूप में ढाल देता है, जो उसका अभीप्सित है।

इसीलिए (मंत्र, जो कि ध्वनियां हैं) मंत्रों के उच्चारण में स्वर भेद तथा आरोह-अवरोह पर विशेष ध्यान देना जरूरी है।

एक उदाहरण से इसे स्पष्ट करूं, एक शब्द है 'आइये'। एक सज्जन मेरे द्वार पर खड़े हैं और मैं शब्दों में कठोरता से झुंझलाहट-सी अनुभव करता हुआ कहता हूं, 'आइये'। वे अपमान-सा अनुभव करेंगे।

दूसरे सज्जन को नम्र शब्दों में धीरे से मुस्कुराकर कहता हूं, 'आइये' तो वे इसे सम्मान समझेंगे।

मैंने दोनों ही स्थानों पर एक ही शब्द 'आइये' से काम लिया है, पर एक अपमान का अनुभव करता है और दूसरा सम्मान . . .

क्यों?

इसलिए कि आरोह-अवरोह ध्वनियों के उतार-चढ़ाव से एक शब्द दो प्रकार के अर्थ देने लगा।

ठीक यही स्थिति मंत्रों की है। ध्वनिभेद से अर्थ का अनर्थ हो जाता है तथा सुफल देते-देते कुफल भी देने लग जाते हैं। इसीलिए तो शास्त्रों में गुरुमुख से मंत्र ग्रहण करने का आदेश है।

यही बात यंत्रों के सम्बन्ध में है। यंत्र का एक निश्चित आकार है, निश्चित नाप है, उसमें हेरफेर करने से यंत्र का प्रभाव स्वयमेव ही समाप्त हो जायेगा।

यह सब बताने का उद्देश्य यह है, कि पंचांगुली साधना को मखौल का रूप न दें। कभी-कभी इससे विपरीत प्रभाव भी हो जाता है।

कानपुर के आसपास रहने वाले एक साधु मेरे पास आये। शायद इस बात को दो वर्ष से ज्यादा हो गया होगा, बोले— मैं काफी दूर से आपके पास आपका शिष्य बनने के लिए आया हूं।

मैंने कहा— आप आयु में मुझसे बड़े हैं, इसलिए शिष्य बनाऊं, यह उचित नहीं। यद्यपि गुरु-शिष्य का सम्बन्ध आयु से न होकर ज्ञान से होता है, पर आपने जो वस्त्र (वे भगवे वस्त्र पहने थे) धारण कर लिये हैं, वे स्वतः ही पूजनीय हैं। यों भी विरक्त, साधु या संन्यासी हम गृहस्थों के लिए अभिनंदनीय हैं, अतः शिष्य बनना उचित रीति नहीं।

इसके अतिरिक्त भी इस क्षेत्र में मुझे कुछ कड़वे अनुभव हैं। जब तक सामने वाला अपनी सुपात्रता सिद्ध न कर दे, उसे शिष्य के रूप में मानना न तो उचित ही है और न तर्कसंगत ही। शिष्य के लिए 'शारदा तिलक' में स्पष्ट कहा है—

शिष्यः कुलीनः शुद्धात्मा पुरुषार्थ परायणः।
अधीतवेदः कुशलो दूर मुक्त मनोभवः।
हितैषी प्राणिनां नित्य मस्तिकस्त्यक्त नास्तिकः।
स्वधर्म निरतो भक्त्या पितृमातृ हितोद्यतः।
वाङ्मनः कायवसुर्भिगुरुशुश्रूवणे रतः।
त्यक्ताभिमानो गुरुषु जाति विद्या धनादिभिः।
गुर्वाज्ञा पालनार्थं हि प्राण व्यय रतोद्यतः।
विहत्य च स्वकार्याणि गुरुः कार्य रतः सदा।
दासवन्निवसेद्यस्तु गुरौ भक्त्या सदाशिशुः।
कुर्वन्नाज्ञां दिवारात्रौ गुरु भक्ति परायणः।
आज्ञाकारी गुरोः शिष्यो मनोवाक्काय कर्मभिः।

यो भवेत्स तदा ग्राह्यो नेतरः शुभकांक्षया।
मंत्र पूजा रहस्यानि यो गोपयति सर्वदा।
त्रिकालं यो नमस्कुर्यादागमाचारतत्ववित।।
स एव शिष्य कर्तव्यो नेतरः स्वल्प जीवनः।
एतादृशगुणोपेतः शिष्यो भवति नापरः।।

जो कुलीन वंश का हो, सदाचारी हो, पुरुषार्थ करने वाला हो, वेदों में आस्था रखने वाला हो, चतुर हो तथा काम वासना से रहित हो।

जो आस्तिक होकर समस्त प्राणियों का हित चिन्तन करता है, नास्तिक का साथ नहीं देता, स्वधर्म रत हो, माता-पिता का भक्त हो तथा तन-मन-धन से गुरु के सामने जाति-पद-धन का अहंकार न करता हो तथा गुरु आज्ञा पालन में प्राणों को न्यौछावर करने में भी नहीं हिचकिचाता हो।

जो गुरु के पास दास की तरह लगा हो तथा अपना काम छोड़कर भी गुरु के कार्य में रत हो, शिशुवत् अहर्निश गुरुभक्ति में लीन हो तथा मन, वाणी व शक्ति से गुरु आज्ञा पालन में तत्पर रहता हो। ऐसा व्यक्ति शिष्य कहलाने का अधिकारी है।

जो मंत्र तथा रहस्यों को गुप्त रखता हो, शास्त्रीय आचार तत्त्व को जानता हो तथा विवेकवान हो, वही शिष्य कहलाने का अधिकरी है और ऐसे व्यक्ति को ही शिष्य बनाना चाहिए।

यही नहीं, शास्त्रों में यह भी बताया गया है, कि गुरु के सामने शिष्य को कैसे रहना चाहिए—

प्रणम्योपविशेत्पार्श्वे तथा गच्छेदनुज्ञया।
मुखावलोका सेवेत कुर्यादादिष्ट मादरात्।
असत्यं न वदेदग्रे न बहु प्रलपेदपि।

कामं क्रोधं तथा लोभं मानं प्रहसनं स्तुतिम्।
चापलानि च जिह्वानि कार्याणि परिदेवनम्।
ऋणदानं तथा दानं वस्तूनां क्रय विक्रयम्।
न कुर्याद् गुरुणां सार्द्धं शिष्यो भूष्णुः कदाचन।

आते ही प्रणाम करके गुरु के पास बैठे; जाना हो, तो आज्ञा लेकर जाय; उनकी आज्ञा की प्रतीक्षा अधीरता से करे, आदर से उनकी आज्ञा का पालन करे, न झूठ बोले, न जरूरत से ज्यादा बोले। काम, क्रोध लोभ, मोह, मान, हंसी, स्तुति, कुटिलता न करे, न रोवे और न चिल्लावे। गुरु से न ऋण की याचना करे और न क्रय-विक्रय करे।

हां, गुरु में भी गुरुत्व जरूरी है। 'शारदा तिलक' के अनुसार–

मातृतः पितृतः शुद्धः शुद्धभावो जितेन्द्रियः।
सर्वागमानां सारज्ञः सर्वशास्त्रार्थ तत्त्ववित्।
परोपकारनिरतो जप पूजादि तत्परः।
अमोघ वचनः शान्तो वेद वेदार्थ पारगः।
योग मार्गानुसन्धायी देवता हृदयङ्गमः।
इत्यादि गुण सम्पन्नो गुरुरागम सम्मतः।

जो माता एवं पिता दोनों ही कुलों से शुद्ध हो, जिसकी भावनायें शुद्ध हों तथा इन्द्रियां वश में हों, जो समस्त शास्त्रों, रहस्यों एवं साधना पद्धतियों को जानता हो तथा ब्रह्म को जानता हो, जो परोपकार में आनन्दानुभव करता हो, जप-पूजा में व्यवधान न रखता हो, जिसकी वाणी अमोघ हो, शान्तचित्त हो, वेद-रहस्यों का मर्मज्ञ हो, योगमार्ग में जिसकी पूर्ण प्रगति हो तथा सदैव शिष्य का हित चाहने वाला हो, वही गुरु पद का अधिकारी हो सकता है।

आज सर्वथा इसके विपरीत है। गुरु केवल सिद्ध होकर रह गया है, साधक पद भूल चुका है और इधर शिष्य बिना सेवा किये ही सब कुछ पा जाना चाहता है। यदि गुरु शिष्य के लक्षणों से अपात्रता का विचार कर शिष्य बनाना स्वीकार नहीं करता या कोई मंत्र देने को मना कर देता है, तो दूसरे ही क्षण वह गुरु के प्रति उल्टी-सीधी, खरी-खोटी कहने से बाज नहीं आता, अस्तु!

बात चल रही थी साधु की, उन्होंने हठ ठान ली . . . साधु-हठ शास्त्रों में प्रसिद्ध है ही . . . सप्ताह भर तक नियमित रूप से आते, पंचांगुली यंत्र विधि का आग्रह करते . . . और सीखने की तीव्र पिपासा जाहिर करते।

आखिर एक दिन उन्हें पंचांगुली यंत्र तथा साधना पद्धति समझाई। उन्होंने कहा, मैं यज्ञ तो नहीं कर सकूंगा, पर दुगुना जप अवश्य कर दूंगा।

इसके बाद वे संभवतः कानपुर चले गये। उन्होंने विधिवत् पंचांगुली साधना की। साधनापूर्ण होने पर उन्हें त्रिकाल ज्ञान उदय हुआ, आश्चर्यजनक रूप से उनकी भविष्यवाणियां सत्य होने लगीं। लोग आने लगे, उनकी कीर्ति बढ़ने लगी . . . धन का बाहुल्य हुआ . . . ज्यों-ज्यों व्यस्त होते गये, उनकी साधना धूमिल पढ़ती गई।

इन्दौर में वे कुछ समय बाद मिले। अखबारों में उनका विज्ञापन था। होटल में ठहरे थे। मैं भी उस होटल पहुंच गया . . . पर वे भक्तों से घिरे थे। व्यस्त थे और मुझे देख औपचारिक आशीर्वाद दिया और फिर व्यस्त हो गये, बोले— इस समय बहुत व्यस्त हूं . . . रात को दस बजे तक यही हाल है, आपसे दस बजे के बाद मिलूंगा।

आप अनुमान लगा सकते हैं, कि मुझे कितनी पीड़ा हुई होगी उनके शब्दों को सुनकर . . . पर मैं जज़्ब कर गया, सोच लिया कि धन ने साधना पक्ष को अपने पैरों तले दबा लिया है।

ज्यों-ज्यों साधना पक्ष कमजोर होता गया, उनकी भविष्यवाणियां अधिकांशतः गलत होने लगीं, योगभ्रष्ट होने से मुंह विकृत हो गया . . .

और बाद के समय में उन्हें काफी कठिनाइयों से गुजरना पड़ा।

प्रत्येक साधना पक्ष के दो रूप हैं– 1. गृहस्थ पक्ष, और 2. योग पक्ष। हम सबके लिए सुविधाजनक मार्ग गृहस्थ पक्ष ही है।

पंचांगुली साधना में भी एक स्थल 'बाधा स्थल' आता है, साधक को चाहिए, कि वह दृढ़ चित्त हो अग्रसर रहे, अपनी बात कुछ उदाहरणों से मैं स्पष्ट करूंगा।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

एक नौजवान मेरे पास पंचांगुली साधना हेतु आया। सप्ताह भर तक मैं उसकी परीक्षा लेता रहा, यद्यपि इस बात का उसे एहसास नहीं हुआ। वह तो पूर्णरूपेण समर्पित भाव से ही आया था, अतः परीक्षा में खरा उतरा। मैंने उसे अपनी ही देखरेख में पंचांगुली साधना पद्धति (चौदह दिनों की) प्रारम्भ करवाई।

दस दिनों तक उसका क्रम ठीक चला। ग्यारहवें दिन रात्रि में वह जप साधना में लीन था। समय लगभग तीन बज रहे होंगे, उसे अनुभव हुआ, मानो बिच्छू उसके इर्द-गिर्द चारों तरफ मंडराने लगे, शरीर पर चढ़ने लगे . . . और शरीर को काटने लगे . . . पीड़ा . . . असह्य पीड़ा . . . पर वह अडिग रहा . . . घंटे भर बाद सब कुछ शांत हो गया।

प्रातःकाल उसने मुझे यह सब निवेदन किया . . . मैंने कहा– तुमने साधना पक्ष की 'सुमेरु बाधा' पार कर ली है। मां भगवती तुम्हारी सहायक हों . . . क्रम चालू रखो।

चौदह दिनों की साधना पूरी की। उसे एहसास हुआ, कि जैसे वह यहां व्यर्थ बैठा है, उसका वास्तविक कार्य क्षेत्र तो अमेरिका है . . . वह कुछ दिनों बाद अमेरिका चला गया . . . आज वहां वह लाखों में खेल रहा है, श्रेष्ठस्तरीय कीर्ति है . . . तथा 'इंडियन पॉमिस्ट' के नाम से विख्यात है।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

लगभग ऐसी ही परिस्थिति में पिलानी के एक सज्जन को भी साधना मार्ग में ऐसी ही स्थिति का सामना करना पड़ा था . . . और वे बिच्छू देखते ही आसन छोड़ भाग खड़े हुए . . . उनका सारा परिश्रम व्यर्थ हो गया था।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

एक और साधक ने मुझे पंचांगुली साधना सिखाने को कहा। मैं उस समय कलकत्ता में था और लगभग पन्द्रह दिनों का वहां प्रोग्राम था। जिस घर में मैं ठहरा था, गृहस्वामी का पुत्र इस क्षेत्र में काफी रुचि रखता था। उसने मुझे इस सम्बन्ध में आग्रह किया . . . मैं समझ तो गया था, कि यह साधना पद्धति को शायद ही पूरा कर सके . . . मैंने उसे स्पष्ट कह भी दिया, पर वह माना नहीं। बाल्य हठ भी या यों कहें, कि यौवन हठ भी विद्यमान था।

साधना प्रारम्भ हुई . . . सब कार्य ठीक-ठीक चलता रहा . . . वह कमरे में जप कर रहा था। मैं कमरे के बाहर सोया था। पास ही गृहस्वामी सोये हुए थे। रात में शायद एक बज रहा था . . . वह कमरे से हड़बड़ाता हुआ बाहर निकला और मुझसे चिपट-सा गया . . .

मैंने सांत्वना दी, उसे बिठाया। नौकर से कहकर उसे गर्म चाय पिलाई, तब वह प्रकृतिस्थ हुआ . . . पूछने पर उसने बताया, कि पहले तो कुछ देर तक घुंघरुओं की आवाज आती रही . . . और फिर एकदम से एक विकराल स्त्री मेरे सामने आकर खड़ी हो गई . . . बिखरे बाल . . . लाल सुर्ख आंखें . . . हाथ में खप्पर . . . पैरों तथा कमर में घुंघुरु . . .

मैंने उसे सांत्वना दी . . . पर उसके दिल से साधना का भूत उतर चुका था।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

इसके विपरीत लगभग ऐसी ही घटना एक युवती के साथ भी घटित हुई। बी.ए., एल.एल.बी. पास . . . विदुषी . . . साहसी महिला ज्योतिष

व हस्तरेखा में होशियार . . . पंचांगुली की साधना करने की इच्छा उसके मन में कई दिनों से थी, अपने माता-पिता से आज्ञा ले नवरात्रि में उसने अपने घर में ही इसको प्रारम्भ किया . . . सर्वथा निराहार साधना पद्धति अपनाई . . . लगभग ऊपर वाली स्थिति ही उसके सामने बारहवीं रात्रि को आई . . . पर वह अडिग रही।

प्रातःकाल जब मैं वहां गया, तो उसके पिता ने सारी स्थिति स्पष्ट की . . . रात्रि में काली रूप में संभवतः पंचांगुली ने परीक्षा ली थी। मैंने कहा, बाधा पार हुई . . . ठीक समय पर साधना पूर्ण हुई . . . आज उसकी गणना श्रेष्ठ हस्तरेखा देखने वालों में आती है . . . हां, यह बात अलग है, कि उसने अपना क्षेत्र सीमित बना रखा है।

मैं पाठकों को साधना पक्ष के मार्ग में आने वाली बाधाओं को स्पष्ट कर रहा हूं, जिससे वे विचलित न हों, डरें नहीं . . . पर इस साधना पक्ष में वे ही प्रवृत्त हों, जो दृढ़ चित्त हों, स्वस्थ हों . . . लगन हो . . . और साधना पक्ष में त्रुटि हो जाने पर परिणाम भुगतने को तैयार हों . . . यद्यपि यह स्पष्ट कर दूं, कि साधना में त्रुटि हो जाने पर भी कोई विशेष अहित होने की संभावना नहीं रहती।

साधना पक्ष में निम्न स्थितियों का विचार ध्यान में रखना चाहिए—

- ☆ आप इस क्षेत्र में तभी आवें, जब आप दृढ़ चित्त हों, आपका निश्चय पक्का हो और संघर्षों से जूझने की शक्ति हो।
- ☆ गृहस्थ के लिए विशेष बाधायें हैं। साधना के दिनों में स्त्री समागम न हो, स्त्री से सम्पर्क न हो, ब्रह्मचर्य व्रत धारण करें।

- ☆ यथासंभव असत्य भाषण न करें।
- ☆ एक आसन पर बैठने की तथा एकाग्रचित्त जप करने की क्षमता हो। बार-बार बीच में उठना उचित नहीं।
- ☆ अपने से बड़े संरक्षक या माता-पिता की आज्ञा से ही यह कार्य करें।
- ☆ गुरु धारण करें तथा प्रत्येक स्थिति में उनके प्रति अडिग आस्था हो।
- ☆ शराब, मांस, तामसी भोजन आदि का त्याग करें।
- ☆ मंत्रोच्चारण शुद्ध व स्पष्ट हो।
- ☆ यदि साधना पूरी होने पर भी सफलता न मिले, तो झुंझलावें नहीं, बार-बार प्रयत्न करें।
- ☆ ईश्वर में आस्था व अडिग विश्वास रखें। निश्चय ही सफलता मिलेगी।

◎

देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम्।।1।।
विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत्।
तदेतत्क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।।2।।
पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।।3।।
जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।।4।।
परित्यक्ता देवा विविधविधिसेवाकुलतया
मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम्।।5।।
श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा

निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं
जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ।।6।।
चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम्।।7।।
न मोक्षस्याकाङ्क्षा भवविभववाञ्छापि च न मे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडाणी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः।।8।।
नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः
किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव।।9।।
आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं
करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः
क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति।।10।।
जगदम्ब विचित्रमत्र किं परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि।
अपराधपरम्परावृतं न हि माता समुपेक्षते सुतम्।।11।।
मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु।।12।।
(इति श्रीमच्छङ्कराचार्यकृतं देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्।)

◎

भवान्य कम्

न तातो न माता न बन्धुर्न भ्राता
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता।
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैवं
गतिस्त्वं मतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।1।।

भवाब्धावपारे महादु:खभीरु:
पपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्त:।
कुसंसारपाशप्रबद्धः सदाहं। गतिस्तवं0।।2।।

न जानामि दानं न च ध्यानयोगं
न जानामि तन्त्रं न च स्तोत्रमन्त्रम्।
न जानामि पूजां न च न्यासयोगं। गतिस्त्वं0।।3।।

न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं
न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित्।
न जानामि भक्तिं व्रतं वापि मातर्गतिस्त्वं0।।4।।

कुकर्मी कुसङ्गी कुबुद्धिः कुदास:
कुलाचारहीन: कदाचारलीन:।
कुदृष्टि कुवाक्यप्रबन्धः सदाहं। गतिस्त्वं:।।5।।

प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं
दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित्।
न जानामि चान्यत् सदाहं शरण्ये। गतिस्त्वं0।।6।।

विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे
जले चानले पर्वते शत्रुमध्ये।
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि। गतिस्त्वं0 ।।7 ।।

अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो
महाक्षीणदीनः सदा जाड्यवक्त्रः।
विपत्तौ प्रविष्टः प्रणष्ट सदाहं। गतिस्त्वं0 ।।8 ।।

(श्रीमच्छङ्कराचार्यकृतं भवान्यष्टकं सम्पूर्णम्।)

संदर्भ . . .

पेज 58 1. अनामिक्या च देवस्य ऋषीनां च तथैव च।
गन्धानुलेपनं कार्यं प्रयत्नेन विशेषतः।।
पितृणामर्पयेद् गन्धं तर्जन्या च सदैव हि।
तथैव मध्यामांगुल्या धार्यो गन्धः स्वयं बुधैः।।
—तंत्रशास्त्र

पेज 93 1. धान्यार्थात् सवाशास्त्रेण सर्वकार्येषु च यवः।

2. भागीरथी समाख्याता यमुना च सरस्वती।
किरणाधूप पादा च पैंच नद्यः प्रकीर्तिता।।

3. जटामांसी वचा कुण्ठं शैलेयं रजनीद्वयम्।
सठी चंपक मुस्ता च सर्वौषधि गणः स्मृतः।।

4. अश्वत्थोदुम्बर प्लक्ष चूतन्यग्रोध पल्लवाः।
पंचपल्लव मित्युक्तं सर्वकर्मसु शोभनम्।।

5. अश्वस्थानाद् गजस्थानाद् वल्मीकात्संगमाद् ह्रदात्।
राजद्वाराच्च गोष्ठाच्च मृदमानीय निक्षिपेत्।।

6. कनकं कुलिशं नीलं पद्मरागञ्च मौक्तिकम्।
एतानि पंच रत्नानि रत्नशास्त्र विदो विदुः।।
(अभावे सर्व रत्नानां हेमं सर्वत्र योजयेत्)

7. अनन्तगर्भिणं साग्रं कौशं द्विदलमेव च।
प्रादेश मात्रं विज्ञेयं पवित्रं यत्र कुत्रचित्।।

पेज 95 1. पुण्येऽह नि च संप्राप्ते विवाहे चौलके तथा।
व्रत बन्धे च यज्ञादौ तथा च दान कर्मणि।
गृहारम्भे धनप्राप्तौ तीर्थाभिगमने तथा।

नव ग्रह मरवे शान्ता वरभूतेषु तथैव च।
अन्यस्मिन्नपि सर्वस्मिञ्छुभे कर्मणि चोदिते।
वाचनीया द्विजा सर्वे वेद शास्त्र परायणा।।
(विधारत्न माला)

पुण्याहं वाचने विप्रा युग्मा वेद विदोमताः।
यज्ञोप्रवीतिनः शस्ताः प्राङ्मुखाः स्युः पवित्रिणः।

पेज 104 1. विधुरो मृतभार्यो भार्यान्तरो पादाना समर्थश्च,
तदिभन्ना अविधुराः

2. विप्रा उपविश्य वाचयितारमभिषिञ्चेयुरिति बौधायनः।

3. आशीर्वादेऽभिषेके च पादप्रक्षालने तथा।

शयने भोजने चैव पत्न्युत्तरतो भवेत्।।

पेज 105 1. होम कर्मण्य शक्तानां विप्राणां द्विगुणो जपः।
इतरेषान्तु वर्णानां त्रिगुणादि समीरितः।।
योगिनी हृदये।।

2. पुरा इन्द्रेण वज्रेण हतो वृत्रो महासुरः।
व्यापिता मेदसा पृथ्वी तदर्थमुपलेपनम्।।

3. ये भ्रमन्ति पिशाचाद्या आकाश पथ गामिनः।
तेषां संरक्षणार्थाय उद्धृत्य कथितं बुधैः।।

4. अग्नेः स्थापन वेलायां पूर्णाहुत्या मथापि वा।
आहुतिर्वह्नीवासश्च विलोक्यौ शांति कर्मणि।।

5. लौकिके पावको अग्निः प्रथमः हरिकीर्तितः।
अग्निस्तु मारुतो नाम गर्भाधाने प्रकीर्तितः।।
पुन्सवे चमसो नाम शोभनः शुभ कर्मसु।

सीमन्ते ह्यनलो नाम प्रगल्भो जात कर्मणि।।
पार्थिवो नामकरणे प्राशनेऽन्नस्य वैथुचिः।
सभ्य नामा तु चूडायां व्रतादेशे समुद्भवः।।
गोदाने सूर्य नामास्यात्केशान्ते याजक स्मृतः।
वैश्वानरो विसर्गे स्याद् विवाहे बलदः स्मृतः।।
चतुर्थीकर्मणी शिखी धृतिरग्निस्ततथाऽपरे।
आवसध्यस्तथाऽधाने वैश्व देवे तु पावकः।
ब्रह्माग्निर्गार्हपत्ये साद्दक्षिणाग्नि रथेश्वरः।
विष्णु राह वनीये स्यादग्निहोत्रे त्रयो मताः।।
लक्ष होमेऽयीष्टदः स्यात्कोटि होमे महाशनः।
एके घृतार्चिषं प्राहुरग्निध्यान परायणा।
रुद्रादौ तु मृडो नाम शान्तिके शुभकृत्तथा।
पौष्टिके वरदश्चैव क्रोधाग्निश्चाभि चारके।।
वश्यार्थे वशकृत्प्रोक्तौ वन दाहे तु पौषकः।
उदरे जठरो नाम क्रव्याद शव यक्षणे।।
समुद्रे वाडवोरग्निर्लय संवर्तकस्तथा।
सप्तविंशति संख्याता अग्नयः कर्मसु स्मृताः।।

पेज 106

1. अधोमुख ऊर्ध्व पादः प्राङ्मुखो हव्यवाहनः।
तिष्ठन्ति व समाधीना आहुतिं कस्यदीयते।
उत्तर-सपवित्राम्बु हस्तेन वह्ने: कुर्यात् प्रदक्षिणम्।
हव्यवाट सलिलं दृष्टवा बिभेति सम्मुखो भवेत्।।

2. स्नाने दाने जपे होमे सन्ध्यायां देवतार्चने।
शिखाग्रंथिं बिना कर्म न कुर्या द्वै कदाचन।।

3. मंत्रणोकार पूर्वेण स्वाहान्तेन विचक्षणः।
स्वाहा वसाने जुहुयाद्वामहस्ते हृदिन्यसन्।।

4. कोद्रवं चणकं माषं मसूरं च कुलित्थकम्।
क्षारं च लवणं चैव वैश्वदेवै विवर्जयेत्।।
अन्नं पर्युषितं चैव परान्नं दूषितं तथा।
दग्धमन्नं तथोच्छिष्टं वैश्वदेवै र्विवर्ज़येत्।।

5. न पाणिना न शूर्पेण न चामेध्यादिनापि वा।
मुखनोपध मे दग्नि मुखादेष व्यसीयतः।
पहकेन भवेद् व्याधिः शूर्पेण धन नाशनम्।
पापिना मृत्युमाप्नोति कर्मसिद्धिर्मुखेन तु।
उत्तानेन तु हस्तेन ह्यंगुष्ठाग्रेण पीडितम्।
संहतांगुलि पाणिस्तु वाग्यतो जुहूयाद्धविः।।

पेज 107 1. दक्षिणे दानवाः प्रोक्ताः पिशाचो रग राक्षसाः।
तेषां संरणार्थाय ब्रह्मा तिष्ठति दक्षिणे।।

पेज 112 1. होम द्रव्याणि
पुत्रार्थे शालिबीजेन धनार्थे बिल्व पर्णकैः।
दूर्वाभिरायुष्कामन्तु पुष्टि कामस्तु वेतसैः।
कन्या कामस्तु लाजाभिः पशुकामो घृतेन तु।
विद्या कामास्तु पालाशैर्दशांशेन तु होमयेत्।
धान्य कामो यवैश्चैव गुग्गुलेन रिपुक्षये।
तिलैरारोग्य कामस्तु व्रीहिभिः सुखमश्नुते।।

पेज 114 1 शमी पलाशन्यग्रोध प्लक्षवैकंकतोद्भवाः।
अश्वत्थोदुम्बरो बिल्वश्चन्दनस्सरलस्तथा।
सालश्च देवदारुश्च खदिरश्चैव यज्ञिपा।।
(ब्रह्मपुराण)

पेज 122 1. विवाहादि क्रियायाश्च शालायां वास्तु पूजन।
नित्य होमे वृषोत्सर्गे न पूर्णाहुति माचरेत्।।
(प्रयाग रत्ने)

पेज 122 2. लाजाहोमं समिद्धोमं मूर्द्धि होमं तथैव च।
पूर्णाहुतिं वसोर्द्धारा तिष्ठन्नेव हि कारयेत।।

पेज 123 1. सर्वेषु धर्मकार्येषु पत्नी दक्षिणतः शुभाः।
अभिषेके विप्र पाद प्रक्षाल्ने चैव वामतः।।

पेज 125 1. उरसा शिरसा दृष्ट्या मनसा वचसा तथा।
पद्भ्यां कराभ्यां जानुभ्यां प्रणामोऽष्टांग उंच्यते।।

• • •

पूज्य गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त
श्रीमाली जी की पावन वाणी से नि:सृत यह ज्ञान आलोक
जो निम्न ऑडियो कैसेट्स द्वारा प्रस्तुत है . . .
ध्यान धारणा और समाधि
महालक्ष्मी स्वरूप साधना
गुरु गति पार लगावे
साधना सूत्र
हिप्नोटिज्म रहस्य
कुण्डलिनी योग
मैं अपना पूर्व जीवन देख रहा हूं
स्वर्ण पात्र साधना
ॐ मणि पद्मे हुं
दुर्लभोपनिषद
* न्यौछावर प्रति कैसेट् - 30/-
:: सम्पर्क इस पते पर करें ::
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट, कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
फ़ोन : 0291-32209, फैक्स : 0291-32010

जो माता एवं पिता दोनों ही कुलों से शुद्ध हो, जिसकी भावनाएं शुद्ध हों तथा इन्द्रियां वश में हों, जो समस्त शास्त्रों, रहस्यों एवं साधना पद्धतियों को जानता हो तथा ब्रह्म को जानता हो, जो परोपकार में आनन्दानुभव करता हो, जप-पूजा में व्यवधान न रखता हो, जिसकी वाणी अमोघ हो, शान्तचित्त हो, वेद-रहस्यों का मर्मज्ञ हो, योगमार्ग में जिसकी पूर्ण प्रगति हो तथा सदैव शिष्य का हित चाहने वाला हो, वही गुरु पद का अधिकारी हो सकता है।

प्रत्येक व्यक्ति भविष्य जानने और उसका आकलन करने के लिए प्रयत्नशील रहता है, ज्योतिष की एक विद्या 'फलित ज्योतिष' है, पर इससे पूर्णतः भविष्य कथन संभवः नहीं हो पाता, क्योंकि बिना 'इष्ट' के भविष्य का सूक्ष्मातिसूक्ष्म कथन संभव नहीं है, इसके लिए श्रेष्ठतम, अचूक और अद्वितीय विद्या या साधना "पंचांगुली साधना" है।

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी के द्वारा सैकड़ों–हजारों गोपनीय साधनाओं को प्रामाणिक स्वरूप मिला है, इसी कड़ी में दुर्लभ साधना का यह जीवन्त ग्रंथ है, जो प्रत्येक साधक के लिए गुरुदेव श्रीमाली जी की तरफ से अमूल्य वरदान है।

यह साधना सर्वथा गोपनीय रही है, कई वर्षों पूर्व पूज्य श्रीमाली जी ने इस साधना को लघु पुस्तिका के रूप में प्रकाशित कराया था, पर अब यह ग्रंथ अपने आप में पूर्ण प्रामाणिक एवं सम्पूर्ण रूप के साथ आपके लिए प्रस्तुत है।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ0 श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज0) फोन: 0291-432209